# 101

# सूफ़ी कहानियां

राजेन्द्र कुमार गुप्ता

# <u>अनुक्रमणिका</u>

अंगूठी का राज अंगूर की बेल अच्छा ऐसा है अतिरिक्त कमरा अनअलहक अनामी पिता का अनामी पुत्र अपराधी आजादी का रास्ता आवाज उचित इनाम उचित इलाज उसकी नज़र में होना उस पार ऊँटों का बंटवारा ऊपर की यात्रा एजाज और बादशाहत औरंगजेब और सरमद कस्र अल-अरिफान की हवा कीमती मोती कुछ बनने की सज़ा कोयले की टोकरी कोरा कागज कौन सी खिड़की खुदा की मदद गलती का अहसास गुरु कौन गुलाम का तौहफा गरीब कौन गुलाम की मर्जी चहेता सेवक चोर और समाट चोर की पहचान छाने-छाने

जब बुल्लेशाह नाचे जुन्नार की कीमत जूतियों की कीमत जैसी जिसकी सोच जो सो गए डर टपक-टपक का तौहफे की कद्र त्याग कुविचारों का दिल की निगहबानी दिल की सफाई दिल से याद न त् कहे न हम कहें निंदा बुरी बला निजात न्यायविद का फैसला परमात्मा का चुनाव परमात्मा के दर्शन परमात्मा पर भरोसा परीक्षा फ़क़ीर का धन फ़र्क ईश्वर भक्त और नास्तिक में बंधा कौन बड़ी मछली बहरूपिये का इनाम बहलुल बाज़ार बादशाह का दर्शन बाहरी आवरण बीनने की कमी बीबी की तुनकमिजाजी भविष्यदृष्टा भाग्य और पुरुषार्थ भिक्षापात्र भोर होने की पहचान

मन्त्र मस्त और मुएज्ज़िन महमूद गजनवी और फलियाँ माँ की सेवा मुदौं से सीख मुसाफिर मैं सहता हूँ, तू भी सह यह भी गुजर जाएगा राम नाम का मोल रेलवे का पैसा रेशम का गट्ठा रोशनीकहाँ गई लंगोटी का त्याग लिखित इजाज़तनामा लोगों की निंदा लोगों की समझ वो पानी मुल्तान गया शतरंज और आश्रम शाही नमाज़ शिष्य का धर्म शिष्य का प्रशिक्षण शिष्य का फ़र्ज शून्य का विचार शैख़ का आदेश शैख़ सनन और सूर्यिकरण संत की परीक्षा संतोष सबसे निकृष्ट वस्तु सही समय सात भाई साथ रहने की योग्यता सेवा और इबादत सोने की सज़ा हजरत राबिया और सुई

# निवेदन

सूफी कहानियां साधकों की शिक्षा के एक उपयोगी माध्यम के रूप में सिदयों से कही-सुनी जाती रही हैं और सूफ़ी आचार्य इन कहानियों के माध्यम से सूफियों के गूढ़ रहस्यों को सांकेतिक भाषा में जिज्ञासुओं और साधकों तक पहुँचाते आये हैं । सूफ़ी मान्यताओं और परम्पराओं पर आधारित कुछ चुनिंदा कहानियों का यह संग्रह पुस्तक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है । इनमें से कई कहानिया काफ़ी सरल और सीधा सन्देश देने वाली हैं और कुछ कहानियां थोड़ी गूढ़ हैं जो पाठक को कुछ सोचने को विवश करती हैं और जिनका अर्थ पाठक की अपनी समझ और अध्यात्मिक विकास पर निर्भर है और ये कहानियां उसी के अनुसार उन पर अपना प्रभाव छोड़ती हैं ।

इस कहानी संग्रह में कई कहानियां ठाकुर रामिसंहजी साहब, जो नक्शबंदी सूफ़ी परंपरा के एक महान संत हुए हैं, द्वारा समय-समय पर आगुन्तकों को सुनाई हुई हैं और कई कहानियां पूर्ववर्ती लेखकों द्वारा लिखे साहित्य पर आधारित हैं। इन कहानियों में हजरत जाफर सादिक, इमाम कासिम, बयाजिद बिस्तामी, अबुल हसन खिरकानी, ख्वाजा युसूफ हमदानी, निजामुद्दीन औलिया, अमीर खुसरो, अब्दुल कादिर जिलानी, बुल्लेशाह, शम्स तबरेज़, मौलाना रूमी, जुनैद, अली अर-रिमतानी (हजरत अजीजाँ), शाह बहाउद्दीन नक्शबंद, ख्वाजा उबैदुल्लाह अल-अहरार, शाह दरवेश मुहम्मद, शैख़ फराउद्दीन अतार और हजरत राबिया, बसरा के हसन और शिराज़ के शैख़ सादी आदि कई सूफ़ी संतों का जिक्र आया है जो अपने-अपने वक्त के महान सूफ़ी संत हुए हैं। कुछ कहानियाँ इन संतों के जीवन में घटी घटनाओं से सम्बंधित हैं।

आशा है ये कहानियां पाठकों के हृदयों को आह्लादित और आंदोलित करेंगी । पाठक अपने सुझाव rkgupta51@yahoo.com या +91-9899666200 पर भेज सकते हैं और सूफ़ी संतों के बारे में और अधिक जानकारी के लिए वे वेबसाईट www.sufisaints.net देखने के लिए आमंत्रित हैं।

राजेन्द्र कुमार गुप्ता

# अंगूठी का राज

एक बादशाह था । उसकी दस बेगम थीं । बादशाह अपनी सभी बेगमों को बहुत प्रेम करता था और उनकी सभी सुख-सुविधाओं का ख्याल रखता था । प्रत्येक बेगम यह समझती थी कि बादशाह उसी को उन दस में से सबसे अधिक प्रेम करता है । फिर भी न जाने कैसे उनके हृदय में यह जानने की उत्सुकता जाग गयी कि क्या बादशाह उसी से सर्वाधिक प्रेम करता है और कुछ दूसरी बेगमों को यह दिखाने के लिये कि वास्तव में बादशाह उसी को ही सबसे ज्यादा प्रेम करता है, वे बादशाह से पूछने लगीं कि बादशाह अपनी किस बेगम को सबसे ज्यादा चाहता है ? -+-

बादशाह ने बहुत सोच-समझकर एक तरकीब निकाली और अपनी दसों बेगमों को एक साथ बुलाकर उन्हें अपनी एक विशेष अंगूठी दिखायी और बोला जिस बेगम को यह अंगूठी मिलेगी वही बादशाह की सबसे चहेती बेगम होगी । इसके बाद उसी दिन बादशाह ने चुपचाप उस अंगूठी जैसी ही नौ और अंगूठियाँ बनवा लीं और प्रत्येक बेगम को अलग-अलग एक-एक अंगूठी भिजवा दी, इस सख्त हिदायत के साथ कि वह इस अंगूठी के बारे में किसी और बेगम को कभी नहीं बतायेगी । प्रत्येक बेगम ने यही समझा कि बादशाह उसी को सबसे अधिक चाहता है । अन्य बेगमों की ईर्ष्या से बचने के लिये और बादशाह की हिदायत के अनुसार कभी किसी बेगम ने न तो किसी और बेगम से अंगूठी के बारे में पूछा, न बताया ।

अब जरा सोचो जो व्यक्ति बादशाह के इस राज को जानता है, क्या वह बादशाह का सबसे ज्यादा विश्वसनीय और चहेता न होगा ?

# अंगूर की बेल

किसी एक शहर में एक वृद्ध व्यक्ति एक ऐसी प्रजाति के अंगूर की बेल लगा रहा था जिसके बारे में कहा जाता था कि वह तीस वर्ष बाद फल देगी । संयोग की बात थी कि जब वह बेल को लगा रहा था बादशाह का उधर से गुजरना हुआ । उसे वह बेल लगाते देख बादशाह ने उससे कहा कि, 'अगर तुम सोच रहे हो कि तुम इस बेल पर फल आने तक जीवित रहोगे तो तुम बहुत ज्यादा आशावादी व्यक्ति लगते हो ?'

'शायद मैं तब तक जीवित न रहूँ', वह व्यक्ति बोला, 'लेकिन मेरे पीछेवाले तो इसका लाभ उठा ही पायेंगे, जैसे कि हम अपने पूर्वजों के किए कामों का लाभ उठाते हैं ।'

'ठीक है' बादशाह बोला, 'उन फलों में से कुछ मेरे लिए भी लाना, यदि मैं और तुम दोनों तब तक मृत्युरुपी तलवार के वार से बच पाए तो, जो हमेशा हमारे सर पर टंगी रहती है।'

कुछ ऐसा संयोग हुआ कि उस बेल ने कुछ ही वर्षों बाद स्वादिष्ट फल देना शुरू कर दिया । उस व्यक्ति ने सबसे बेहतरीन गुच्छों से एक बड़ी सी टोकरी भरी और शाही महल की तरफ़ उन्हें बादशाह को भेंट करने के लिए चल पड़ा । बादशाह ने उसे बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार किया और उसे बहुत सा सोना देकर वापस भेजा ।

कुछ ही देर में शहर भर में यह बात फ़ैल गयी कि, 'एक साधारण से व्यक्ति को बादशाह ने टोकरी भर अंगूरों के बदले ढेर सारा सोना दिया है।'

यह सुनकर एक वृद्धा टोकरा भर अंगूर लेकर शाही महल जा पहुंची और दरबान से कहने लगी कि यह रहे मेरे अंगूर । बादशाह से कहो कि मुझे भी इन फलों के बदले उस स्बह वाले व्यक्ति की तरह सोना दिया जाय ।

बात बादशाह तक पहुंची तो उसने फरमाया, 'जो लोग परिस्थितियों की जांच-परख किए बिना, दम्भ के साथ मात्र दूसरों के कार्य-कलापों की नक़ल करने लगते हैं, उन्हें लौटा दिया जाना ही बेहतर है।' बादशाह के आदेशानुसार वृद्धा को लौटा दिया गया। वृद्धा इस व्यवहार से इतनी क्षुब्ध थी कि उसने उस व्यक्ति से कभी सच्चाई जानने की कोशिश ही नहीं की।

### अच्छा ऐसा है

किसी गाँव में एक संत रहते थे । छोटी सी कुटिया में सीधा-सादा जीवन बिताते, गाँववालों से जो मिल जाता उसी में अपना गुजर बसर करते और परमात्मा की रजा में राज़ी रहते । किसी बात का बुरा न मानते न किसी के भला बुरा कहने का विरोध करते । उसी गाँव में बल्कि इन संत के पड़ोस में ही एक परिवार रहता था जिसमें उनकी एक युवा बेटी भी थी । वह लड़की गाँव के ही एक लड़के से प्रेम करती थी और इस प्रेम-प्रसंग के कारण उसे एक बच्चा भी हो गया । लोगों ने उससे उसके पिता का नाम पूछा तो डर के मारे और यह सोचकर कि संत का नाम लेने से उसे कोई कुछ न कहेगा लड़की ने उस लड़के के बजाय उन संत का नाम ले दिया । लोगों ने यह कहते हुए कि यह बच्चा तुम्हारा है संत को बड़ा भला-बुरा कहा तो वे बोले "अच्छा ऐसा है" । लोगों ने निर्णय किया कि उनकी ऐसी तुच्छ हरकत की यही उचित सज़ा है कि उस बच्चे को उनके पास ही छोड़ दिया जाए और अब वे ही इस बच्चे को पाले-पौरें।

इस घटना के बाद लोग उनकी तरफ़ हिकारत की नजर से देखते और लोगों का उनके पास आना-जाना भी कम हो गया । बड़ी मुश्किल से लेकिन बिना किसी शिकायत के वे उस बच्चे का लालन-पालन करने लगे । वक़्त गुजरता गया और यूं ही चार-पांच वर्ष बीत गए । संत के व्यवहार और अपनी करनी पर लड़की को बड़ी आत्मग्लानि होती । जब उससे न रहा गया और ममता जोर मारने लगी तो एक दिन उस लड़की ने सब बात अपने घर वालों को बतला दी और गाँववालों तक भी यह बात पहुँच गयी । अब तो वे सब बहुत शर्मिंदा हुए और उन संत के पास जाकर माफ़ी मांगने लगे और बच्चे को लौटाने के लिए प्रार्थना करने लगे । संत निर्विकार भाव से बोले "अच्छा ऐसा है" और बच्चे को उनके हवाले कर दिया ।

### अतिरिक्त कमरा

एक व्यक्ति को अचानक से काफ़ी धन की आवश्यकता आ पड़ी और इतने धन का इंतजाम करने का उसके पास एकमात्र उपाय था कि वह अपना घर बेच दे । लेकिन इस घर को उसने बहुत चाव से बनवाया था और उससे उसकी बहुत सी यादें जुड़ी हुई थी इसलिए वह पूरे घर से अपना कब्ज़ा नहीं छोड़ना चाहता था । सोच-समझकर उसने यह फैसला लिया कि मकान का एक कमरा वह अपने पास ही रखेगा और अपना मकान उसे ही बेचेगा जो उसे इस शर्त के साथ खरीदने के लिए राजी होगा ।

उसे एक ऐसा खरीददार भी मिल गया और उसने उसे मकान इस शर्त के साथ बेच दिया कि एक कमरे का वह अपनी इच्छानुसार उपयोग कर सकेगा और जो कुछ भी वह चाहे उसमें रख सकेगा।

शुरू-शुरू में तो वह उस कमरे में छोटा-मोटा सामान रखने लगा और नये मकान मालिक को वह किसी तरह की कोई तकलीफ़ न देता । फिर जैसे उसने अपना काम बदला, उस कमरे में अपने कार्य सम्बन्धी बड़े-बड़े औजार भी रखने लगा । नया मकान मालिक कुछ न बोलता, वह तो मकान खरीदते समय किए गए अनुबन्ध से बंधा था।

और अंत में उसने अपनी सोची-समझी चाल चली । उसने उस कमरे में मरी हुई बिल्लियाँ रखना शुरू कर दिया । उनकी दुर्गन्ध के मारे घर में रहना मुहाल हो गया । नये मालिक ने बहुत हाथ-पैर मारे पर अनुबन्ध की शर्त के मुताबिक पुराना मालिक जो चाहे उस कमरे में रख सकता था । तंग आकर नये मालिक को वह मकान बहुत कम कीमत पर वापस पुराने मालिक को बेचना पड़ा ।

### अनअलहक

"अनअलहक" (मैं ही सत्य हूँ या परमात्मा हूँ) के उच्चारण के लिये प्रसिद्द हुसैन इब्न मंसूर हलाज अपने समय के महान सूफ़ी संतों में से थे। उनका जन्म सन 858 में पर्सिया में हुआ था और बाद में वे बसरा शहर में बस गए। "अनअलहक" कहने के कारण उन्हें बंदी बनाया गया, उनका अंग-भंग किया गया और अंत में सूली पर चढ़ाकर जला दिया गया। उनके समकालीन बहुत से संतों का मानना था कि हुसैन इब्न मंसूर हलाज का "अनअलहक" कहना निंदनीय है और गलत था। कुछ लोगों ने कहा भी कि-

सज़ा सूली कि ही मंसूर को वाजिब थी, किसी का राज क्यों खोले, किसी का राजदां होकर ? और बात तो सच थी मगर मंसूर को कहनी न थी, यार की महफिल के बाहर, यार की महफिल की बात I

लेकिन बाद के सूफियों ने इस बात को गहराई से समझा और मौलाना रूमी का तो कहना था कि "अनअलहक" कहना दीनता की पराकाष्ठा थी । यदि कोई कहता है कि मैं खुदा का सेवक हूँ तो उस कथन से खुदा और सेवक दो की पृथक मौजूदगी का एहसास होता है लेकिन "अनअलहक" कहने से यानी मैं ही सत्य हूँ, सत्य के अलावा किसी और की मौजूदगी नहीं रहती । कहने वाले का अपना कोई अस्तित्व ही न रहा । वह परमात्मा में मिलकर उससे एकाकार हो गया ।

जब लोहे की छड़ धधकती आग में पड़ी लाल सुर्ख होती है तो वह भी आग ही होती है। आग सरीखी ही धधकती और जो भी उसे छूए उसे जला देने वाली। लेकिन आग से अलग होने पर वह वही होती है, ठंडी और सख्त, लोहे की छड़।

# अनामी पिता का अनामी पुत्र

अब् सैद अबुल खैर अपने वक्त के एक महान सूफ़ी संत हुए हैं। वे प्राचीन खुरासान के महना नामक शहर के रहने वाले थे। एक बार वे अपने शहर में आयोजित एक सम्मलेन में भाग लेने के लिए गए। उस समय का रिवाज था कि मेहमान के आगमन पर आयोजनकर्ता वहाँ उपस्थित लोगों को आगुन्तक का परिचय दिया करता था। उद्घोषक ने शैख़ अब् सैद अबुल खैर को आते देखा लेकिन उसे उनके परिचय के लिए उचित शब्द नहीं मिल रहे थे। उसने शैख़ अब् सैद अबुल खैर के कुछ शिष्यों से जो वहाँ उपस्थित थे मदद लेनी चाही पर वे भी उसकी सहायता न कर पाए। यह जो वहाँ चल रहा था शैख़ अब् सैद अबुल खैर के कानों तक पहुँच गया। उन्होंने उद्घोषक को कहा जाकर बता दो कि, 'एक अनामी पिता का अनामी पुत्र आया है।' और कोई उपाय न देख उसने वही बोल दिया। उपस्थित लोग उनकी इस अतीव विनम्रता से बहुत प्रभावित हुए।

एक बार वे अपने एक शिष्य के साथ किसी जगह गए । उस स्थान पर विषेते साँपों की भरमार थी । जब वे लोग आगे बढ़ रहे थे एक विषेता सांप निकलकर शैख़ अबू सैद अबुल खैर की तरफ़ बढ़ने लगा और उनके पैर से लिपट गया । यह देखकर उनका शिष्य ठिठककर रुक गया और उसके चेहरे पर खौफ की छाया नजर आने लगी । यह देख शैख़ अबू सैद बोले डरो मत, यह मुझे डसने नहीं आया है बल्कि मेरे पाँव से लिपट मेरे प्रति अपना आदर व्यक्त कर रहा है । फिर वे बोले, 'क्या तुम चाहते हो कि यह तुम्हारे पाँव से लिपटकर तुम्हारे प्रति भी अपना आदर प्रकट करे ।' शिष्य के हाँ कहने पर वे बोले, 'जब तक तुम्हारे दिल में यह इच्छा है, ऐसा कदापि नहीं होगा ।'

### अपराधी

एक बुद्धिमान, न्यायप्रिय और दयानु बादशाह ने एक दिन अपने राज्य के कारागार में जाकर सभी अपराधियों से मिलकर उनकी शिकायतें सुननी चाहीं । सभी अपराधी जानते थे की बादशाह बहुत न्यायप्रिय और दयानु है । बादशाह एक-एक कर सभी कैदियों से मिला । जब बादशाह ने पहले कैदी से मिलकर पूछा, तो वह बोला में निर्दोष हूँ लेकिन मुझे हत्या के जुर्म की सज़ा मिली है । मैं तो अपनी पत्नी को सिर्फ डराना चाहता था लेकिन दुर्भाग्य से दुर्घटना घट गई और मेरी पत्नी मारी गई । बादशाह दुसरे कैदी की तरफ़ मुखातिब हुआ । दूसरा कैदी बोला मुझ पर रिश्वत लेने का आरोप है जबिक वास्तव में वह मेरे मित्र की तरफ़ से मेरे लिए भेंट मात्र थी । तीसरे कैदी ने बताया कि मुझ पर चोरी का इल्जाम है जबिक मैंने तो वह सब सामान बस उधार लिया था । इसी तरह और कैदियों ने भी अपनी-अपनी कहानी सुनाकर स्वयं को निर्दोष बताया इस आशा के साथ कि वह न्यायप्रिय और दयानु बादशाह उन्हें माफ़ कर कैद से मुक्त कर देगा । केवल एक नवयुवक अपराधी ने बादशाह से कहा कि वह अपने किए पर शर्मिंदा है, उसने झगडे में अपने भाई को घायल कर दिया था और वह सज़ा भुगतने का अधिकारी है । इस कैदखाने में रहकर उसे समझ आ गया है की उसने अपने भाई को कितनी तकलीफ़ पहुंचाई है ?

उसकी बात सुनकर बादशाह बोला, "तुरंत बाहर करो इस अपराधी को, इन सब से दूर, वरना यह इन सब नितांत मासूम कैदियों को भी बिगाइ देगा ।"

### आजादी का रास्ता

एक बार एक व्यक्ति शाह बहाउद्दीन नक्शबंद, जो अपने समय के बहुत बड़े सूफ़ी संत हुए हैं और जिनके नाम पर सूफ़ियों के एक सिलसिले का नाम 'नक्शबंदी' पड़ा, से अपनी आत्मिक उन्नित हेतु पथ-प्रदर्शन के लिये विनती करने आया। शाह नक्शबंद का उत्तर बहुत विचित्र था। उन्होंने उस व्यक्ति को कोई भी धार्मिक ग्रन्थ पढ़ने से मना किया और वहाँ से तुरंत चले जाने को कहा। एक अन्य व्यक्ति जो यह सब देख रहा था और उनके इस व्यवहार से बहुत क्षुन्ध था, उसने अपनी नाराजगी उन पर व्यक्त की। शाह नक्शबंद की इच्छा हुई कि वे उसको अपने इस व्यवहार का औचित्य प्रदर्शित कर समझाएं। तुरंत उस कमरे में जहाँ वे बैठे थे, एक चिड़िया उइती हुई अंदर आ गयी। वापस बाहर निकलने का कोई रास्ता न पाकर वह कमरे में इधर-उधर चक्कर लगाने लगी। शाह नक्शबंद यह सब देख रहे थे और जैसे ही वह चिड़िया उस कमरे की एकमात्र खुली खिड़की के पास जाकर बैठी, शाह नक्शबंद ने जोर से ताली बजाई। इस आकस्मिक आवाज से भोचक्क हो वह चिड़िया उस खुली खिड़की से तुरंत बाहर को खुले आसमान की तरफ़ उड़ गयी। शाह नक्शबंद ने फ़रमाया, 'ताली की आवाज ने चिड़िया को निश्चित ही चौंकाया ही नहीं बिल्क डरा भी दिया होगा, और वही उसकी आजादी का रास्ता बना, क्या तुम इससे सहमत नहीं हो ?'

### आवाज

कहीं दूर एक गाँव था जहाँ कभी किसी ने किसी को मरते नहीं देखा। एक व्यक्ति यह सुनकर उस गाँव में रहने आया और खशी-ख़ुशी रहने लगा। उसे रहते कुछ वक़्त बीता तो उसने पाया कि बीच-बीच में कोई व्यक्ति गाँव से कहीं चला जाता है और फिर लौटकर कभी नहीं आता। उसने लोगों से पूछा तो उन्होंने कहा कि उन्हें नहीं मालूम वे लोग कहाँ चले जाते हैं लेकिन उन्होंने अपने बड़े-बूढ़ों से सुना है कि कोई आवाज सुनाई देती है जो आदमी को उसका नाम लेकर पुकारती है। यह आवाज केवल उसी व्यक्ति को सुनाई देती है और किसी को नहीं और वह आदमी उस आवाज के पीछे-पीछे चला जाता है रोके से भी नहीं रुकता और फिर लौटकर कभी नहीं आता। इस व्यक्ति ने यह सुनकर सोचा कि वह कभी ऐसी किसी आवाज के पीछे नहीं जाएगा और चैन से रहेगा।

बहुत वर्ष इसी तरह गुजर गए और गाँव से बीच-बीच में कुछ स्त्री, पुरुष और बच्चे भी गायब होते रहे। एक दिन वह व्यक्ति सुबह-सुबह बैठा कुछ कर रहा था कि उसे अपने नाम की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे कोई उसका नाम लेकर दूर से पुकार रहा है। शुरू में तो उसने कोई ध्यान न दिया लेकिन आवाज बंद होने के बजाय तेज होती गयी यहाँ तक कि उसे एक अजीब सी बैचैनी होने लगी। तंग आकर वह बोला "रुक, बहुत लोगों को फसाया है तूने, मैं नहीं फंसने वाला। अभी देखता हूँ तू कौन है", और उठकर वह उस आवाज का पीछा करने लगा। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता जाता आवाज और दूर से आती मालूम होती लेकिन उस आवाज को अनसुना करना उसके बस में नहीं रहा। सब कुछ भूल यह कहता हुआ कि 'ठहर, देखता हूँ, तू कौन है' वह उस आवाज का पीछा करते न मालूम कहाँ चला गया? उसके बाद उस व्यक्ति को कभी किसी ने नहीं देखा।

### उचित इनाम

किसी राजा के दरबार में एक बड़ा ही सुन्दर और बहुमुल्य हीरा बिकने के लिए लाया गया। राजा के दरबारियों ने उस हीरे को राजा के पास रखने योग्य बताया। जब हीरे को खरीदने की बात आई तो उसके मोल का प्रश्न उठ खड़ा हुआ। दरबारियों से तो उस हीरे के मोल के बारे में बताने की क्या आशा की जा सकती थी, सो राजा ने अपने राज्य के सभी बड़े जौहरियों को बुला भेजा और उनसे उस हीरे का मुल्यांकन करने को कहा। सभी हीरे की चमक-दमक और उसकी सुन्दरता से प्रभावित थे और अपनी-अपनी समझ से उसका मोल लगा रहे थे। हीरे के मोल के बारे में वे कोई सही-सही निर्णय नहीं कर पा रहे थे। वे उसके मोल के बारे में सहमत नहीं हो पा रहे थे। अंत में एक बहुत बुज़ुर्ग जौहरी ने राजा से कहा कि 'महाराज यहाँ उपस्थित जौहरी इस हीरे का सही मोल नहीं लगा पा रहे हैं। इन्होंने अज्ञानवश अपनी-अपनी समझ के अनुसार इस हीरे का मोल किसी ने कुछ तो किसी ने कुछ लाख लगाया लेकिन वास्तव में इस हीरे का मूल्य कई करोड़ो में है। इस हीरे में दो खासियत हैं, एक तो यह कि यह जिसके पास रहेगा उसकी कोई कामना बाकी न रहेगी और दूसरी यह की यह हीरा अँधेरे में भी प्रकाश फैला देगा।'

राजा ने कुछ दिन हीरे को अपने पास रखकर देखा तो हीरे की दोनों ही खूबियों को सही पाया । राजा ने तब उस जौहरी को इनाम देना चाहा और उस जौहरी के लिए क्या इनाम उचित है इसके लिए अपने दरबारियों से राय ली । लेकिन जैसे हीरे के मोल के बारे में कोई सहमती नहीं बन पा रही थी, दरबारी इनाम के लिए भी एकमत नहीं हो पाए । अंत में राजा ने अपने एक पुराने वयोवृद्ध मंत्री से उसकी राय पूछी तो उसने हीरे और उस पारखी को अच्छी तरह परख कर कहा कि 'महाराज, इस पारखी का उचित इनाम यही है कि इसे सौ कोड़े लगाए जाएँ और हुक्के का पानी पिलाया जाए ।' यह सुनकर सब स्तब्ध रह गए तो राजा ने मंत्री से अपने इस विचित्र सलाह का कारण पूछा तो वह बोला 'महाराज, इस पारखी ने परमात्मा द्वारा दी हुई विलक्षण बुद्धि का सही-सही इस्तेमाल नहीं किया । इसने उस बुद्धि को कंकर-पत्थर परखने में लगा दिया । यदि यह उसका सही सही इस्तेमाल करता और उस बुद्धि को आत्मा की पहचान में लगाता तो सारे संसार का ऐश्वर्य भी इसके इनाम के लिए कम होता।'

### उचित इलाज

किसी शहर में एक बहुत धनवान व्यक्ति रहता था। उसके पास सुख-सुविधा के सभी साधन उपलब्ध थे। वह अपनी पत्नी के साथ बहुत ख़ुशी-ख़ुशी रह रहा था, बस कमी थी तो एक यही कि उनके कोई संतान न थी। उन्होंने बहुत से इलाज करवाए, वैध-हकीमों के पास गए लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एक दिन उन्हें एक वैध के बारे में मालूम चला कि वह बहुत ही कुशल चिकित्सक है और उसकी रोग की परख अचूक है। वे बड़ी आशा लेकर उसके पास गए। लेकिन उसने जांच-पड़ताल कर कहा कि वह उसे ठीक नहीं कर सकता क्योंकि वह स्त्री एक महीने में मर जाएगी। क्योंकि वैध ने उसकी एक महीने में मृत्यु होना बता दिया था वह स्त्री अपने जीवन से निराश हो एक-एक दिन गिन-गिन कर काटने लगी। एक महीना गुजर गया लेकिन उस स्त्री की मृत्यु नहीं हुई। वह वैध के पास गयी और बोली कि महीना तो गुजर गया और वह अभी भी जीवित है। वैध मुस्कराया और बोला अब तुम्हें संतान हो जाएगी। तुम्हारा मोटापा ही इसमें आड़े आ रहा था। अब जरा अपनी तरफ़ देखो। वह महिला मृत्यु के अंदेशे से खाना-पीना भूल बहुत दुबली हो चुकी थी।

# उसकी नज़र में होना

एक महातमा घूमते हुए जंगल में एक फ़क़ीर की कुटिया पर जा पहुँचे । फ़क़ीर ने महातमा को अपनी कुटिया में बैठाया । संयोग की बात थी कि फ़क़ीर की कुटिया में उस समय महात्मा के स्वागत-सत्कार के लिए कुछ भी नहीं था । फ़क़ीर ने महात्मा से कहा कि मैं पास ही बस्ती से कुछ भोजन का प्रबंध कर तुरंत आता हूँ, आज रात आप कुटिया में विश्राम करें । यह कह वह फ़क़ीर महात्मा को कुटिया में छोड़ बस्ती की तरफ़ चल दिए । उनके जाने के बाद महात्मा की नज़र कुटिया में ही एक तरफ़ पड़ी एक शिला पर गयी । उस शिला पर हाथ, पाँव और घुटनों के निशान पड़े थे । महात्मा समझ गए कि ये निशान अवश्य ही उस फ़क़ीर की उस शिला पर नमाज़ पढ़ने से पड़े होंगे । साथ ही उनके हृदय में यह विचार आया कि मुझ जैसे व्यक्ति का क्या होगा जो रात-दिन घूमता ही रहता है । यह फ़क़ीर धन्य है जिसके नमाज़ पढ़ने से शिला पर निशान पड़ गए हैं । इनकी स्थिति तो बह्त ऊँची होगी, मुझ जैसे कोरे तो नहीं होंगे ? महात्मा यह सब सोच ही रहे थे कि उन्हें आकाशवाणी सुनाई दी कि 'ऐ बन्दे ! ज्यादा मत सोच, अभी इस फ़क़ीर की एक भी नमाज़ कबूल नहीं हुई है।' यह सुनकर महात्मा स्तब्ध रह गए और तभी वे फ़क़ीर भी लौट आये और महातमा को विचारमग्न देख पूछने लगे कि वे क्या सोच रहे हैं ? महातमा अभी पूरी बात सुना भी न पाए थे कि वह फ़क़ीर वज्द (भावावेश) में आ गए और उनकी इस अवस्था का कुछ ऐसा प्रभाव पड़ा कि महातमा स्वयं भी अपना होशो-हवाश खो समाधिस्थ हो गए । सवेरे जब महात्मा ने फ़क़ीर के इस तरह भावावेश की स्थिति में आने का कारण पूछा तो वे बोले, 'आप तो बता रहे थे कि अभी तक मेरी एक भी नमाज़ कबूल नहीं हुई है, लेकिन सच मानिए आज मुझे मेरी सब नमाजों का उत्तर मिल गया । आपको जो आकाशवाणी हुई उससे मुझे पूरा यकीन हो गया है कि खुदा को इस बात का तो ख्याल है कि इस दुनिया में मुझ जैसा एक फ़क़ीर भी नमाज़ पढता है । इससे अधिक ख़ुशी की क्या बात होगी कि यह फ़क़ीर उसकी नजर में है । अब मुझे इस बात की कोई फिक्र नहीं है कि मेरी नमाज़ कबूल होती है की नहीं, मेरा फ़र्ज तो नमाज़ अदा करना है बाकी वह जाने ।'

### उस पार

किसी शहर का एक विचित्र रिवाज था । उस शहर का राजा एक साल के लिए नियुक्त किया जाता और ठीक एक साल बाद उसे गद्दी से हटाकर शहर के दूसरी ओर भेज दिया जाता । शहर के एक ओर एक दीवार थी जिसमें एक दरवाजा था और दूसरी ओर एक नदी बहती थी जिसके उस पार भयावह जंगल था । नया राजा उस व्यक्ति को बनाया जाता जो साल के पहले दिन सुबह-सुबह उस दरवाजे से शहर में प्रवेश करता । कभी किसी ने किसी भी पुराने राजा को जिसे नदी के उस पार भेजा जाता लौटकर आते न देखा । जो भी नया राजा बनता, साल भर तो ऐशो-आराम में बिताता लेकिन जब उसे नदी के उस पार भेजा जाता तो वह बहुत विकल होता, शोर-शराबा करता लेकिन रिवाज के अनुसार उसे नाव में बिठाकर नदी के उस पार भयानक जंगल में छोड़ दिया जाता ।

एक बार साल बीत जाने पर पुराने राजा को हटाकर एक नये व्यक्ति को शहर का राजा बनाया गया । उसने जैसे ही शहर में प्रवेश किया लोगों ने उसका स्वागत-सत्कार कर उसे राजा नियुक्त कर दिया । आश्चर्यचिकत हो उसने लोगों से पूछा कि उसे क्यों राजा बनाया जा रहा है तो लोगों ने बता दिया कि उसे एक साल के लिए राजा बनाया जा रहा है और साल के अंत में अन्य राजाओं की तरह उसे भी नदी पार जंगल में छोड़ दिया जाएगा ।

यह नया राजा एक बहुत ही समझदार और सुयोग्य व्यक्ति था और राज-काज को बड़ी कुशलता से निपटाता लेकिन उसमें एक विचित्र आदत थी । रोज भोर में तड़के ही वो बिना किसी को बताये कहीं चला जाता और दोपहर तक लौटता और फिर सारे दिन राजकार्य को निपटाता । इसी तरह कब साल गुजर गया पता ही न चला । साल का अन्त होते ही अन्य राजाओं की तरह उसे भी नदी के उस पार छोड़ने के लिए नाव पर बिठाया गया । जहाँ पहले वाले राजा बहुत हंगामा किया करते थे वहीं यह राजा ख़ुशी-ख़ुशी नाव में बैठा और उस पार जाने से बिलकुल परेशान दिखाई न दिया । लोगों में उत्सुकता जागी तो वे भी उसके पीछे-पीछे चल दिये कि देखें उस पार उतरने पर वह ऐसे ही शांत और प्रसन्न रहता है या औरों की तरह विलाप करता है । लिकन लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि नदी के उस पार अब बीहड़ जंगल न होकर हरा-भरा बगीचा था और वह राजा उससे भली-भाँती परिचित लग रहा था । दरअसल वह इस जंगल को ही अपने रहने योग्य बनाने के लिए रोजाना सुबह नदी पार आया करता था ।

### ऊँटों का बंटवारा

किसी शहर में एक व्यापारी रहता था। उसके तीन बेटे थे। संपत्ति के नाम पर उसके पास सत्रह ऊँट थे। व्यापारी को लगा कि उसकी मृत्यु नजदीक ही है तो उसने अपनी वसीयत लिख दी कि उन सत्रह ऊँटों में से आधे सबसे बड़े पुत्र को, एक-तिहाई मंझले पुत्र को और नवां हिस्सा सबसे छोटे पुत्र को दे दिया जाए। वसीयत के साथ ही उसने एक चिट्ठी भी लिख छोड़ी जिसे ऊँटों के बंटवारे के बाद ही खोलना था।

व्यापारी की मृत्यु के बाद उसके पुत्रों ने ऊँटों को वसीयत के अनुसार आपस में बांटना चाहा लेकिन वे असमंजस में पड़ गए कि सत्रह ऊँटों का आधा (यानि साढ़े-आठ), एक-तिहाई (यानि पांच और छह के बीच) या नवां हिस्सा (यानि दो और तीन के बीच) कैसे किया जाय क्योंकि किसी भी ऊँट के टुकड़े तो नहीं किए जा सकते थे। शहर के लोग भी उनकी कोई मदद नहीं कर पा रहे थे। किसी को समझ नही आ रहा था कि उन सत्रह ऊँटों को कैसे उन तीन भाइयों में बांटा जाए कि बंटवारा उनके पिता की वसीयत के अनुसार हो जाय? तभी किसी ने बताया कि शहर के बाहर एक दरवेश रहता है, चलकर इस समस्या के बारे में उसे बताया जाय, शायद वह कोई हल सुझा पाए। कुछ गणमान्य लोग अपने-अपने ऊँटों पर सवार हो उन तीनों भाई के साथ वे सत्रह ऊँट लेकर दरवेश के पास पहुंचे। समस्या सुनकर दरवेश कुछ देर विचारमग्न रहा और फिर उसने उन लोगों में से एक का ऊँट माँगा। उस ऊँट को उन सत्रह ऊँटों के साथ मिलाकर बोला, 'अब तुम लोग ये सत्रह ऊँट वसीयत के अनुसार आपस में बाँट लो।'

इस नए ऊँट के साथ ऊँटों की संख्या अब अठारह हो गयी थी। बड़े भाई ने आधे अर्थात नौ ऊँट ले लिए, मंझले भाई ने एक-तिहाई अर्थात छह ऊँट ले लिए और सबसे छोटे ने नवां हिस्सा अर्थात दो ऊँट ले लिए। तीनो के मिलाकर सत्रह ऊँट हुए और वह अठारहवाँ ऊँट बच रहा। दरवेश ने उसे वापस उसके मालिक को लौटा दिया। सब लोग दरवेश की प्रसंशा करते लौट आये। घर आकर तीनों भाइयों ने अपने पिता की चिठ्ठी को खोलकर पढ़ा। पिता ने लिखा था, 'जो व्यक्ति तुम्हारे इस बंटवारे को शांति से निपटा दे, वह जरुर ही बुद्धिमान होगा। उसकी सलाह तुम्हारे लिए सदा उपयोगी रहेगी। उसे अपने पिता की ही तरह सम्मान देना और उसकी छत्र-छाया में रहना।'

### ऊपर की यात्रा

किसी शहर में एक बहुत ही धनी व्यक्ति रहता था। यूँ तो उसके पास धन-दौलत और सुख-सुविधा के सभी साधन मौजूद थे लेकिन उसके जीवन में आनंद नहीं था। वह बहुत से साधु-संतों से मिला और उनसे आनंद प्राप्ति का कोई ऐसा रास्ता बताने के लिए कहा जिससे उसे शाश्वत आनंद की प्राप्ति हो जाए लेकिन कोई उसे ऐसा साधन न बता पाया। एक दिन वह सूफी संत हजरत शाह बहाउद्दीन नक्शबंद के समक्ष हाजिर हुआ और बोला, "मेरे पास सब कुछ है, धन है, दुनिया के एक से बढ़कर एक आराम पहुंचाने वाले साधन हैं, किन्तु उन सबके बावजूद आनंद नहीं है। कृपया आप मुझे इस संसार का कोई ऐसा व्यक्ति बताइए जो सबसे अधिक आनंद-संपन्न और संतुष्ट हो।" हजरत शाह बहाउद्दीन नक्शबंद ने फरमाया, "मैं एक आदमी को जानता हूँ, किन्तु वह बहुत दूर देश में रहता है। उससे मिलने के लिए लम्बी यात्रा करनी होगी।"

वह धनी बोला, "मेरे पास सब साधन मौजूद हैं। मैं कितनी भी लम्बी यात्रा कर सकता हूँ, मुझे दूरी की परवाह नहीं है।" इस पर हजरत शाह बहाउद्दीन नक्शबंद ने फरमाया, "दूरी का प्रश्न नहीं है। ऊँचा जाना पड़ता है, ऊपर। दूर तो तुम जा सकते हो पर उससे मिलने तुम्हें सीधे ऊपर जाना होगा।" अब वह आदमी कुछ चकराया और बोला, "दूर जाने के साधन मेरे पास हैं, पर ऊपर ऊँचा कैसे जाया जाए, मैं नहीं जानता। मेरे पास बैलगाड़ी है, ऊँट हैं, घोड़े हैं, ये मुझे लम्बी से लम्बी दूरी तय करा सकते हैं पर ऊपर जाने का आपका अभिप्राय मैं नहीं समझ पा रहा हूँ?"

उसकी बात सुनकर हजरत शाह बहाउद्दीन नक्शबंद बोले, "हाँ, ऊपर की तरफ़ तो तुम्हें खुद ही जाना होगा, अपनी खुदी को यहीं छोड़कर । तुम्हारा अपना ही भार (अर्थात 'मैं') तुम्हें ऊँचा नहीं जाने देता । उसे तुमको काट-काटकर गिरा देना होगा तभी तुम ऊपर को जा सकोगे और उस व्यक्ति (ईश्वर) से मिल सकोगे । दूर जाने वाली यात्रा मैं तुम अखण्ड और अभग्न रह सकते हो, पर ऊँचे जाने वाली यात्रा में तुम अखंडित नहीं रह पाओगे, क्योंकि इसमें तुम स्वयं ही बाधा हो ।"

### एजाज और बादशाहत

एजाज गुलाम राजवंश का पहला बादशाह था और वह कैसे बादशाह बना यह कहानी उसी बारे में है। एजाज बादशाह का प्रिय और विश्वसनीय सेवक था। अन्य दरबारी इसीलिये उससे ईर्ष्या करते थे और उसके खिलाफ़ बादशाह के कान भरने की कोशिश किया करते थे लेकिन बादशाह उनकी एक न सुनता।

एक दिन बादशाह को मालूम चला कि उसके राज्य की सीमा में दुश्मन के कुछ सैनिकों ने प्रवेश किया है। बादशाह ने शासन के स्तंभ समझे जाने वाले सरदारों को भेजा और उनसे सब मामला अच्छी तरह दरयाफ्त कर आने को कहा कि वे लोग कौन थे कहाँ से आये थे और उनकी मंशा क्या थी आदि-आदि। सरदारों को भेजकर बादशाह ने एजाज को भी अलग से यह सब मालूम करने के लिये भेजा।

शाम होने तक सरदार वापस लौट आये और आकर बादशाह को बताया कि उन सैनिकों ने गलती से हमारे राज्य में प्रवेश कर लिया था और वे लोग वापस लौट गए हैं। लेकिन एजाज तीन दिनों तक वापस नहीं लौटा। ईर्ष्यालु दरबारी और सरदारों को एजाज की चुगली करने का अच्छा मौका मिल गया। वे बादशाह से कहने लगे कि सारे सरदार तो एक दिन में ही सब जानकारी हासिल कर वापस लौट आये लेकिन एजाज अभी तक क्या कर रहा है इसकी किसीको कोई खबर नहीं है, लगता है वह समय बर्बाद कर रहा है।

एजाज तीन दिन बाद लौटा और जब वह बादशाह के सामने हाजिर हुआ तो बादशाह ने उससे कुछ नाराजगी के साथ पूछा कि तुम तीन दिन कहाँ थे और क्या कर रहे थे, जवाब दो ? एजाज ने उत्तर दिया, "वे सैनिक नहीं बिल्क दुश्मन देश के जासूस थे और हमारी सीमा में आक्रमण से पूर्व जरुरी जानकारी हासिल करने आये थे । उन्होंने अमुक गाँव से प्रवेश किया था और अमुक गाँव में रात बिताई थी और इसके अलावा उन्होंने कई महत्वपूर्ण जगहों पर रास्ते में रुकावट खड़ी कर दी ।" 'तो तुमने उन्हें गिरफ्तार क्यों नहीं किया' बादशाह ने पूछा ? एजाज ने नमता से उत्तर दिया, 'वे लोग बंदी बना लिये गए हैं और आपके आदेश की प्रतीक्षा में जेल में डाल दिये गए हैं।'

कुछ वर्षों बाद एक बार बादशाह युद्ध में विजयी हो वापस लौटा । बादशाह बहुत खुश था और जीत की इस ख़ुशी में उसने युद्ध में जीते हुए माल का एक हिस्सा दरबार में रखवा दिया और कहा कि जो भी चाहे इसमें से अपना मनपसन्द सामान ले जा सकता है । लोगों की भीड़ आयी और अपना मनपसन्द सामान, जेवर, जवान गुलाम, गलीचे, रेशमी वस्त्र इत्यादि लेकर ख़ुशी-ख़ुशी चले गए लेकिन एजाज वहीं बैठा रहा, बादशाह के समीप । न उसने कुछ कहा न किसी वस्तु की इच्छा की । बादशाह ने पूछा, "एजाज, क्या तुम्हें कुछ नहीं चाहिए ?"

एजाज ने कहा, 'हुजूर, मैंने आपके आदेश को ठीक से नही समझा । क्या आप मेरे वास्ते अपने आदेश को दोहरा सकते हैं ?' "यहाँ जो कुछ भी है, उसे जो चाहे, जिस पर हाथ रख दे, वह उसका हो जाएगा" बादशाह ने कहा ।

एजाज यह आदेश सुनकर बादशाह के सामने आ खड़ा हुआ । बड़े अदब से झुककर उसने बादशाह को सलाम किया और उसके बाद बादशाह के कंधे पर अपना हाथ रख दिया । बादशाह की मृत्यु के बाद वह बादशाह बना । केवल एजाज ही था जिसने बादशाहत की इच्छा जाहिर की ।

### औरंगजेब और सरमद

संत सरमद (1590-1661) औरंगजेब के जमाने में एक बहुत उच्चकोटि के सूफी संत हुए हैं । वे पर्सिया से थे लेकिन बाद में हिन्दुस्तान चले आये और यहीं रहने लगे । वे यहूदी थे लेकिन बाद में उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया, लेकिन उन्होंने अपने लिए लिखा है कि मैं ना यहूदी हूँ, ना मुस्लिम, ना हिन्दू । औरंगजेब का बड़ा भाई दारा शिकोह उनसे बहुत प्रभावित था और उसने उन्हें अपना शैख़ स्वीकार किया था । संत सरमद "लाइलालिल्लाह" (कोई खुदा नहीं है) में डूबे हुए थे और पूछने पर कि वे कलमाशरीफ का दूसरा हिस्सा "इल अल्लाह" (सिवाय खुदा के) क्यों नहीं पढ़ते तो कहते कि मैं अभी लाइलालिल्लाह में ही खोया हूँ तो आगे कैसे पढ़ं ? बादशाह औरंगजेब ने उन्हें क़ैद करवा लिया और बोला, "किस तरह के व्यक्ति हो तुम ? तुम्हारे पास पहनने के लिये कुछ नहीं है । ज़रा देखो, तुम बिना वस्त्रों के रहते हो, लेकिन मैं बादशाह हूँ, चाहूँ तो सारी दुनिया को कपड़े मुहैय्या करवा सकता हूँ । मेरे स्वयं के वस्त्र बढ़िया और कीमती हैं।"

संत सरमद का उत्तर था, "जिसने मुझे फ़क़ीर बनाया, उसी अल्लाह ने तुम्हें बादशाह बनाया है। जिनमें कमी होती है, जो गुनहगार होते हैं, अल्लाह उन्हें कपड़े और दुनियावी सामान बख्शता है। लेकिन फकीरों को कुछ नहीं चाहिए, वे अल्लाह के प्यारे होते हैं।" और उनके इस उत्तर ने 1200 वर्षों बाद यह भी साफ़ कर दिया कि क्यों पैगम्बर मुहम्मद साहब को बिना कफ़न के ही दफ़न किया गया था ?

### कस्र अल-अरिफान की हवा

बुखारा के सुलतान से मिलने एक राजदूत आ रहा था। उन्होंने शाह बहाउद्दीन नक्शबंद को सलाह मश्विरा के लिये आमंत्रित किया लेकिन शाह नक्शबंद ने यह कहकर मना कर दिया कि वे उस वक्त कस अल-अरिफान की हवा पर निर्भर हैं और उस हवा को वे अपने साथ सुलतान के पास नहीं ला सकते। सुलतान इस उत्तर से नाखुश तो हुआ लेकिन कुछ कारण से उस राजदूत का आना टल गया और मामला आया-गया हो गया। कुछ महीनों बाद जब सुलतान अपने दरबार में बैठा था, एक व्यक्ति उस पर कातिलाना हमला करने उछला। तत्काल शाह नक्शबंद दरबार में उपस्थित हुए और उन्होंने लपककर उस व्यक्ति से हथियार छीन लिया। सुलतान ने अपनी कृतजता व्यक्त करते हुए कहा, "तुम्हारी बेअदबी (राजदूत के आने के वक्त सुलतान का आमन्त्रण अस्वीकार करने के कारण) के बावजूद मैं तुम्हारा ऋणी हूँ।" शाह नक्शबंद (रहम.) ने जवाब दिया, "जो जानते हैं, उनकी विनम्रता आवश्यकता होने पर उपस्थित होने में है, न कि उनके इंतज़ार में समय बिताने में जो आने वाले नहीं हैं।"

### कीमती मोती

एक राजा एक दिन अपने दरबार में एक बेशकीमती मोती लेकर आया । दरबार में सभी दरबारी उपस्थित थे लेकिन राजा का ध्यान अपने हाथ में लिये हुए मोती पर ही था । थोड़ी देर बाद राजा ने दरबार में उपस्थित खजांची को बुलाकर उसके हाथ में वह मोती देकर उससे उस मोती की कीमत पूछी । खजांची ने मोती को अच्छी तरह देख-परखकर कहा कि यह मोती बहुत मूल्यवान है और शायद खजाने में जो हीरे जवाहरात हैं, उन सबमें सबसे ज्यादा कीमती । यह सुनकर राजा ने खजांची से कहा कि वह उस मोती को फोड़ दे । राजा का ऐसा अनोखा आदेश सुनकर खजांची भोचक्का रह गया और उसने राजा को मोती यह कहते हुए लौटा दिया कि वह इतने कीमती मोती को नहीं फोड़ सकता, वह तो खजाने का रक्षक है, उस मोती जैसे कीमती रत्न को कैसे नष्ट कर सकता है ?

राजा खजांची का उत्तर सुनकर मुस्कुराया और फिर उसने वह मोती अपने मंत्री को दिया और उससे भी मोती की कीमत आंकने को कहा । मंत्री ने भी मोती को भली-भांति देखकर कहा कि इसकी आभा अद्वितीय है और इसकी कीमत उसकी कल्पना से भी अधिक है । मंत्री का जवाब सुनकर राजा ने उसे भी उस मोती को तोड़ डालने का आदेश दिया । मंत्री ने भी खजांची की तरह मोती तोड़ने से यह कहते हुए मना कर दिया कि यदि वह ऐसे बहुमूल्य मोती को तोड़ देगा तो राज्य की बड़ी हानि होगी और लोग उसकी अक्ल पर हसेंगे।

राजा ने तब वह मोती अपने सेनापित को दिया और उससे भी वही सवाल पूछा । सेनापित ने भी मोती को अत्यन्त कीमती बताया और राजा के उसे नष्ट करने के आदेश पर उसने भी मोती को नष्ट करने से यह कहते मना कर दिया कि उसका काम राज्य की धन-सम्पदा की स्रक्षा करना है।

अंत में राजा ने दरबार में उपस्थित एक दरबान को बुलाया और उसे वह मोती देकर मोती को अपने पाँव तले कुचलकर नष्ट कर देने को कहा । दरबान ने तुरंत राजा के आदेश का पालन किया और मोती को फ़र्श पर डाल अपने जूतों तले कुचल डाला । राजा ने उससे पूछा कि क्या तुम्हें इस मोती की कीमत मालुम नहीं थी ? दरबान ने झुककर कहा, "महाराज ! मैं खजांची, मंत्री, सेनापित और आपकी सब बातें सुन रहा था । मुझे मोती की कीमत का अंदाजा था लेकिन आपकी आज्ञा के सामने मोती की कीमत मेरे लिए कोई मायने नहीं रखती । मेरे लिये तो आपका ह्क्म ही सर्वीपिर है ।"

राजा ने खुश होकर उस दरबान को गले से लगा लिया और बोला कि एक सच्चे और वफ़ादार सेवक का सबसे बड़ा धर्म अपने मालिक की आज्ञा का पालन करना है न कि उस आदेश का मुल्यांकन करना ।

# कुछ बनने की सज़ा

हजरत बुल्लेशाह स्फ़ियों के कादरी सिलसिले के एक बड़े लोकप्रिय और महान स्फ़ी संत हुए हैं। रमजान के पवित्र महीने में बुल्लेशाह एक दिन अपनी कुटिया में बैठे नमाज अदा कर रहे थे और उनके कुछ शिष्य बाहर बैठे गाजर खा रहे थे। तभी उधर से कुछ घुड़सवार सैनिक, जो मुसलमान थे, गुजरे। जब उन्होंने बुल्लेशाह के मुरीदों को गाजर खाते देखा तो उनसे पूछने लगे कि तुम लोग रोजे के वक्त गाजर क्यों खा रहे हो? मुरीदों ने उत्तर दिया कि हम लोगों को भूख लग रही है इसलिए हम गाजर खा रहे हैं। घुड़सवार सैनिकों ने सोचा कि शायद ये लोग मुसलमान न हों अत: अपना शक दूर करने के लिये उनसे पूछा कि वे लोग कौन हैं? मुरीदों ने जवाब दिया, "हम लोग मुस्लम हैं। क्या मुसलमानों को भूख नहीं लगती?"

घुड़सवार सैनिकों ने उन्हें रोजे के वक्त खाने से मना किया लेकिन वे न माने । इस पर घुड़सवारों को क्रोध आ गया, वे घोड़ो पर से उतरे और उनके हाथों से गाजर छीनकर फेंक दी और उनकी पिटाई भी की । कुछ दूर आगे जाने के बाद सैनिकों के सरदार को लगा कि जब ये लोग ऐसे हैं तो उनका शैख़ भी ऐसा ही होगा ? वो लौटकर आया और कुटिया में बैठे बुल्लेशाह से पूछा, "तुम कौन हो ?" बुल्लेशाह आँखें बंद किए बैठे थे, वे कुछ नहीं बोले, केवल कुछ नहीं का ईशारा करते अपने हाथ हिला दिये । उसने फिर से पूछा और बुल्लेशाह ने फिर से बिना कुछ कहे अपने हाथ हिला दिये । उसने समझा कि यह व्यक्ति तो पागल लगता है और लौट गया ।

सैनिकों के चले जाने के बाद बुल्लेशाह के मुरीद उनके पास आये और घुड़सवारों की शिकायत करने लगे। बुल्लेशाह ने कहा कि तुम लोगों ने जरुर कुछ न कुछ गलत किया होगा। उनके मना करने पर बुल्लेशाह ने उनसे पूछा कि घुड़सवारों ने तुमसे क्या पुछा था? मुरीदों ने बताया कि उन्होंने हमसे पूछा था कि हम लोग कौन हैं और उत्तर में हमने बताया कि हम मुसलमान हैं। बुल्लेशाह बोले, "देखो, तुम कुछ बने और तुम्हें पिटना पड़ा। मैं कुछ नहीं बना और बच गया।"

### कोयले की टोकरी

किसी शहर के किनारे एक फ़क़ीर रहा करता था। शांत और प्रसन्नचित और अपना समय भजन-ध्यान में बिताने वाला। एक दिन एक जिज्ञासु उसके पास आया और पूछने लगा कि आप भजन-ध्यान क्यों करते हैं और इससे आप क्या पाते हैं ? क्या भजन-ध्यान करने से आपके मष्तिष्क में विचार उठना बंद हो जाते हैं ? फ़क़ीर बोला कि मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर अवश्य दूंगा लेकिन मेरा एक काम कर लाओ। यह कहते फ़क़ीर अपनी कुटिया के भीतर से एक कोयले से भरी टोकरी लाया और जिज्ञासु से बोला कि इस टोकरी को ले जाओ और कोयले नदी में गिराकर नदी से इसमें पानी भर लाओ।

वह व्यक्ति बोला कि टोकरी में पानी लाना तो नामुमिकन है, यदि आप कहें तो पानी बाल्टी में भर लाऊँ ? फ़क़ीर ने कहा नहीं मैं चाहता हूँ कि तुम इसी टोकरी में पानी भरकर लाने का प्रयत्न करो । नदी कुटिया से थोड़ी दूर बहा करती थी । वह व्यक्ति कोयले से भरी टोकरी लेकर नदी पर गया, नदी में कोयले गिराए और टोकरी में पानी भर जल्दी-जल्दी कदम उठाता फ़क़ीर की कुटिया की तरफ़ बढ़ने लगा । लेकिन टोकरी का सारा पानी टोकरी को नदी से बाहर निकालते-निकालते ही बह गया । उसने बार-बार प्रयास किया और बहुत देर प्रयास के बाद वह किसी तरह टोकरी में पानी भरकर चला, लेकिन पानी जरा सी दूर जाते ही बहकर निकल गया । तेजी से दौड़ लगाने पर भी पानी टोकरी में रुका नहीं । बहुत देर प्रयत्न करने के बाद वह व्यक्ति वापस फ़क़ीर के पास लौट आया और बोला मैंने बहुत प्रयत्न किया लेकिन इस टोकरी में पानी भरकर आप तक नहीं ला पाया ।

फ़क़ीर हँसा और बोला, "अब जरा इस टोकरी को ध्यान से देखो । जब तुम इसे लेकर गए यह कोयले की टोकरी काली थी लेकिन अब सारी कालस धुल गयी है और टोकरी के रेशे फूलने से इसके छिद्र भी कुछ-कुछ बंद होने लगे हैं और बहुत थोड़ा ही सही, कुछ पानी इसमें रुक गया है ।" फिर बोला, "ठीक इसी तरह निरंतर अभ्यास से मष्तिष्क से कुसंस्कारों का प्रभाव मिटने लगता है, इस टोकरी की तरह मन शुद्ध होने लगता है और धीरे-धीरे उसका ध्यान बाहर से हटकर भीतर की ओर केन्द्रित होने लगता है । टोकरी की ही तरह छिद्र बंद होने से बाहरी प्रभावों की पैठ कुंद होने लगती है और आत्म-ज्ञान की कुछ बूंदे उसमें ठहरने लगती हैं।"

### कोरा कागज

एक बहुत पहुंचे हुए महात्माजी थे। लोग उनके सत्संग का लाभ उठाने और उनसे रहानी तालीम पाने को अपना सौभाग्य समझते। बहुत से लोग उनके पास इस उद्धेश्य से आते लेकिन जांच-परखकर कम ही लोगों को महात्माजी अपनी सेवा में रखते। उनकी प्रशंसा सुन और यह सोच कि महात्माजी से तालीम पाने के बाद तो लोगों के बीच उसका मान-सम्मान कई ज्यादा बढ़ जाएगा एक व्यक्ति ने उनसे रहानी तालीम पाने की सोची। इस व्यक्ति ने बहुत से शास्त्रों का अध्ययन कर रखा था और बहुत से श्लोक उसे मुहँ-जबानी याद थे। वह महात्माजी के पास गया और उनसे उसे अपनी सेवा में रखने के लिए विनती की। उसे आशा थी कि महात्माजी उस जैसे विद्वान् व्यक्ति को अपनी सेवा में रखने से इंकार नहीं करेगे। लेकिन हुआ ठीक इससे उल्टा। महात्माजी ने उसे अपनी सेवा में रखने से मना कर दिया। पूछने पर वे बोले कि तुम पर तो कहीं ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। वह व्यक्ति बोला कि मैंने तो कई शास्त्रों का अध्ययन कर रखा है और बहुत कुछ मुझे मुँह-जबानी याद है तो महात्माजी बोले, 'यही कारण है कि तुम पर मुझे ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। कोरे कागज पर लिखना तो आसान होता है लेकिन जिस पर पहले से बहुत कुछ लिखा हो, उस पर कुछ लिखने से पहले उस लिखे हुए को मिटाने में तो कई ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी ही ?'

# कौन सी खिड़की

हजरत बयाजिद बिस्तामी अपने समय के एक महान सूफ़ी संत हुए हैं । उनका जन्म सन 804 ई. में ईरान में बस्ताम नामक जगह पर एक जाने-माने झोरास्ट्रियन परिवार में हुआ था । उनके दादा पहले अग्नि की पूजा किया करते थे लेकिन बाद में उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया । बस्ताम में जन्म होने के कारण हजरत बयाजिद बस्तामी या बिस्तामी कहलाये । हजरत बयाजिद के आचार्यों में से एक 'सादिक' नाम के आचार्य भी थे । एक बार जब हजरत बयाजिद उनके समक्ष हाजिर थे, उन्होंने यकायक उनसे खिड़की में से कोई किताब उठाकर लाने को कहा । हजरत बयाजिद बोले, 'खिड़की, कौन सी खिड़की ?' वे आचार्य बोले तुम यहाँ इतने समय से आ रहे हो और आज तक तुमने इस कमरे की खिड़की नहीं देखी ? हजरत बयाजिद ने अर्ज किया मुझे खिड़की से क्या काम, जब मैं आप के समक्ष होता हूँ तो अपनी आखें आपके सिवाय सब ओर से बंद कर लेता हूँ । आचार्य बोले यह इंगित करता है कि तुम्हारा उद्धेश्य पूरा हो गया अब तुम बस्ताम वापस चले जाओ ।

# खुदा की मदद

एक बार शैख़ अब् सैद अबुल खैर और उनका एक प्रिय शिष्य हसन एक स्फ़ी समारोह की समाप्ति पर दरवाजे पर खड़े लोगों को विदाई दे रहे थे । ऊपर से तो हसन अपने काम में लगा था लेकिन मन ही मन वह चिंता में था कि उसने जो कर्ज लिया हुआ है उसे कैसे समय पर चुकता कर पाएगा ? सोच रहा था कि शायद शैख़ अब् सैद अबुल खैर उसको कोई उचित सलाह दें । तभी एक वृद्ध स्त्री को आता देखकर शैख़ अब् सैद अबुल खैर ने हसन से उसकी मदद करने को कहा । हसन उसे भीतर ले गया और उसे आराम से बैठाकर उसकी आवभगत करने लगा । उस स्त्री ने अपने पास से सोने के सिक्कों से भरी एक थैली निकालकर हसन से उसे शैख़ अब् सैद अबुल खैर को देने के लिए कहा और बोली की उनसे कहना कि वे मेरे लिए खुदा से दुआ करें । हसन ने सोचा कि शायद इस तरह खुदा ने उसके कर्ज को चुकाने का कोई इंतजाम किया हो लेकिन जब वह उस थैली को लेकर शैख़ अब् खैर के पास गया तो उन्होंने उसे शहर के एक कोने में स्थित कब्रिस्तान में जाकर वहाँ एक वृद्ध व्यक्ति से मिलकर शैख़ के अभिवादन के साथ उसे वह धन देने के लिए कहा । हसन ने वहाँ पहुँचकर देखा कि वह वृद्ध व्यक्ति गहरी नींद में सोया था । हसन ने उसे जगाकर शैख़ के अभिवादन के साथ वह थैली उसे दी तो वह क़ंदन करने लगा और हसन से विनती करने लगा कि वह उसे शैख़ के पास ले चले ।

रास्ते में वह हसन को अपनी कहानी सुनाने लगा, 'अपनी युवावस्था में मैं बहुत अच्छा तम्बूरा बजाया करता था। लोग मेरे संगीत को सुनने के लिए लालायित रहते और मुझे समारोहों में बुलाकर अच्छा पैसा दिया करते। मेरे दिन मजे से गुजर रहे थे लेकिन फिर समय ने करवट ली और जैसे-जैसे मेरी उम्र बढ़ती गयी लोगों की मेरे संगीत में रूचि कम होती गयी, मेरी लोकप्रियता भी घटने लगी और कमाई भी। यहाँ तक कि मेरे अपने ही परिवारवालों ने मुझे घर से बाहर निकाल दिया और अब मैं इस कब्रिस्तान में रहता हूँ और भीख मांगकर अपना गुजारा करता हूँ। कल रात मैं भूखा-प्यासा, थका-हारा और निराश होकर यहाँ आया और खुदा से कहने लगा कि किसीको मेरी जरुरत नहीं है, मेरा तेरे सिवाय कोई नहीं है, कोई मेरा संगीत सुनना नहीं चाहता। आज आखरी बार मैं अपना संगीत तुझे सुनाना चाहता हूँ, तू जो दे मुझे स्वीकार है। पूरी रात में तम्बूरा बजा-बजाकर अपने प्राणप्रण से उसे सुनाता रहा और फिर थककर सो गया। अब आकर तुमने मुझे जगाया और यह थैली दी है।

तब तक वे खानकाह पहुँच गए और शैख़ अबू सैद अबुल खैर को देखते ही वह तम्बूरा वादक खुदा की तारीफ़ करते और शैख़ अबू सैद अबुल खैर से अपने लिए दुआ करने के लिए कहते उनके कदमों पर गिर पड़ा । शैख़ ने उसे उठाकर अपने सीने से लगाया और फिर हसन से बोले, 'खुदा ने उस पर भरोसा रखनेवाले किसी भी व्यक्ति का भरोसा कभी

नहीं तोड़ा । जैसे खुदा ने इसके लिए इंतजाम किया तुम्हारे लिए भी वह सब इंतजाम करेगा ।'

### गलती का अहसास

एक बार एक बहुत ही वृद्ध और दुर्बल व्यक्ति अपनी किसी समस्या को लेकर शाह बहाउद्दीन नक्शबंद से मिलने आया । कुछ तो घबराहट और कुछ दृष्टी कमजोर होने के कारण उसने अपनी छड़ी का नुकीला हिस्सा शाह बहाउद्दीन नक्शबंद के पाँव पर रख दिया । वृद्ध के बोझ के कारण शाह बहाउद्दीन नक्शबंद के पाँव से खून निकलने लगा लेकिन इस असहय वेदना की अनदेखी कर शाह बहाउद्दीन नक्शबंद उस वृद्ध की बात बड़ी तल्लीनता से सुनते रहे । एक अन्य व्यक्ति जो वहाँ उपस्थित था, और यह सब देख रहा था, आश्चर्य कर रहा था कि शाह बहाउद्दीन नक्शबंद उस वृद्ध व्यक्ति को उनके पाँव पर से अपनी छड़ी हटाने के लिए क्यों नहीं कह रहे थे ? उस वृद्ध वृक्ति के चले जाने के बाद जब उसने शाह बहाउद्दीन नक्शबंद से इसका कारण पूछा तो वे बोले, "यदि मैंने अपनी पीड़ा जताने का कोई भी प्रयास किया होता तो वह वृद्ध असमंजस में पड़कर अपनी बात पूरी नहीं कर पाता और बिना अपनी बात कहे यहाँ से चला जाता । उसके अलावा मैं वृद्ध को उसकी गलती का अहसास कराकर उसके दिल को दुखी भी तो नहीं कर सकता था।"

# ग्र कौन

एक बार हजरत बयाजिद बिस्तामी से किसी ने पूछा कि आपका गुरु कौन है ? आपने फ़रमाया 'एक बूढ़ी औरत' और पूछने पर बतलाया कि "एक दफ़ा परमात्मा को पाने की उत्कट इच्छा की दशा में मैंने जंगल में एक बूढ़ी औरत को लकड़ियों का बोझ उठाते देखा । बोझ ज्यादा था, उसने मुझसे कहा कि बोझ उठा ले, मुझसे नहीं उठता । उस वक्त मेरी हालत ऐसी थी कि खुद का शरीर बोझ लगता था, उसका बोझ क्या उठाता ? मुझे एक शेर दिखाई दिया, उसको इशारा कर अपने पास बुलाया और उसकी पीठ पर वह बोझ रख उस बूढ़ी औरत से पूछा कि शहर में जाएगी तो तू क्या बयान करेगी कि तूने किसको देखा है ? वह बोली कि यह कहूँगी कि आज मैंने एक अहंकारी और जालिम को देखा है । मैंने पूछा कि ऐसा कैसे तो वह बोली कि जिसको ख़ुदा तकलीफ़ न दे उसको तू तकलीफ़ देता है, इससे जाहिर होता है कि तू जालिम है और उस पर तू चाहता है कि शहर के लोग ये जाने की तू साहबे चमत्कार (सिद्धपुरुष) है और शेर तेरे वश में है, जिससे जाहिर होता है कि तू अहंकारी है, जो सबसे बड़ा ऐब है । यह बात मेरे मन को लग गयी और मन ही मन उसे मैंने अपना गुरु मान लिया।"

# गुलाम का तौहफा

यह किस्सा हजरत मुहम्मद उमर फारुकी से सम्बन्धित है। हजरत मुहम्मद उमर फारुकी पैगम्बर मुहम्मद साहब के द्वितीय खलीफ़ा (उत्तराधिकारी) थे और उनके चौथे खलीफ़ा थे हजरत अली, जो पैगम्बर मुहम्मद के भतीजे और दामाद भी थे। एक बार हजरत मुहम्मद उमर फारुकी और हजरत अली के सुपुत्र दोनों साथ-साथ खेल रहे थे। खेल में किसी बात पट उतेजित हो हजरत अली के सुपुत्र ने हजरत मुहम्मद उमर फारुकी के सुपुत्र से कह दिया, "हालांकि तुम एक गुलाम के गुलाम हो, लेकिन बात मुझसे बराबरी की करते हो।" हजरत उमर फारुकी के पुत्र को यह बात बुरी लगी और उसने जाकर अपने पिता से शिकायत कर दी। हजरत उमर फारुकी ने उससे यह बात एक कागज पर लिखवाकर लाने को कहा ताकि शक की कोई गुंजाइश न रह जाए।

हजरत उमर फारुकी का पुत्र तुरंत हजरत अली के पुत्र के पास गया और बोला, 'यदि तुममें हिम्मत है तो तुमने मुझे जो गुलाम का गुलाम कहा, उसे कागज पर लिखकर दे दो ।' हजरत अली के पुत्र ने तुरंत बिना किसी भय या संकोच के वे शब्द एक कागज पर लिखकर उसे दे दिया । जब हजरत फारुकी के पुत्र ने वह कागज लाकर उन्हें दिया तो वे इतने प्रसन्न हुए मानों उन्हें कारू का खजाना मिल गया हो । उन्होंने उस कागज को अपने सर आँखों पर लगाया और अपने पुत्र को बाँहों में भरकर बोले, "बेटा तुमने मुझे अनमोल तौहफा दिया है । मैं दुआ करता हूँ कि खुदा सबको तुम जैसा होनहार बेटा दे । फिर वे बोले, "बेटे, हजरत अली के पुत्र मेरे शैख़ की बेटी के पुत्र हैं अतः वे मेरे मालिक हैं और मैं इस परिवार का गुलाम हूँ । मैं वसीयत करता हूँ कि मेरी मृत्यु होने पर इस कागज के टुकड़े को मेरे सीने पर रख दिया जाए ताकि फरिश्ते जान जाएँ कि मैं अपने मालिक हजरत पैगम्बर का एक गुलाम हूँ और मुझे शान्ति से उनके क़दमों में रहने दें।"

### गरीब कौन

एक बार एक सूफ़ी संत के पास उनका एक धनी शिष्य आया । सूफ़ी संत को देने के लिए वह धनी शिष्य अपने साथ एक थैली लेकर आया था जिसमें पांच सौ सोने के सिक्के भरे थे। जब उसने वह थैली सूफ़ी संत को देनी चाही तो उन सूफ़ी संत ने उससे पुछा क्या तुम्हारे पास इसके अलावा और भी धन है ?

धनी शिष्य: 'हाँ मेरे पास इसके अलावा भी बह्त सा धन है।'

सूफ़ी संत: 'क्या तुम और धन पाना चाहोगे ?'

धनी शिष्य: जी हाँ, क्यों नही ? यह तो मेरे लिए बड़े सौभाग्य की बात होगी।

उसका यह उत्तर सुनकर वे सूफ़ी संत बोले, "तब इस धन की मुझे आवश्यकता नहीं है, मुझसे ज्यादा तुम्हें यह धन चाहिए।"

# गुलाम की मर्जी

हजरत इब्राहीम एक नबी हुए हैं । इससे पूर्व वे बल्ख के बादशाह थे । एक बार उन्होंने कही से एक गुलाम ख़रीदा । उन्होंने गुलाम से पूछा तुम्हारा क्या नाम है ?

गुलाम ने उत्तर दिया, "जिस भी नाम से आप मुझे बुलाएं, वही मेरा नाम है।"

हजरत इब्राहीम: त्म क्या खाओगे ?

ग्लाम: जो भी आप खिलाएंगे।

हजरत इब्राहीम: तुम क्या पहनोगे ?

ग्लाम: जो भी आप पहनाएंगे वही मेरी पसंद है।

हजरत इब्राहीम: तुम क्या काम करोगे ?

गुलाम: जो भी मेरे मालिक आप मुझे करने के लिए ह्क्म देंगे।

हजरत इब्राहीम: आखिर तुम्हारी मर्जी क्या है, तुम क्या चाहते हो ?

गुलाम: मेरे मालिक ! गुलाम की क्या मर्जी । गुलाम की तो वही मर्जी है जो उसके मालिक की हो ।

गुलाम का उत्तर सुनकर हजरत इब्राहीम ने गुलाम को अपने गले से लगा लिया और बोले आज तूने मुझे एक बड़ा सबक दिया है। बन्दे को भी खुदा के साथ ऐसे ही पेश आना चाहिए। खुदा हम सबका मालिक है और हम सब उसके गुलाम। खुदा ने ही हम सबको जन्म दिया है फिर उससे कोई मांग कैसी। वह रब जो करवा दे वही ठीक है, जो खिला दे सो ठीक, जिस हाल में रखे वही ठीक। उसकी रजा में राज़ी रहना ही बन्दे का फर्ज है। और यह कहकर उन्होंने उस गुलाम को आजाद कर दिया।

# चहेता सेवक

एक बादशाह के पास बहुत से सेवक थे लेकिन उनमें से एक सेवक बादशाह का बहुत चहेता और उसके बहुत नजदीक था। लोग जो यह बात जानते थे अक्सर अपनी तकलीफ़ या अपनी फ़रियाद लिखकर उसे दे देते कि वह बादशाह से उनकी अर्जी मंजूर करा दे। इधर यह सेवक बादशाह का इतना वफ़ादार था कि जब भी वह बादशाह के समक्ष हाजिर होता, उसके मन में बादशाह के हुजूर (सामीप्य) के सिवाय और कोई विचार आता ही नहीं, और वह सबकुछ, यहाँ तक कि अपने-आप को भी भूल जाता। बादशाह उसकी हालत जानता था और इसलिए वह स्वयं उस सेवक की सब जरूरतों और उसके आराम का ख्याल रखता और जब वह उसके सामान को टटोलकर देखता और उनमें उन लोगों की अर्जियां देखता तो उनमें मांगी गयी वस्तु से भी कहीं अधिक का हुक्म जारी कर देता।

बादशाह के दूसरे सेवक जो हमेशा बादशाह को अपनी चतुराई और वफ़ादारी से प्रभावित करने का प्रयास करते थे, वे बादशाह के सामने बड़ी होशियारी से पेश आते लेकिन उनमें कभी अपना वास्तविक मंतव्य बताने का साहस नहीं होता और न ही वे कभी बादशाह के सामने कोई प्रार्थनापत्र पेश कर पाते । और यदि कभी किसी ने हिम्मत कर कुछ किया भी तो मुश्किल से ही कभी-कभार बादशाह वह प्रार्थना स्वीकार करता ।

### चोर और समाट

सम्राट सिकंदर अपने विश्वविजय के अभियान पर था। कई राज्यों पर विजय प्राप्त कर एक दिन वह किसी नगर के बाहर अपने आलिशान खेमे में विश्राम कर रहा था। खेमे में लूट का और अन्य बहुत सा बहुमूल्य सामान भी रखा हुआ था और पहरेदार पहरा भी दे रहे थे। लेकिन पहरेदारों के पहरा देने के बावजूद एक चोर उसके खेमे में घुस आया। पहरेदारों ने उसे पकड़ लिया और अगली सुबह सिकंदर के सामने प्रस्तुत किया। सिकंदर ने उससे पूछा कि तुम किस इरादे से मेरे खेमे में दाखिल हुए थे ? चोर ने बड़ी निर्भीकता से उत्तर दिया, 'चोरी के इरादे से।' सिकंदर ने उससे पूछा क्या तुम्हें मेरे खेमे में चोरी करते डर नहीं लगा ? चोर ने फिर उसी निर्भीकता से उत्तर दिया, 'नहीं।' सिकंदर ने फिर उससे पूछा क्या तुम्हें मिलने वाले दंड का भी खौफ नहीं है ? चोर ने कहा, 'नहीं।' सिकंदर उसके इस व्यवहार से अचिन्भित था। उसने पूछा, "तो बताओ, तुम्हें क्या दंड दिया जाए ?" चोर बोला, 'वही दंड जो ऐ सिकंदर! तू अपने लिए चाहे।' सिकंदर ने हैरानी से पूछा, "तुम्हारी ऐसा कहने की हिम्मत कैसे हुई ?" चोर बोला, "चोर मैं भी हूँ, और तू भी। फ़र्क बस इतना है कि तेरे पास ताकत है इसलिए तू अपनी चोरी को दूसरों पर जीत कहता है, मेरे पास ताकत नहीं है तो तू मुझे एक साधारण चोर ठहराकर दंड की बात कर रहा है।" चोर की बेबाक बातों का समाट सिकंदर के पास कोई जवाब नहीं था।

### चोर की पहचान

किसी गाँव में एक अमीर आदमी रहा करता था। एक बार किसी आवश्यक काम के लिए उसे कुछ दिनों के लिए घर को खाली छोड़ गाँव से बाहर जाना था। इस आशंका से कि कहीं कोई उसके धन को चुरा न ले जाए, उसने अपने सारे कीमती गहने, सोना, जवाहरात इत्यादि एक संदूकची में बंद कर एक निश्चित पेड़ के नीचे गड्ढा खोदकर उसमें छिपा दिए। जब कुछ दिन बाद वह वापस आया तो देखा कि जिस पेड़ के नीचे उसने सामान छिपाया था उसकी जड़े खुदी पड़ी हैं और उस संदूकची का कोई अता-पता नहीं है। उसका सारा कीमती सामान चोरी हो गया था।

जब किसी तरह चोर का कोई सुराग न मिला तो वह गाँव के किनारे रहने वाले एक साधु के पास गया और उनसे यह कहते हुए मदद मांगी कि वह किसी भी तरह चोर का पता नहीं लगा पा रहा है । साधु महाराज ने कुछ सोचकर उसे कुछ दिन बाद आने को कहा ।

इधर साधु महाराज ने उस गाँव के और आस-पास के गाँवों के सभी वैद्यों को बुला भेजा और उनसे पूछा कि क्या उन्होंने अपने किसी रोगी को एक निश्चित पेड़ की जड़ के रस के सेवन हेतु कहा था। उनमें से एक ने बताया कि उसने अपने एक रोगी को ऐसी सलाह दी थी। साधु महाराज ने उस रोगी को अपने पास बुलाया और पता लगा लिया कि वही वह व्यक्ति था जिसने उस पेड़ की जड़ की खुदाई के वक्त उस संदूकची को पाकर अपने पास रख लिया था। उन्होंने उस संदूकची को उससे लेकर उसके असली मालिक को लौटा दिया।

#### छाने-छाने

दो दोस्त थे। एक था पण्डित और दूसरा मौलवी। दोनों दोस्तों की एक बार शराब पीने की इच्छा जाग्रत हो गयी। दोनों समाज में जाने जाते थे और उनसे शराब पीने की उम्मीद नहीं की जा सकती थी। दोनों ने चुपचाप कहीं से शराब का प्रबंध किया और सोचा कि किसी ऐसी जगह जाकर शराब पीनी चाहिए जहाँ कोई उन्हें देख न सके। दोनों किसी सुनसान जगह एक दीवार की ओट में बैठकर शराब पीने लगे। शराब की एक घूँट पीते ही पण्डित बोला, 'अरे भई, छाने-छाने।' (छाने-छाने अर्थात चुपके-चुपके)। मौलवी ने भी घूँट लेकर सुर में सुर मिलाया और बोला, 'अरे भई छाने-छाने।' दोनों को इस बात की ख़ुशी थी कि उन्हें शराब पीने का मौका मिल गया था और वो भी ऐसी जगह जहाँ उन्हें कोई देखने वाला नहीं था और उनके इस कृत्य का किसीको आसानी से पता चलने वाला नहीं था। पण्डित ने दूसरी घूँट लेकर थोड़ा जोर से कहा, 'देख भई, छाने-छाने' और इसी तरह मौलवी ने भी एक और घूँट भरकर थोड़ी जोर से कहा 'देख भई, छाने-छाने।' दोनों घूँट पर घूँट चढाते गए और उन पर शराब का नशा भी छाने लगा और इसी के साथ दोनों की आवाज भी बुलंद होती गयी। धीरे-धीरे दोनों तेज नशे में एक दुसरे को 'अरे भई, छाने-छाने' कहकर सावधान करने लगे। होते-होते दोनों खड़े होकर जोर-शोर से यही राग आलापने लगे और उन्हीं के इस शोर ने उनका यह कृत्य जग जाहिर कर दिया।

# जब ब्ल्लेशाह नाचे

हजरत बुल्लेशाह पंजाब में कादिरी सिलसिले के एक बहुत ही महान और लोकप्रिय सूफी संत हुए हैं । हजरत इनायत शाह उनके गुरु थे । बुल्लेशाह सैयद अर्थात हजरत पैगम्बर मुहम्मद साहब के खानदान से थे लेकिन हजरत इनायत शाह किसी निम्न जाति से थे । बुल्लेशाह के परिजन इस बात को स्वीकार नहीं कर पा रहे थे लेकिन वे स्वयं अपने गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित थे । एक बार परिवार में किसी विवाह के अवसर पर बुल्लेशाह ने हजरत इनायत शाह को निमंत्रित किया । हालांकि हजरत इनायत शाह स्वयं तो नहीं आये लेकिन उन्होंने अपने एक शिष्य को अपनी ओर से अपने प्रतिनिधि के रूप में विवाह में शामिल होने के लिये भेज दिया । वह शिष्य भी उसी जाति का था जिस जाति के हजरत इनायत शाह थे । बुल्लेशाह के परिवारवालों ने इस शिष्य पर ठीक से ध्यान न दिया और उसकी अनदेखी की । बुल्लेशाह ने भी अपने परिवारवालों के प्रभाव में उस पर कुछ खास ध्यान न दिया । हजरत इनायत शाह के पास जब यह बात पहुंची तो वे बुल्लेशाह से नाराज हो गए और उन्हें अपने पास आने से मना कर दिया ।

इस प्रकरण ने तो बुल्लेशाह की दुनिया ही बदल कर रख दी । उनके आंतरिक आनंद का स्रोत्र सूखने लगा । उन्होंने अपने पूज्य गुरुदेव को मनाने की बहुत कोशिश की लेकिन वे अपने प्रयत्न में सफल न हुए । बुल्लेशाह को मालूम था कि हजरत इनायत शाह को संगीत पसंद था । उन्होंने संगीत और नृत्य सीखना शुरू कर दिया । नृत्य सीखाने वाली स्त्री को उन्होंने अपनी धर्ममाता बना लिया । थोड़े ही समय में वे नृत्य एवं संगीत में प्रवीण हो गए ।

हजरत इनायत शाह हर वर्ष एक उर्स में शामिल होते थे । बुल्लेशाह वहाँ अपनी धर्ममाता के साथ पहुँच गए । उन्होंने अपना चेहरा घूंघट में छिपा रखा था । उन्होंने अपनी धर्ममाता से कहा कि अगर हजरत इनायत शाह उनकी कला से खुश होकर उनका नाम पूछें या घूँघट हटाने को कहें तो वे तब तक उनका नाम न बताएं जब तक कि वे हजरत इनायत शाह से उनके सारे गुनाह माफ़ न करवा लें ।

उर्स में बुल्लेशाह ने जी-जान लगाकर हजरत इनायत शाह को खुश करने की कोशिश की । बुल्लेशाह का गायन व नृत्य देखकर हजरत इनायत शाह बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उनका घूंघट हटाने को कहा । बुल्लेशाह की धर्ममाता ने हजरत इनायत शाह से पहले उनके सारे गुनाह माफ़ करने को कहा । हजरत इनायत शाह ने तुरंत हाँ कर दी और जैसे ही उन्होंने बुल्लेशाह को देखा, उन्हें गले लगाकर पुन: अपना लिया और उनके इदय को प्रेम से लबालब भर अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया ।

# जुन्नार की कीमत

कहा जाता है कि एक बार हजरत बयाजिद ऐसी मनोस्थित में आ गए कि उनका दिल उचट गया और मन इबादत में न लगता, जिसे सूफ़ी-भाषावली में कब्ज होना कहते हैं। नाउम्मीद होकर उन्होंने इस्लाम छोड़ने के इरादे से बाज़ार से जुन्नार (जनेक) खरीद कर कमर में बाँधने का निश्चय किया। उन्होंने अपने दिल में जुन्नार की कीमत एक दिर्हम (चांदी का सिक्का) ख्याल की और दुकानदार से पूछा। दुकानदार ने कीमत एक हज़ार दिर्हम बताई। इतनी ज्यादा कीमत सुनकर वे खामोश हो गए। तभी उन्हें गैबी (दैवी) आवाज सुनाई दी कि 'जो जुन्नार तू बांधे उसकी कीमत हज़ार दिर्हम ही होनी चाहिए।' हजरत बयाजिद (रहम.) फरमाते हैं कि उनका दिल खुश हो गया कि अल्लाह तआला की उनके हाल पर इनायत है। इसी तरह वे फरमाते हैं कि "एक बार मुझ पर इल्हाम हुआ (दैवीय प्रेरणा) कि 'ऐ बयाजिद! जो तू इबादत करता है उससे बेहतर ला और ऐसी चीज ला जो कि मेरी दरगाह में न हो।' मैंने अर्ज किया, 'या अल्लाह! तेरे पास क्या नहीं है ?' इल्हाम हुआ 'बेचारगी, आजिजी (विनम्रता), नियाज (प्रार्थना, आरज्) और शिकस्तगी (टूट-फूट, जीर्णता, शरणागति) नहीं है वही ला', अर्थात अपने में ये गुण पैदा कर।"

# जूतियों की कीमत

हजरत निजामुद्दीन औलिया चिश्ती सम्प्रदाय के एक महान सूफी संत हुए हैं। अमीर खुसरो उनके प्रिय और समर्पित शिष्य थे। अपना अंतिम समय निकट जानकर हजरत निजामुद्दीन औलिया अपनी सभी चीजें जरुरतमंदों में बांट चुके थे। उस अंतिम समय एक गरीब ब्राह्मण अपनी पुत्री के विवाह में कुछ सहायता की आस लिए हजरत निजामुद्दीन औलिया के पास हाजिर हुआ लेकिन उस वक्त तक हजरत निजामुद्दीन औलिया अपना सब कुछ दे चुके थे और उनके पास देने के लिये कुछ न बचा था। हजरत निजामुद्दीन औलिया ने ब्राह्मण से कहा कि उसने आने में देर कर दी और अब उनके पास उसे देने के लिये कुछ न बचा था सिवाय उनकी जूतियों के और यह कहते उन्होंने ब्राह्मण को अपनी वे जूतियाँ दे दीं। ब्राह्मण को बड़ी निराशा हुई लेकिन वह बिना कुछ कहे और अपना मन मारकर उन जूतियों को साथ ले वापस चल पड़ा।

एक ओर बेहद उदास और निराश मन से ब्राह्मण चला जा रहा था और दूसरी ओर से अमीर खुसरो चले आ रहे थे। वे व्यापार के सिलसिले में बाहर गए हुए थे और बहुत धन कमाकर लौट रहे थे। यह धन चालीस खच्चरों पर लदा हुआ था। अमीर खुसरो को दूर से ही अपने शैख़ हजरत निजामुद्दीन औलिया की खुशब् आने लगी और वे उस खुशब् के स्रोत को इधर-उधर खोजने लगे। जैसे-जैसे वह ब्राह्मण उनके नजदीक आ रहा था, अमीर खुसरों को खुशब् का एहसास और ज्यादा हो रहा था। थोड़ी ही देर में वे समझ गए कि वो खुशब् उस ब्राह्मण के पास से ही आ रही है। उन्होंने ब्राह्मण से पूछा कि क्या वह हजरत निजामुद्दीन औलिया से मिलकर आ रहा है तो ब्राह्मण ने उन्हें सारी कहानी कह सुनाई। अमीर खुसरों ने ब्राह्मण से कहा कि क्या वह उन्हें वे जूतियाँ उन चालीस खच्चरों पर लदे धन के बदले दे सकता है? ब्राह्मण को और क्या चाहिए था, उसने उन चालीस खच्चरों के बदले वे जूतियाँ अमीर खुसरों को दे दीं और खुशी-खुशी चल दिया। उधर अमीर खुसरों को तो मानों जीवन भर का अनमोल खजाना मिल गया था। अत्यंत प्रेम और आदर के साथ अपने शैख़ हजरत निजामुद्दीन औलिया की जूतियों को अपने सर पर रख वे दिल्ली हजरत निजामुद्दीन औलिया के दर्शन के लिये चल पड़े।

उधर तब तक हजरत निजामुद्दीन औलिया अपनी इहलीला समाप्त कर चुके थे। उन्होंने अपने अन्य मुरीदों को आगाह कर दिया था कि वे अमीर खुसरो को उनकी मजार पर न आने दें वरना अमीर खुसरो वहीं अपनी जान दे देंगे। अमीर खुसरो ने अपने शैख़ की आज्ञा का पालन किया लेकिन उनके विरह में कुछ ही दिनों बाद अपना शरीर त्याग दिया। उनकी मजार भी उसी आहाते में हजरत निजामुद्दीन औलिया की मजार के नजदीक ही बनी हुई है।

### जैसी जिसकी सोच

एक राजा था । उसे वन-विहार का बड़ा शौक था । जब भी मौका मिलता वह अपने मंत्री और सेवकों को लेकर वन-विहार के लिए निकल जाता । ऐसे ही एक बार राजा वन-विहार के लिये अपने मंत्री और कुछ खास सेवकों को लेकर निकला । राजा के लिए एक सुन्दर सा और आरामदायक खेमा लगा दिया गया । राजा उसमें विश्राम कर रहा था साथ ही उसका मंत्री भी था । जंगल से पिक्षयों की तरह-तरह की आवाजें आ रहीं थी जिसे सुनकर राजा मुग्ध हो रहा था । बातों-बातों में उसने मंत्री से कहा कि ऐसा कौन होगा जो इन आवाजों से आकर्षित न होता होगा, ये तो सबके मन को मोह लेने वाली हैं ? मंत्री समझदार और अनुभवी व्यक्ति था । उसने राजा से कहा, "महाराज, यह तो सुनने वाले के स्वभाव और पिरिस्थितियों पर निर्भर करता है । जरुरी नहीं कि एक व्यक्ति जो सुन रहा हो, वही दूसरा भी सुन रहा हो ।" राजा को इस बात पर थोड़ा आश्चर्य हुआ तो मंत्री ने कहा अभी आपके सामने इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण पेश करता हूँ ।

राजा के खेमें के पास ही उसके सेवकों का खेमा लगा था और वे लोग चूल्हा जलाकर भोजन के लिए एक हंडिया में दाल पका रहे थे। हंडिया में दाल उबलते हुए खदबद-खदबद कर रही थी। उन लोगों में एक रसोइया, एक पहरेदार और एक पंडित भी था। मंत्री ने रसोइए को राजा के पास बुलाकर पूछा कि दाल की हांडी में से क्या आवाज आ रही है? वो बोला, "लहसुन, प्याज, अदरक"। फिर मंत्री ने पहरेदार को बुलाकर उससे भी यही प्रश्न किया तो वो बोला कि हंडिया से "दाल, चपाती ढ़क रख" की आवाज आ रही है। इसके बाद पंडित को बुलाया गया तो उसने कहा कि हंडिया से आवाज आ रही है, "सीताराम दशरथ"।

उन तीनों के जाने के बाद मंत्री बोला, "देखिये महाराज, इन तीनों ने हंडिया से आ रही आवाज को अलग-अलग सुना । रसोइए को यह आवाज "लहसुन, प्याज, अदरक" सुनाई दी क्योंकि उसे अभी दाल में इन सबका छोंक लगाना है । पहरेदार को यह आवाज "दाल, चपाती ढ़क रख" क्योंकि उसके स्वभाव में चीजों की रक्षा करना शामिल है और पंडित को यही आवाज "सीताराम दशरथ" सुनाई दी जो उन्हें उनके स्वाभाव के अनुरूप है । एक ही आवाज को तीनों ने अलग-अलग सुना । सभी लोग ज्ञान और कर्म को अपने-अपने स्वभाव और परिस्थितियों के अनुसार ग्रहण करते हैं ।

### जो सो गए

शिराज़ शहर के शैख़ सादी एक महान सूफी संत हुए हैं । वे कहा करते थे, "जब मैं छोटा बच्चा ही था, मैं अपने पूज्य पिता, चाचा और चचेरे भाई-बहनों के साथ प्रार्थना में शामिल हुआ करता था । हर रात हम सब एक जगह इकट्ठा होकर पवित्र क़ुर'आन के किसी एक हिस्से का पाठ सुना करते थे ।

एक रात जब मेरे चाचा जोर से पवित्र क़ुर'आन का पाठ कर रहे थे, मैंने देखा कि ज्यादातर लोग सो गए थे। मैंने अपने पिताजी से कहा "ये सभी लोग जो सो गए हैं इनमें से कोई भी हजरत पैगम्बर साहब का एक भी शब्द नहीं सुन रहा है। ये कभी अल्लाह तक नहीं पहुँच पाएंगे।"

मेरी बात सुनकर उन्होंने कहा, 'मेरे प्यारे बेटे ! तुम्हें श्रद्धा और विश्वास के साथ अपनी राह खोजनी चाहिए और औरों को खुद अपनी-अपनी फ़िक्र करने के लिए छोड़ देना चाहिए । किसे मालुम ये स्वप्न में अल्लाह से मुखातिब हों ? मेरा विश्वास करो, मैं तुम्हारे औरों के बारे में इस तरह के विचार रखने और उनकी आलोचना करने से कहीं अधिक तुम्हारा उनके पास सो जाना ज्यादा पसंद करूंगा ।"

#### डर टपक-टपक का

चोरी करने के इरादे से एक रात एक चोर एक बुढ़िया के घर जा पहुंचा । चोर की किस्मत कि बुढ़िया के शयनकक्ष की खिड़की खुली थी । चोर खुली खिड़की से अपना सर भीतर कर ताकने लगा । अँधेरे में उसे कुछ दिखा तो नहीं लेकिन बुढ़िया की आवाज जरुर सुनाई दे गयी । वह बड़बड़ा रही थी, 'यह टपक, टपक तो मेरी जान लेकर ही मेरा पीछा छोड़ेगा ।'

चोर ने सोचा कि बुढ़िया को कोई गंभीर बीमारी लगी है जिसका नाम टपक-टपक है, जिसके बारे में मैंने तो आज तक सुना भी नहीं । इतनी खतरनाक बीमारी कि बुढ़िया की जान पर बन आई और मैं खिड़की के अंदर सर डाल इतनी देर तक सांस लेता रहा । जरुर यह भयंकर बीमारी मुझे भी लग गयी होगी और मेरी भी मौत निश्चित है ।

यह सोच-सोचकर चोर की हालात खराब होने लगी । उसके हाथ-पाँव में कंपन होने लगा और वह किसी तरह गिरता-पड़ता अपने घर तक पहुंचा और घर पहुँचते ही बिस्तर पर गिर पड़ा । उसकी पत्नी ने पूछा तो चोर के मुँह से साफ़ आवाज भी नहीं निकल पा रही थी, वो उसके बड़बड़ाने से कुछ समझ न पाई । उसने सोचा अंधेरे में शायद किसी जानवर ने हमला कर दिया हो लेकिन चोर के शरीर पर कहीं कोई चोट का निशान भी न था । उसे लगा शायद यह कोई उपरी असर (प्रेत-बाधा) हो ? यह सोचकर वह पास ही रहनेवाले एक ओझा को ब्ला लायी ।

ओझा को नजदीक देख चोर को लगा कि उसका अंत समय आ गया है और वो जोरजोर से बड़बड़ाने लगा कि गली के नुक्कड़ पर रहने वाली बुढ़िया के घर से इस टपकटपक ने उसे पकड़ लिया है और अब यह उसकी जान लेकर ही पीछा छोड़ेगा । ओझा ने
भी पहले कभी टपक-टपक के बारे में नहीं सुना था और यह तो उसकी सोच से भी कई
ज्यादा खतरनाक है । वो चोर से बोला, 'देखो, तुम्हारा अंत समय नजदीक आगया है,
ईश्वर से अपने गुनाहों की माफ़ी मांग लो ।' यह कह वह उस बुढ़िया के घर जा पहुंचा
और उसी खिड़की से झांककर अन्दर देखा तो उसे भी सुनाई दिया कि बुढ़िया कह रही थी
कि 'ओ दुष्ट टपक-टपक मेरी जान के पीछे क्यों पड़ा है, मेरा पीछा छोड़ ।' बुढ़िया इसी
तरह बड़बड़ा रही थी । ओझा कुछ देर सुनता रहा तो उसकी रीढ़ की हड़डी में सिहरन होने
लगी और वो कपकपाने लगा, यहाँ तक कि उसकी कपकपाहट के कारण खिड़की की
चोखट भी आवाज करने लगी और इससे बुढ़िया की नींद खुल गयी और उसने ओझा को
खिड़की से झांकते देख लिया । वो बोली, 'इतनी रात किसी के घर में चोरी से झांकते तुझे
शर्म नहीं आती ?'

ओझा बोला मुझे मालूम चला कि तुम्हें टपक-टपक ने पकड़ लिया है और लगता है अब वो मेरे उपर भी सवार हो गया है, मेरी सारी ताकत और विद्या जाती रही । यह सुन बुढ़िया बोली, 'बेवकूफ ! मैं सारी उम्र सोचती रही कि तू समझदार आदमी है, पर तू तो टपक-टपक के नाम से ही कॉपने लगा । भीतर आकर देख, यह नल ठीक होने का नाम ही नहीं लेता और सारे दिन टपक-टपककर इसने मेरी नाक में दम कर रखा है ।'

ओझा की जान में जान आई और तुरंत वह चोर के घर की तरफ़ दौड़ा । चोर बोला भाग जा, तू तो मुझे मरने के लिए छोड़कर भाग गया था । ओझा बोला, 'चुप । तू क्या समझता है, मैं इसे ठीक नहीं कर सकता । मैं तेरे इलाज के लिए ही तुझे छोड़कर गया था ।' चोर ने जैसे ही इलाज की बात सुनी, उसमें भी आशा का संचार हुआ । ओझा ने पानी हाथ में लेकर कुछ मन्त्र से बुदबुदाये और चोर से बोला वादा करो कि अब तुम कभी चोरी नहीं करोगे और अपनी जिन्दगी सही रास्ते पर चलकर गुजारोगे । अँधा क्या चाहे, दो आँखें । चोर ने तुरंत हामी भर दी । ओझा ने उसपर और इधर-उधर पानी के छीटें मारे और टपक-टपक से बोला, 'छोड़ इसे ।' तुरंत चोर ठीक होकर बैठ गया ।

उस दिन से चोर ने फिर कभी चोरी नहीं की, ना ही उसने कभी इस बात का किसी से जिक्र किया क्योंकि ऐसा करने से उसके चोर होने का भेद खुल जाता । बुढ़िया ने भी बेवकूफ ओझा का इस उम्मीद से कभी किसी से जिक्र नहीं किया कि कभी उसका भी किसी दिन ओझा से कोई काम पड़ सकता है । और रही बात ओझा की तो उससे तो इस बात को किसी को बताने की उम्मीद ही नहीं की जा सकती कि वह अपनी बेवकूफी की चर्चा स्वयं अपने मुहँ से करता ।

लेकिन फिर भी यह कहानी आप तक पहुँच ही गयी। क्यों ? क्योंकि इस कहानी के पात्रों ने अपने-अपने तरीकों से इस कहानी को किसी एक को यह कहकर अवश्य बताया होगा कि वह इसे किसीको भी न बताए।

# तौहफे की कद्र

हजरत अबुल हसन खिरकानी अपने वक्त के एक बहुत महान सूफ़ी संत हुए हैं । सुल्तान महमूद गजनवी (971-1030) उनका समकालीन था । एक बार महमूद गजनवी हजरत अबुल हसन खिरकानी के दर्शन की इच्छा से खिरकान गया । उसने अपने एक दूत को उनके पास भेजा कि वह उनसे कहे कि वे बादशाह सलामत को उसके खेमे पर आकर दर्शन देने की कृपा करें और अगर वे खेमे पर आने से इन्कार करें तो उन्हें क़ुरआन शरीफ की यह आयत सुना दें, "अति उल्लाह ब अतिउर्रसूल ब उलिल अमरे मिनकुम" अर्थात अल्लाह का ह्क्म मानो और रसूल की फ़रमाबरदारी करो और तुममें से जो हाकिम हो उसकी फ़रमाबरदारी करो । दूत ने उनसे बादशाह का सन्देश निवेदन किया । उन्होंने फ़रमाया 'मुझे माफ़ करो' तो दूत ने उन्हें बादशाह की आज्ञानुसार क़रआन शरीफ की वह आयत पढ़कर सुनाई । जवाब में उन्होंने फ़रमाया कि 'मैं अल्लाह की इबादत में इतना तल्लीन हूँ कि रसूल की इताअत (आज्ञा पालन) के लिये भी वक्त नहीं फिर दुनिया के हाकिमों का तो जिक्र ही क्या ?' दूत से यह सुनकर महमूद गजनवी समझ गया कि वे उसकी सोच से भी बढ़कर महान संत हैं । फिर भी उसने अपनी बादशाही प्रवृति के अनुसार उनकी परीक्षा लेनी चाही और अपनी जगह अयाज नामक एक गुलाम को बादशाही पोषाक पहना दी और स्वयं गुलाम की पोषाक पहनकर दस दासियों को मरदाना पोषाक पहनाकर उनके साथ हजरत अबुल हसन खिरकानी के सामने हाजिर हुआ । हजरत अबुल हसन खिरकानी ने महमूद गजनवी जो गुलाम के वेश में था के सलाम का जवाब तो दिया लेकिन कोई आदर न किया । अयाज की तरफ़ भी उन्होंने कोई ध्यान न दिया और महमूद गजनवी को हाथ पकड़कर अपने पास बैठाकर कहा कि यह सब फ़रेब छोड़ो और इन दासियों को बाहर भेजो I

महमूद गजनवी ने उनसे विनती की कि हजरत बयाजिद बिस्तामी (हजरत अबुल हसन खिरकानी के शैख़) के बारे में कुछ फ़रमायें । आपने कहा कि हजरत बयाजिद बिस्तामी ने फ़रमाया है 'जिसने मुझे देखा बदबख्ती (दुर्भाग्य) से बरी हो गया ।' बादशाह को इस जवाब से संशय हुआ, उसने पूछा कि क्या उनका [हजरत बयाजिद बिस्तामी का] दर्जा हजरत पैगम्बर से भी ज्यादा है क्योंकि अबु जहल ने हजरत पैगम्बर को देखा पर वो अभागे ही रहे ? आपने फ़रमाया, 'ऐ महमूद ! अदब का लिहाज रख और अपनी सल्तनत को खतरे में मत डाल । अबु जहल ने अपने भतीजे को देखा न कि हजरत पैगम्बर को और असलियत तो यह है कि उन्हें अर्थात हजरत पैगम्बर को उनके चार खलीफ़ाओं और साहबाओं के सिवाय किसी ने उन्हें पैगम्बर के रूप में नहीं देखा और इसका सबूत यह आयत है: "ऐ मुहम्मद ! तू उनको देखता है जो तेरी तरफ़ नजर करते हैं, हालाँकि वे तुझे नहीं देख सकते ।" बादशाह को यह असलियत समझ आई और उसने उन्हें कुछ और उपदेश देने के लिये निवेदन किया । आपने उसे और उपदेश दिये । फ़रमाया जो चीजें

हराम हैं, उनसे दूर रहो । दानशील बनो, नमाज़ लोगों के साथ अदा करो । लोगों के साथ दया व प्रेम पूर्वक व्यवहार करो ।

महमूद गजनवी ने तब उनसे अपने लिये दुआ करने को कहा । आपने फ़रमाया कि मैं हर वक्त परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि वह मोमिन (ईश्वर पर ईमान रखने वाले) मर्दौं और औरतों को बख्श दे । महमूद गजनवी ने अपने लिये किसी विशेष दुआ के लिये अर्ज किया तो आपने दुआ की कि 'ऐ महमूद ! तेरी आकिबत (अंजाम) महमूद (श्रेष्ठ) हो ।' महमूद गजनवी ने तब उन्हें अशर्फियों से भरी एक थैली भेंट करनी चाही तो आपने उसके सामने जौ की एक सूखी रोटी खाने के लिये रख दी । महमूद गजनवी ने एक टुकड़ा तोड़कर मुँह में रखा और देर तक उसे चबाता रहा, वह कोर उसके गले के नीचे नहीं उतर रहा था । हजरत अबुल हसन खिरकानी बोले जैसे तेरे गले में यह जौ की रोटी अटकती है मेरे गले में भी तेरी अशर्फियों की थैली अटकती है । बादशाह के आग्रह करने पर भी उन्होंने एक भी अशर्फी लेने से इंकार कर दिया और फ़रमाया बिना जरूरत कोई चीज लेना ठीक नहीं । बादशाह हजरत अबुल हसन खिरकानी की निस्पृहता से बहुत प्रभावित ह्आ और विदा लेते वक्त उनसे अपनी कोई निशानी उपहार के रूप में मांगी । आपने अपनी एक कमीज उसे दे दी और फ़रमाया कि अगर वो उसे हाथ में लेकर कोई द्आ मांगेगा तो इंशाअल्लाह मंजूर होगी । फिर बादशाह वापस जाने के लिये खड़ा ह्आ तो हजरत अबुल हसन खिरकानी भी उसको आदर देने के लिये उठ खड़े हुए । उन्हें अपने आदर में खड़े हुए देख बादशाह ने विनम्रता से पूछा कि जब मैं यहाँ आया तो आपने मुझे कोई आदर नहीं दिया लेकिन अब जा रहा हूँ तो आप मुझे आदर दे रहे हैं । आपने फ़रमाया जब त्म आये थे तो एक बादशाह होने के दर्प के साथ लेकिन अब जा रहे हो फ़क़ीरी की विनम्रता के साथ, जिसका आदर करना जरूरी है।

इस अमुल्य तोहफे को महमूद गजनवी अपने साथ रखता था और सोमनाथ की लड़ाई के वक्त भी यह उसके पास था। इस घमासान लड़ाई में एक वक्त ऐसा आया कि उसे लगने लगा कि उसकी हार हो जाएगी। इस विकट परिस्थिति में उसे हजरत अबुल हसन खिरकानी की कमीज की याद आई और घोड़े से कूदकर उसने उस कमीज को हाथ में लेकर अपनी जीत की दुआ मांगी। कुछ ऐसा हुआ कि बाजी पलट गयी और महमूद गजनवी जीत गया। उसी रात महमूद गजनवी ने स्वप्न में हजरत अबुल हसन खिरकानी को देखा, वे फ़रमा रहे थे कि 'ऐ महमूद! तूने हमारे खिर्क (चोगा, कमीज) की कुछ इज्जत न की। अगर तू अल्लाह तआला से तमाम काफिरों के मुसलमान हो जाने की दुआ मांगता तो सब मुसलमान (ईश्वर भक्त) हो जाते।'

# त्याग क्विचारों का

एक राजा एक सुन्दर युवती पर मोहित हो गया । राजा का अत्यधिक आग्रह देख और अन्य कोई चारा न देख उस युवती ने राजा को एक माह बाद आने का निमंत्रण दे दिया। इस दौरान उसने खाना-पीना छोड़ दिया । एक माह बाद जब राजा वहाँ पहुँचा तो देखा वह युवती सूखकर काँटा हो गयी है, शरीर का सौन्दर्य जाता रहा और वह मात्र हड्डियों का ढांचा बनकर रह गयी है । उसकी बड़ी-बड़ी आखें गड़ढों में धंस गयी हैं और शरीर का रंग स्याह पड़ गया है। जो सौन्दर्य पहले दूर से ही अपनी तरफ़ आकर्षित करता था वह अब काटने को दौड़ रहा था। राजा ने हतप्रभ होकर युवती से पूछा कि उसे क्या हो गया और उसका वह सौन्दर्य कहाँ गया ? युवती ने पास ही एक दूसरे कमरे की ओर ईशारा कर दिया । राजा उस कमरे की तरफ़ बढ़ा लेकिन कमरे के दरवाजे पर ही ठिठक कर रुक गया । कमरे के भीतर से बड़ी दुर्गन्ध आ रही थी । भीतर जगह-जगह ठीकरों में विष्टा भरी पड़ी थी और उन पर मिक्खयाँ भिनभिना रही थीं । दुर्गन्ध के मारे राजा का सर भिन्ना गया और वो तुरंत वहाँ से दूर जाने लगा । पास ही खड़ी उस युवती की एक दासी ने कहा, 'राजन ! नाक-भौं क्यों सिकोड़ते हो । आपको इसी की चाहत थी ना । इस देह की सुन्दरता तो ऊपरी ही है, भीतर तो यही सब भरा पड़ा है । चमड़े से ढका होने के कारण न मक्खियाँ भिनभिनाती हैं न दुर्गन्ध आती है । असल में तो जिसकी आपको चाहना थी वह सौन्दर्य यही है, इसे जी भरकर देख लीजिये।'

यह सुनकर राजा के मन में वैराग्य जाग उठा । सौन्दर्य की वास्तविकता समझकर उसने अपने कुविचारों का पूर्णतया त्याग कर दिया और फिर किसी की तरफ़ बुरी दृष्टी से नहीं देखा ।

# दिल की निगहबानी

कठिन तपस्या और अहंकार के सर्वथा त्याग के बाद भी एक बार हजरत बयाजिद के मन में गुमान हुआ कि मैं अपने ज़माने का बहुत बड़ा शैख़ हूँ । खुरासान जाते वक्त वे तीन दिन तक एक मस्जिद में इस इरादे के साथ रुके रहे कि जब तक परमात्मा उन्हें उनकी असली स्थिति से अवगत नहीं करा देता वे आगे नहीं जायेंगे । चौथे दिन उन्हें ऊँट पर सवार एक काना व्यक्ति उधर आता दिखा । ऊँट की तरफ़ देखकर हजरत बयाजिद ने उसे ठहरने का ईशारा किया तो ऊँट के पाँव जमीन में धस गए और वो वहीं रुक गया । ऊँट सवार बोला कि क्या तू चाहता है कि मैं अपनी खुली आँख बंद करके बंद आँख खोलूं और बस्ताम को बयाजिद समेत डुबा दूं ? यह सुनकर हजरत बयाजिद ने घबरा कर पूछा आप कहाँ से तशरीफ़ लाये हैं ? उसने कहा जब तूने अल्लाह से आगे न जाने का अहद किया मैं यहाँ से तीन हजार फरसंग (एक फरसंग यानि करीब सवा दो मील अर्थात 6700 मील या 10000 कि. मी.) की दूरी पर था और खबरदार हो जा' उनकी नजरों के सामने ही गायब हो गया।

### दिल की सफाई

संत कबीर एक महान संत हुए हैं और बहुत से लोग उनके साथ सतसंग के लिए उत्सुक रहा करते थे। एक बार एक मौलवी साहब ने भी उनके सतसंग का लाभ उठाना चाहा। वे संत कबीर की कुटिया की ओर चल पड़े। उनके दरवाजे पर पहुँचे तो देखा वहाँ एक सुअर बंधा हुआ था। मौलवी साहब दरवाजे से ही वापस लौट गए। उन्होंने अगले दिन फिर जाने का विचार किया। इस बार भी जब वे संत कबीर के दरवाजे पर पहुँचे तो बाहर सुअर बंधा पाया। नाक-भौं सिकोइते मौलवी साहब उस दिन भी बिना कबीरदासजी से मुलाक़ात किए लौट गए। मौलवी साहब तीसरे दिन फिर कबीरदासजी से मिलने पहुँचे तो इस बार उन्होंने कबीरदासजी को अपने घर के बाहर टहलते हुए पाया। मौलवी साहब कबीरदासजी को देखते ही बोले ये किस काफ़िर को आपने अपने घर के बाहर बाँध रखा है? कबीरदासजी ने फ़रमाया मैंने तो इसे घर के बाहर ही बाँध रखा है लेकिन आप तो तीन दिन से इसे दिल में बाँधे घूम रहे हैं। पहले इसे दिल से निकालो तब कहीं सत का संग मिल पाएगा।

### दिल से याद

एक बार यात्रियों का एक दल हज के लिये जा रहा था, रास्ते में खतरा था इसलिए वे लोग आकर हजरत अबुल हसन खिरकानी से मिले और प्रार्थना की कि वे कोई ऐसी दुआ बता दें कि जिससे उन पर कोई मुसीबत न आये । उन्होंने जवाब में बस इतना ही फ़रमाया कि अगर कोई मुसीबत आ जाए तो तुम खुदा को याद कर लेना और अगर खुदा को याद न कर सको तो मुझे याद कर लेना । वे लोग सफ़र पर निकल गए और जैसा उन्हें अंदेशा था, डाक्ओं ने उन्हें घेर लिया । इस दल में एक अमीर व्यक्ति भी था, डाक् जिसे विशेषकर लूटना चाहते थे । डाकुओं से घिर जाने पर दल के लोग ख़ुदा को याद करने लगे पर डाकुओं ने उन्हें लूट लिया, केवल वह अमीर व्यक्ति उन सबकी आखों से ओझल हो गया और लुटने से बच रहा । डाकुओं के जाने के बाद लोगों ने उससे पूछा कि वो कहाँ गायब हो गया था तो उसने बताया कि उसने हजरत अबुल हसन खिरकानी को याद किया और सबकी नजरों से ओझल हो गया । लौटते वक्त यह दल फिर हजरत अबुल हसन खिरकानी से मिला और उन्हें सब घटना बताकर पूछा कि यह क्या माजरा है कि हम लोग ख़ुदा को याद करते रहे पर लुट गए लेकिन यह शख्स बचा रहा ? हजरत अबुल हसन खिरकानी ने फ़रमाया 'तुम लोग अल्लाह को जबान से याद करते हो और अबुल हसन दिल से । बस तुम अल्लाह को दिल से याद करने वाले उसके किसी बंदे को दिल से याद करो तो वह तुम्हारे लिये ख़ुदा को याद करे और तुम महफूज हो जाओ ।'

# न तू कहे न हम कहें

एक रात हजरत अबुल हसन खिरकानी नमाज़ पढ़ रहे थे कि आपको एक दिव्य वाणी सुनाई दी कि "ऐ अबुल हसन ! क्या तू चाहता है कि जो कुछ हम तेरे बारे में जानते हैं, दुनिया पर जाहिर कर दें ताकि दुनियावाले तुझे संगसार करें (पत्थर से मारें) ।" आपने जवाब दिया कि "ऐ अल्लाह ! क्या तू चाहता है कि जो कुछ मैं तेरी रहमत के बारे में जानता हूँ और तेरी कृपा से देखता हूँ, दुनिया पर जाहिर कर दूं ताकि दुनियावाले तेरी इबादत करना छोड़ दें (अर्थात तू इतना कृपालु और दयालु है कि तू अपनी इबादत का भूखा नहीं वरन लोगों पर अहेतुकी कृपा करता है) ।" उत्तर मिला, "ऐ अबुल हसन ! न तू कहे, न हम कहें ।"

# निंदा बुरी बला

एक बार एक पहुँचा हुआ फ़क़ीर किसी राजा के महल में भिक्षा लेने जा पहुँचा । राजमहल के बाहर ही अस्तबल था और वहाँ सईस घोड़ो की लीद साफ़ कर रहा था । कुछ खाने के लिए मांगने पर सईस ने लीद कि तरफ़ ईशारा करते हुए फ़क़ीर से कहा 'वह रहा खाना, खा लो ।' फ़क़ीर ने एक बार उस तरफ़ देखा और यह कहता हुआ वहाँ से चला गया कि 'तेरे राजा के राज्य में यह लीद दिन दोगुनी और रात चौगुनी बढे ।' फ़क़ीर के मुँह से निकली बात सच साबित हुई और उस राजा के राज में उस लीद का ढेर दिन दोगुना और रात चौगुना बढ़ने लगा । हालत यह हुई की लीद का ढेर बढ़ते-बढ़ते पहाड़ सा हो गया । राजा ने पूछा तो मालूम चला कि उस फ़क़ीर के कहने पर लीद का यह पहाड़ बढ़ता जा रहा है । चिंतित हो राजा उस फ़क़ीर के पास हाजिर हुआ तो फ़क़ीर ने कहा, 'राजन, तेरे राज्य में कोई फ़क़ीर भूखा हो और खाने के लिए कुछ मांगे तो क्या उसे लीद खाने के लिए कहना उचित है ? इसकी सजा यही है की अब वह लीद का सारा पहाड़ तुम्हें खाना पड़ेगा । यह तुम्हारे कर्मों का भाग हो गया ।' राजा फ़क़ीर के क़दमों पर गिर उससे इस मुसीबत से छुटकारे के लिए मिन्नत करने लगा । फ़क़ीर को राजा पर दया आ गयी । उसने कहा कि एक ही उपाय है यदि प्रजा तुम्हारी निंदा करे तो तुम्हें इससे छुटकारा मिल सकता है।

लौटते हुए राजा ने एक ब्राहमण की कन्या को जबरन उठा लिया और उसे अपने साथ राजमहल में ले आया । राजा का यह कृत्य देख जनता राजा की निंदा करने लगी । जैसे- जैसे लोग राजा की निंदा करने लगे वह लीद का पहाड़ कम होने लगा । होते-होते वह ढेर समाप्त हो बस एक थाली भर जितना रह गया लेकिन इसके बाद वह थाली भर लीद कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी । चिंतित हो राजा एक बार फिर उस फ़क़ीर की सेवा में हाजिर हुआ और उससे उपाय पूछने लगा । फ़क़ीर ने विचार कर कहा कि राजन तुम्हारे कर्मों का हिस्सा प्रजा ने बाँट लिया है लेकिन एक भड़भूजे ने तुम्हारी निंदा नहीं की है, अगर वह भी तुम्हारी आलोचना करे तो यह थाली भर लीद भी खत्म हो जाएगी।

मालूम करते-करते राजा आखिर उस भड़भूजे के पास भेष बदलकर पहुँच गया और बातों-बातों में राजा की (स्वयं की) निंदा करने लगा लेकिन भड़भूजे ने राजा कि निंदा में कोई रूचि न दिखाई । भड़भूजा खुद एक पहुँचा हुआ फ़क़ीर था, कहने लगा 'राजन, आपकी झूठी निंदा कर उस थाली भर लीद को कौन खाए । वह तो आपके हिस्से की ही है और आपको ही खानी पड़ेगी।'

#### निजात

किसी गाँव के किनारे एक किसान रहा करता था । छोटा सा बंजर खेत जिसमें दिन रात मेहनत करने के बावजूद भी उसे दो वक्त की रोटी जुटाना बेहद मुश्किल होता । किसान अपने हालात से बेहद परेशान और मायूस रहता । एक बार गर्मी के मौसम में थक-हारकर किसान बड़बड़ाने लगा कि, "अब और नहीं सहा जाता । बाबा आदम की गलती की सज़ा मैं क्यों भुगतुं (सेब खाकर जन्नत से धरती पर आने की सज़ा, जो कि ईसाई धारणा के अनुसार सभी इंसानों को भोगनी पड़ रही है) ? अगर कहीं उनकी हड़डियाँ मिल जाए तो उन्हें आग में जला दूं।"

कुछ ऐसा हुआ कि एक फ़रिश्ता जो वहाँ से गुजर रहा था, उसको किसान की यह बात सुनकर उसकी हालत पर रहम आ गया । वह किसान के सामने प्रकट हुआ और बोला कहो तो तुम्हें ऐसी जगह भेज दिया जाए जहां आराम ही आराम हो, कोई काम न करना पड़े, सुख-चैन की जिन्दगी काटो । फ़रिश्ते की बात सुनकर किसान बहुत खुश हुआ और उसने तुरंत हामी भर दी । फ़रिश्ता बोला ठीक है, लेकिन एक शर्त है कि तुम वहाँ किसी के काम में दखल नहीं दोगे । अगर तुमने किसी के काम में दखलंदाजी की तो तुम वापस यहीं आ जाओगे । किसान बोला मुझे क्या गरज कि ऐसी पुर-सुकून जगह पर मैं अपना मुँह खोलूं ? फ़रिश्ते ने चुटकी बजाई और किसान ने तुरंत अपनेआप को एक खुबसूरत फलों से लदे बगीचे में पाया । शीतल, मंद और खुशबूदार हवा चल रही थी । किसान को लगा कि वह जन्नत में आ गया है । ख़ुशी-ख़ुशी उसके दिन कटने लगे ।

कुछ दिनों बाद एक दिन किसान ने देखा कि जश्न का माहौल है और कुछ लोग पकवान बनाने के लिये आग जलाने की कोशिश कर रहें हैं, लेकिन वे सूखी लकड़ियों को छोड़ गीली लकड़ियाँ जला रहे थे और बहुत प्रयास के बाद भी आग जल नहीं पा रही थी। कुछ देर तो किसान शांत रहा लेकिन जब उससे नहीं रहा गया तो वह उनसे बोला कि तुम लोग सूखी लकड़ियों को छोड़ गीली लकड़ियाँ क्यों जला रहे हो ? किसान को बोलते देख उनमें से एक समझदार से दिखने वाले व्यक्ति ने कहा, "लगता है तुम्हें यहाँ आये बहुत दिन हो गए हैं, और तुम्हें अपना घर याद आ रहा है ?" तुरंत ही किसान ने पाया कि वह अपने उसी खेत में वापस लौट आया है। किसान को फ़रिश्ते की बात याद हो आई और वो उनके काम में दखलंदाजी करने पर पछताने लगा और सोचने लगा यदि वह फ़रिश्ता फिर मिल जाए तो उससे अपनी गलती की माफ़ी मांगकर एक बार फिर उसे वहाँ वापस भेजने की विनती करे। मन ही मन किसान फ़रिश्ते से मिन्नतें करने लगा।

किसान की मिन्नतों का असर हुआ कि फ़रिश्ते का दिल पसीज गया और वह किसान के सामने प्रकट हो गया । किसान उससे माफ़ी मांगने लगा और एक बार फिर से उसे वापस वहीं भेजने का आग्रह करने लगा । फ़रिश्ते को किसान पर दया आ गयी और वो

बोला ठीक है, लेकिन याद रखना कि फिर अगर तुमने किसी के काम में दखलंदाजी की तो फिर यही अंजाम होगा । फ़रिश्ते ने फिर चुटकी बजाई और किसान वापस उस जन्नत सरीखे बगीचे में पहुँच गया ।

किसान के दिन फिर से ख़ुशी-ख़ुशी गुजरने लगे। बहुत दिन ऐसे ही गुजर गए। एक दिन किसान ने देखा कि कुछ लोग एक बड़े से बर्तन में मछिलियाँ लेकर आये और एक पेड़ के नीचे लाकर मछिलियों को पेड़ पर चढ़ाने की कोशिश करने लगे। मछिलियाँ फिसलिफ फिसलकर वापस उस बर्तन में गिर जातीं। बहुत कोशिश के बाद भी एक भी मछिली पेड़ पर जरा सा भी नहीं चढ़ पा रही थी। उनकी इस बेवकूफ़ी भरी हरकत को देख किसान बहुत देर तक चुप न रह सका और बोल पड़ा, "भले मानुषों, कभी मछिलियाँ भी पेड़ पर चढ़ती हैं?" उसको टोकता देख उनमें से एक व्यक्ति बोला, "लगता है तुम्हें यहाँ आये बहुत दिन हो गए हैं, और तुम्हें अपना घर याद आ रहा है?" तुरंत किसान ने अपनेआप को वापस अपने खेत में खड़ा पाया।

अब तो किसान अपनी बेवकूफ़ी पर फिर से पछताने लगा और सोचने लगा कि काश उसे एक और मौका मिल जाए ? रो-रोकर गिड़गिड़ाकर किसान एक और मौके की भीख मांगने लगा । फ़रिश्ते को फिर किसान पर रहम आ गया और वह किसान के सामने प्रकट हो गया । किसान उसके कदमों में गिरकर उसे एक और मौका देने की प्रार्थना करने लगा । फ़रिश्ते का दिल पसीज गया और उसने उसी हिदायत के साथ किसान को एक बार फिर से वहीं भेज दिया । किसान ख़ुशी-ख़ुशी और सावधानी से वहाँ रहने लगा । बह्त दिन यूं ही गुजर गए और फिर एक दिन किसान ने देखा कि बगीचे में एक भारी सा तख्त रखा है जिसे चार आदमी उठाने कि कोशिश कर रहे हैं लेकिन वे चारों मिलकर तख्त के एक ही पाये को पकड़कर तख्त को उठाने में लगे थे । बहुत प्रयास के बाद भी वे उस भारी-भरकम तख्त को उठा नहीं पा रहे थे। जिस पाये को वे पकड़ते वह तो ऊपर उठ जाता लेकिन बाकी तीनों पाये जमीन पर ही टिके रहते । उन लोगों को बारी-बारी से तख्त के एक ही पाये को पकड़ तख्त को उठाने की कोशिश में लगातार विफल होते देख किसान मन ही मन उन पर खीजने लगा । जब उससे नहीं रहा गया तो वह बोल उठा, "अजीब बेवकूफ लोग हो तुम ? चारों मिलकर तख्त के एक ही पाये को क्यों पकड़ रहे हो, चारों अलग-अलग पाये को पकड़कर तख्त को एक साथ क्यों नहीं उठा लेते ? उसको यूं दखल देते देख उनमें से एक व्यक्ति बोला, "लगता है तुम्हें यहाँ आये बह्त दिन हो गए हैं, और तुम्हें अपना घर याद आ रहा है ?" फिर जो होना था वही हुआ । किसान फिर से अपने खेत में पह्ंच गया।

इस बार किसान को फ़रिश्ते को याद करने की जरुरत नहीं पड़ी क्योंकि फ़रिश्ता तो सामने ही किसान से मुखातिब था और कह रहा था, "तुम हजरत आदम की एक गलती पर ही उनकी हड्डियां जलाने पर उतारू थे जबिक तुम खुद एक ही गलती को तीन बार दोहरा चुके हो ? तुम्हारा ज्ञान तुम पर इस कदर हावी है कि चेतावनी के बावजूद तुम अपने ज्ञान की आजमाइश करने से न रुके और हर बार जन्नत के बगीचे से बाहर फेंक दिये गए । उम्मीद है कि अब तक तुम्हें समझ आ गया होगा कि तुम्हें अपनी किस्मत से निजात नहीं मिलने वाली ।"

### न्यायविद का फैसला

एक आदमी की कथित तौर पर मृत्यु हो गयी । समझदार और जानकार लोगों ने उस व्यक्ति की देह को जांचा-परखा और फिर उसे मृत घोषित कर दिया । उसे दफनाने के लिए कफन में लपेटकर कब्रिस्तान ले जाए जाने की तैयारी होने लगी । इतने में उस व्यक्ति को होश आगया लेकिन अपने आसपास का माहौल देखकर और खुद को कफ़न में लिपटा देखकर वह घबरा गया और फिर से बेहोश हो गया । लोग उसे कब्रिस्तान ले चले

कब्रिस्तान में उसके लिए कब्र खोदकर रखी गयी थी। जब उसे कब्र के पास रखा गया तो उस व्यक्ति को फिर होश आगया। उसने शव-पेटी का ढक्कन उठाने की कोशिश की तो ढक्कन जरा सा उठ गया। वह व्यक्ति मदद के लिए आवाज लगाने लगा। लेकिन लोगों ने आपस में कहा यह मुमिकन नहीं है क्योंकि सयाने लोगों ने इसकी अच्छी तरह जांच-परखकर बताया है कि यह तो मर चुका है।

लेकिन मैं तो जिन्दा हूँ, वो अपनी पूरी ताकत लगाकर चिल्लाया । फिर पास खड़े एक परिचित न्यायविद से उसने गुहार लगाई । न्यायविद बोला एक मिनट रुको । न्यायविद ने लोगों की ओर मुड़कर उनसे पूछा, 'तुम लोग इस सबके गवाह हो । तुमने सुन लिया कि कथित मृतक को क्या कहना था । तुम पचास लोग अपनी गवाही दो कि सत्य क्या है ?'

'ये तो मर चुका है' वे पचास एक स्वर में बोले ।

'ठीक है, इसे दफ़न कर दो' न्यायविद का फैसला था।

# परमात्मा का चुनाव

किसी शहर में एक सूफी संत रहते थे, निहायत ही शांत एवं सरल और परमात्मा की रजा में राज़ी रहने वाले । हरेक बात में वे परमात्मा का शुक्रिया अदा करते रहते । चाहे कोई भला करे या बुरा सबके हक में दुआ करते रहते और परमात्मा से प्रार्थना करते रहते । लोगों के बीच वे काफ़ी लोकप्रिय थे और लोग उनके पास आते-जाते रहते । उसी शहर में एक दुसरे सूफी संत भी रहते थे । यूँ तो वे भी काफ़ी पहुँचे हुए संत थे लेकिन उनके मन में उन संत की लोकप्रियता के कारण कुछ-कुछ ईष्या का भाव रहता था । एक दिन पहले संत रास्ते पर चले जा रहे थे तभी सामने से वे दूसरे संत आते दिखाई दिए । वे कुछ तेज-तेज कदमों से चलकर आ रहे थे । पास आकर उन्होंने पहले संत की गाल पर एक चपत लगाया । वे कुछ न बोले लेकिन उनके चेहरे पर अफ़सोस के भाव उभर आये । यह देखकर वे दुसरे संत बोले, 'यह अफ़सोस कैसा, क्या तुम्हें मालूम नहीं, यह चपत परमात्मा की इच्छानुसार ही तुम्हें लगाया गया है ।' वे बोले, 'मुझे इस बात का अफ़सोस नहीं है की मुझे चपत लगाया गया, चपत तो मुझे लगनी ही थी, यह तो परमात्मा की इच्छा थी लेकिन अफ़सोस मुझे इस बात का है कि इस काम के लिए परमात्मा ने आपको चुना ।'

### परमात्मा के दर्शन

एक बार पैगम्बर मुहम्मद साहब के वंशज और महान सूफी संत हजरत जाफर सादिक (702-765) से एक शख्स ने परमात्मा के दर्शन करवा देने के लिये विनती की । आपने उसे बहुत समझाया और कहा क्या तुझे मालूम नहीं कि हजरत मूसा को परमात्मा ने 'लनतरानी' अर्थात तू मुझे नहीं देख सकता, कहा था ? लेकिन वह शख्स नहीं माना और बोला यह मिल्लते मुहम्मदी (मुहम्मद का धर्म) है, जहाँ एक शख्स कहता है कि मेरे दिल ने मेरे परवरदिगार को देखा । मजबूर होकर हजरत जाफर सादिक ने लोगों से कहकर उसके हाथ-पाँव बंधवाकर दजला नदी में फेंकवा दिया । पानी ने ऊपर उछाला तो वह फ़रियाद करने लगा । आपने कुछ ध्यान न दिया और वह शख्स कई बार पानी में ऊपर-नीचे हुआ । जब जीवन से निराश होने लगा तो कहने लगा 'या अल्लाह फ़रियाद है ।' आखिर हजरत जाफर सादिक ने लोगों से कह उसे बाहर निकलवाया । जब वह संभला तो आपने पूछा, 'क्या तूने अल्लाह को देखा ?' वह बोला जब तक मैं लोगों को पुकारता रहा तब तक मैं पर्द में रहा लेकिन थक-हारकर जब मैंने अल्लाह को पुकारा तो मेरे दिल में एक सुराख सा खुला । आपने फ़रमाया, 'जब तक तूने दूसरों को पुकारा, तू झूठा था, अब उस सुराख की हिफाजत कर कि तुझे परमात्मा के दर्शन हों ।'

### परमात्मा पर भरोसा

हजरत मूसा ने एक बार परमात्मा से विनती की कि वह उन्हें अपने किसी सच्चे भक्त के दर्शन का अवसर दे । उन्हें एक आवाज सुनाई दी कि अमुक घाटी में जाओ, वहाँ तुम्हें हमारा एक प्रेमी, कृपापात्र और अध्यात्म पथ पर अग्रसर भक्त मिलेगा ।

हजरत मूसा उस स्थान पर गए और वहाँ उन्हें उस ईश्वर भक्त के दर्शन हुए, वह चीथड़ों में लिपटा पड़ा था और उसके चारों ओर तरह-तरह के कीड़े-मकोड़े और कीट-पतंगे मंडरा रहे थे।

हजरत मूसा ने उससे पूछा, 'क्या मैं तुम्हारी कोई सेवा कर सकता हूँ ?' वह बोला, 'हे ईश्वर के दूत ! मैं प्यासा हूँ, मुझे थोड़ा पानी लाकर पिला दो ।'

जब तक हजरत मूसा पानी लेकर लौटे तो उन्होंने पाया कि उस व्यक्ति की मृत्यु हो गयी है । वे उसके कफ़न के लिए किसी कपड़े की व्यवस्था करने चल पड़े तो लौटकर आकर उन्होंने देखा कि उसकी मृत देह को शेर ने खा लिया है ।

हजरत मूसा बहुत आहत हुए और क्रंदन कर कहने लगे, 'हे सर्वशक्तिशाली और सर्वज्ञ ! आप मिटटी से इंसान की रचना करते हैं, कुछ को जन्नत नसीब होता है और कुछ यातनाये सहते हैं, कोई खुश और कोई ग़मों से घिरा रहता है । आपकी लीला को कोई नहीं समझ सकता ।'

तब उन्हें एक नयी अंतर्दृष्टि मिली । कोई उन्हें कह रहा था, "यह व्यक्ति पानी के लिए 'हम' पर भरोसा कर उस भरोसे से पलट गया । इसने मूसा पर, एक मध्यस्थ पर भरोसा किया । यह इसका कसूर था कि 'हम' पर भरोसे से संतुष्ट होने के बाद इसने किसी और से मदद चाही ।"

'तुम्हारा दिल बार-बार चलायमान होकर चीजों की तरफ़ आकर्षित होता रहता है । तुम्हें जानना चाहिए कि कैसे अपने सृष्टा से अपने सम्बन्ध को बनाये रखें ।'

#### परीक्षा

बल्ख शहर में शिकक नाम के एक सूफ़ी संत हुए हैं। एक बार जब वे अपने शिष्यों के साथ बैठे हुए थे तो उन्होंने उनसे संबोधित होते हुए कहा, 'परमात्मा पर अपना भरोसा रख मैं अनेक जगहों की तीर्थयात्रा पर निकल पडा। मेरी जेब में केवल एक छोटा सिक्का था जो तमाम यात्रा पूरी करने के बाद अब भी मेरी जेब में रखा है।'

उपस्थित शिष्यों में से एक अपनी जगह से उठकर शिकक से कहने लगा, 'यदि आपकी जेब में एक सिक्का था, चाहे वह एक छोटा सिक्का ही क्यों न हो, तो आप कैसे कह सकते हैं कि आप एकमात्र परमात्मा पर भरोसा रख यात्रा पर निकल गए थे ?'

यह सुनकर शिकक बोले, 'मेरे पास कहने के लिए कुछ नहीं है। यह जवान दरवेश सही कह रहा है। यदि तुम्हारा भरोसा परमात्मा पर पक्का है तो फिर किसी और सम्बल की आवश्यकता नहीं रह जाती, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो।'

### फ़क़ीर का धन

कहा जाता है कि एक आलिम (विद्वान) ख्वाजा उबैदुल्लाह अल-अहरार (1404-1490, उजबेकिस्तान) की प्रशंसा सुनकर उनसे मिलने के लिये आया । जब वह शहर के द्वार पर पहुंचा तो देखा बहुत सा गल्ला (अनाज) शहर के अंदर जा रहा है । पूछने पर मालूम चला की वह गल्ला हजरत उबैदुल्लाह का है । उसे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इतने बड़े संत और यह सब दुनियादारी और उसने लौटने का सोचा । फिर सोचा कि इतनी दूर आयें हैं तो मिलते ही चलें । जब वह खानकाह (आश्रम) में दाखिल हुआ तो हजरत उबैदुल्लाह घर में अंदर थे । वह वहीं बैठ गया और बैठे-बैठे ही उसे झपकी लग गयी । क्या देखता है कि कियामत बरपा हो गयी है और एक शख्स जिससे उस आलिम ने कुछ कर्जा लिया था और चुका नहीं पाया था, चाहता था कि उसे खींचकर अपने साथ दोजख में ले जाए । तभी वहाँ हजरत उबैदुल्लाह आये और उस शख्स का कर्जा अपने पास से चुकता कर दिया और उस आलिम की मुक्ति कराई । उस आलिम की आँख खुल गयी और देखता है कि हजरत उबैदुल्लाह घर के अंदर से मुस्कुराते हुए पधार रहे हैं । आपने फ़रमाया कि मैं इसीलिए माल रखता हूँ कि तुम जैसे आदमी को कर्ज से मुक्ति दिला सकूं।

इसी तरह एक दफ़ा दो दरवेश बड़ी दूर से उनके दर्शन हेतु आये। जब वे खानकाह पहुँचे तो मालूम चला कि वे बादशाह से मिलने उसके दरबार में गए हैं। वे दोनों सोचने लगे कि यह कैसे फ़क़ीर हैं कि बादशाह के पास जाते हैं, जबिक फ़क़ीरों का अमीरों के दरवाजे पर जाना ठीक नहीं समझा जाता। कुछ ऐसा हुआ कि उसी समय दो चोर जो पकड़ से छूटकर भाग आये थे, सिपाही उन्हें खोजते-खोजते आये और उन दोनों दरवेशों को चोर समझकर पकड़ ले गए। वे दोनों बादशाह के सामने पेश किए गए और शरीअत के अनुसार बादशाह ने उनके दोनों हाथ काट देने का हुक्म दे दिया। हजरत उबैदुल्लाह बादशाह के पास बैठे हुए थे बोले ये दोनों दरवेश मुझसे मिलने आये थे और बादशाह से कहकर उन्हें छुड़ा लिया और उन्हें अपने साथ लिवा लाये। मकान पर पहुँचकर आपने फ़रमाया कि मैं इसीलिए बादशाह के पास गया था कि तुम्हारे हाथ कटने से बचा सकूं।

# फ़र्क ईश्वर भक्त और नास्तिक में

हजरत शम्स तबरेज एक बहुत बड़े सूफी संत हुए हैं, वे मौलाना रूमी के शैख़ थे। वे अपनेआप को किसी पर जाहिर नहीं होने दिया करते थे लेकिन फिर भी कुछ लोग आपके बारे में जानते थे कि आप एक महान संत हैं। यह उनके जीवन की घटना है। एक बार वे कहीं जा रहे थे कि मार्ग में एक जगह एक वृद्ध स्त्री अपने जवान पुत्र के शव के पास बैठी बिलख-बिलख कर रो रही थी और कुछ लोग वहाँ एकत्र हो बुढ़िया को सांत्वना दे रहे थे। बुढ़िया का वही एकमात्र सहारा था और उसकी अकाल मृत्यु ने उसे अनाथ बेसहारा कर दिया था और शोक संतप्त हो वह बुरी तरह विलाप कर रही थी। कुछ लोगों ने हजरत शम्स तबरेज को पहचान लिया और उनसे निवेदन किया कि वे उस मुर्द को जिन्दा कर बुढ़िया के इस घोर दुःख को दूर करें। शम्स तबरेज को दया आ गयी। शम्स तबरेज ने उसके पास जाकर कहा: 'कुम ब इजनिल्लाह!' (अल्लाह के हुक्म से उठ जा) लेकिन मुर्द में कोई हरकत न हुई। यह देखकर उन्होंने शव को ठोकर लगाते हुए कहा: 'कुम ब इजनि', अर्थात 'उठ जा, मेरे हुक्म से।' तुरंत वह लड़का उठ बैठा।

जब यह बात मुल्तान के बादशाह के पास पहुँची तो उन्हें काफ़िर करार दे दिया गया और बादशाह ने अपने दो जल्लादों को हुक्म दिया कि वे संत शम्स तबरेज की खाल उनके जीते-जी ही उतार लाएं । दोनों जल्लाद शम्स तबरेज के पीछे-पीछे फिरते रहे, वे जानते थे कि वे एक महात्मा हैं इसलिए उनकी हिम्मत न पड़ती थी कि वे उनकी इजाज़त बैगेर उन्हें हाथ लगाएं । शम्स तबरेज को जल्लादों की दशा देख उन पर दया आ गई और वे बोले, 'डरो मत, मैं खुद ही तुम्हें अपनी खाल उतार कर दे देता हूँ ।' यह कह उन्होंने अपने सर के बाल पकड़कर कहा, चल छोड़ इसे' और अपनी खाल उतार जल्लादों को सौंप कहीं को चल दिए।

शम्स तबरेज की खाल उतार लिए जाने की खबर सुनकर एक और महात्मा मुल्तान तशरीफ़ लेकर आए । वे एक सुनार की दुकान पर गए और खुदा की अंगुली की अंगूठी बनाने के लिए कहा । सुनार चकराया और उसके पूछने पर महात्मा ने अपने हाथ की अंगुली दिखा दी और बोले यह रही खुदा की अंगुली । सुनार ने कहा, 'भले आदमी, अभी कुछ दिन पहले ही एक खुदा की खाल खींच ली गयी थी । तुम क्यों खुदा बनकर अपनी जान देने पर आमादा हो ?' सुनार की बात का महात्मा पर कोई प्रभाव न पड़ा बल्कि वह तो और जोर-शोर से सबको सुनाते हुए अपनी बात पर अड़ा रहा और अपने हाथ की अंगुली दिखा खुदा की अंगुली की अंगूठी बनाने की जिद करने लगा । बात बढ़ते-बढ़ते बादशाह तक पहुँच गयी । बादशाह ने अपनी जान देने पर उतारू इस महात्मा को अपने पास बुलवाया और कहा देखो तुम्हें जो चाहिए यहाँ से मिल जाएगा पर अपनी जुबान पर यह काफ़िराना बात मत लाओ । महात्मा ने कहा तुम्हारी बात का जवाब देने से पहले मैं

अपने कुछ सवालों का जवाब चाहता हूँ । बादशाह के हामी भरने पर महात्मा ने बादशाह से पूछा कि बताओ ऐसी कौनसी चीज है जिसे तुम मुझे देने का अधिकार रखते हो ?

बादशाह: मैं जो चाहूँ, जमीन, जायदाद, हाथी, घोड़ा, नौकर-चाकर सब जो चाहो तुम्हें दे सकता हूँ ।

महातमा: अच्छा बताओ कि त्म्हारे पैदा होने से पहले ये सब चीजें किसके पास थीं ?

बादशाह: मेरे पिता के पास जो उस समय बादशाह थे और उनसे पहले मेरे दादा के पास जो तब बादशाह थे।

महातमा: जब ये चीजें उनके पास थीं तब वे भी इन्हें अपना कहते होंगे ?

बादशाह: हाँ, इसमें क्या शक है और ऐसे ही मेरे बाद मेरा बेटा इनका मालिक होगा और अपनी कहेगा ।

यह जवाब सुनकर महात्मा ने पूछा यदि ऐसा है तो सोचकर बताओ यह सिलसिला कहाँ से शुरू हुआ और कहाँ खत्म होगा । बादशाह बोला इसमें सोचने समझने की क्या बात है, यह सारा संसार सब चीजें खुदा से ही पैदा हुई और उसी में जाकर खत्म होंगी । खुदा ही सबका मालिक है और इस बात पर मुझे पूरा-पूरा भरोसा है और यही बात सच भी है।

बादशाह का यह जवाब सुनकर महात्मा उसे चेताते हुए बोले, 'तो फिर सावधान हो जाओ और अपनी बात पर कायम रहना । यदि यह सच है तो कुछ दिन पहले तुमने जो हजरत शम्स तबरेज की खाल उतरवा ली थी वह किसकी थी और यह जो मेरी अंगुली है जिसको दिखा मैं खुदा की अंगुली की अंगूठी बनवाना चाहता हूँ, वह किसकी है ?' महात्मा का सवाल सुनकर बादशाह सोच में पड़ गया । उसने अभी माना था की सब चीजें खुदा से ही आयी हैं और सबका मालिक वही है । इस आधार पर तो जो खाल उतरवायी गयी वह भी खुदा की ही थी और महात्मा की अंगुली भी खुदा की ही अंगुली है । बादशाह को लगा कि अब तो उसे खुदा की खाल उतरवा लेने के जुर्म का जवाब देना होगा । उसका सर झुक गया और वह महात्मा के क़दमों पर गिर पड़ा और मुआफ़ी मांगने लगा । उसने महात्मा से प्रार्थना की कि वे उसे मोमिन (ईश्वर भक्त) और काफ़िर (नास्तिक) में फर्क समझाने की कृपा करें ।

महात्मा ने समझाया कि काफ़िर की सबसे बड़ी पहचान ही यह है की वह इन सब चीजों को अपनी बताता है और तेरा-मेरा करता है और परमात्मा को भूलकर उसके बजाय खुद को ही मालिक समझता है । इससे उलट मोमिन सब चीजों को और खुद को भी मालिक का ही समझता है और उसीके अनुरूप आचरण करता है ।

### बंधा कौन

हजरत जुनैद ईराक के बगदाद शहर में एक बहुत बड़े सूफ़ी संत हुए हैं। बहुत से लोग उनसे रूहानी तालीम हासिल करते थे। एक बार वे अपने कुछ शिष्यों के साथ बैठे थे कि इस विषय पर चर्चा चल निकली कि इंसान अपने दिमाग को अनेक विचारों से हटाकर कैसे केंद्रित कर खुदा की ओर लगाए ? इतने में उन्हें सामने से एक व्यक्ति एक गाय को रस्सी से पकड़ जोर-जबरदस्ती से हांकता-खींचता नजर आया। शायद गाय उस व्यक्ति के साथ जाने को तैयार नहीं थी लेकिन वह व्यक्ति अपनी पूरी ताकत से गाय को अपने साथ खींच रहा था।

हजरत जुनैद और उनके शिष्यों की भीड़ देख यह व्यक्ति भी उत्सुकतावश कि वहाँ क्या हो रहा था और क्यों यह भीड़ लगी हुई है, देखने के लिये उनके पास आ गया । इस व्यक्ति के पास आते ही हजरत जुनैद उठे और उन्होंने इस व्यक्ति के हाथ से रस्सी खींच गाय को आजाद कर दिया । रस्सी छूटते ही गाय एक ओर को दौड़ पड़ी और गाय को पकड़ने वह व्यक्ति भी उसके पीछे-पीछे दौड़ पड़ा ।

हजरत जुनैद ने अपने शिष्यों से पूछा, 'कुछ समझे ?' फिर वे बोले, "गाय उस व्यक्ति को खींचकर नहीं ले जा रही थी बल्कि वह व्यक्ति ही गाय को खींचकर ले जा रहा था। गाय को उस व्यक्ति में कोई दिलचस्पी नहीं थी। ठीक इसी तरह हम भी बेकार के विचारों को खींचकर जबरदस्ती अपने दिमाग में भर लेते हैं और उनसे बंध जाते हैं। उस कूड़ा-करकट को हममें कोई दिलचस्पी नहीं होती, यह तो हमारी ही बेकार की दिलचस्पी है कि वे विचार हमारे दिमाग में घर कर लेते हैं। उन्हें खुला छोड़ दो तो वे भी इस गाय की तरह रफूचक्कर हो जाएंगे।"

### बड़ी मछली

एक बार एक जाने-माने, विद्वान् और शिष्ट दार्शनिक का मुल्ला नसीरुद्दीन के गाँव की तरफ़ से गुजरना हुआ । खाने का समय हो गया था और उसे भूख भी लगी थी सो उसने मुल्ला नसीरुद्दीन से पूछा कि क्या यहाँ कोई अच्छा ढाबा है और इस आशा से कि इस बहाने थोड़ी देर मुल्ला नसीरुद्दीन से बातचीत करने का मौका मिल जायेगा, उस दार्शनिक ने मुल्ला नसीरुद्दीन को अपने साथ खाने के लिए निमंत्रित कर लिया । मुल्ला नसीरुद्दीन उसे पास ही के एक अच्छे ढाबे पर ले गए । वहाँ उन लोगों ने पूछा कि आज खाने में क्या ख़ास बना है तो उत्तर मिला मछली, एकदम ताजा मछली । उन्होंने दो मछली लाने को कहा और बातचीत करने में मशगूल हो गए ।

थोड़ी देर में उनके सामने एक बड़ी तश्तरी में दो मछिलयाँ परोस दी गईं लेकिन उनमें से एक थोड़ी छोटी थी और दूसरी उससे कुछ बड़ी । मुल्ला नसीरुद्दीन ने उन दोनों में से बड़ी मछिली उठाई और अपनी तश्तरी में रख ली । दार्शनिक महोदय ने उन्हें गहरी और अविश्वसनीय नजर से देखा और कहने लगे कि उनका यह व्यवहार न केवल बेहद स्वार्थ से भरा है बिल्क किसी भी तरह किसी तर्क, धार्मिक मान्यता या सदाचरण सम्मत नहीं है । मुल्ला नसीरुद्दीन ने सब शांति से सुना और जब दार्शनिक महोदय का वह तत्कालिक भाषण खत्म हुआ और वे चुप हुए तो मुल्ला नसीरुद्दीन ने उनसे पूछा, "अच्छा बताइए, अगर आपने पहले मछिली उठाई होती तो आपने क्या किया होता ?"

दार्शनिक महोदय बोले, "एक संवेदनशील, सुसंस्कृत और ईमानदार व्यक्ति होने के नाते मैंने छोटी मछली अपने लिए ली होती।"

"बिलकुल ठीक, यही तो मैंने आपके लिए किया है" कहते हुए मुल्ला नसीरुद्दीन ने वह छोटी मछली उठाकर दार्शनिक महोदय की तश्तरी में रख दी।

# बहरूपिये का इनाम

एक राजा के दरबार में एक बहरूपिया था जो तरह-तरह के स्वांग रचकर राजा और दरबारियों का मन बहलाया करता था। राजा जो इनाम दे देता उससे उसका गुजर-बसर होता। एक बार वह एक सन्यासी का रूप धरकर राजा के दरबार में आया और एक सन्यासी की तरह राजा को उसने उपदेश भी दिया और दरबारियों के सवालों के जवाब भी दिए। प्रसन्न होकर राजा ने उसे बहुत इनाम दिया लेकिन उसने उसे हाथ तक भी नहीं लगाया और राजा को आशीर्वाद देकर दरबार से चला गया। अगले दिन वह दरबार में हाज़िर हुआ और कोर्निश कर राजा से इनाम मांगने लगा। राजा को बहुत आश्चर्य हुआ और उससे पूछा कि कल तो तुम इतना सब इनाम बिना लिए चले गए थे और आज इनाम मांग रहे हो? बहरूपिये ने उत्तर दिया-'महाराज, कल मैं एक सन्यासी के रूप में था और सन्यासी का चरित्र निभा रहा था। सन्यासी को दुनिया से क्या काम, उसके लिए धन-दौलत की क्या कीमत, सन्यासी के लिए तो वो सब बेकार था। इन्सान जो भी भूमिका निभा रहा हो, जो चरित्र वह अदा कर रहा हो उसकी मर्यादा का पूर्ण रूप से पालन करना चाहिए। आज मैं वही रोजाना वाला बहरूपिया हूँ और आपसे इनाम पाने की ईच्छा रखता हूँ।'

### बहल्ल

यह कहानी बहलुल नामक एक युवक की है जो न जाने कहाँ से घुमते-घामते बगदाद की गिलयों में पहुँच गया था। अपनेआप से पूरी तरह बेखबर, कहीं खोया हुआ लेकिन आखों में गजब की चमक कि उसकी आखों में देखना मुश्किल। घने काले पर उलझे बाल, बेतरतीब सीने तक लम्बी दाढ़ी। बच्चे उसके पीछे पड़े रहते, उसे पागल समझ कभी कुछ कहते कभी कंकड़-पत्थर दे मारते, कभी कोई और चीज उस पर फेंकते लेकिन उसकी जबान से कभी कोई बददुआ न निकलती बिल्क वह उनकी तरफ़ प्रेम और दयापूर्ण दृष्टी से ही देखता। लोगों को लगता जैसे अकेले में वह किसी से बात करता रहता है। कुछ लोग और विशेषकर बच्चे तो उसे प्रेतग्रस्त ही समझने लगे थे। लोग अपनी धन-दौलत, पत्नी और बच्चों से प्यार करते हैं लेकिन बहलुल के लिए परमात्मा ही उसका सब कुछ, उसका प्रियतम था जिसके प्रेम में उसने सब कुछ बिसरा दिया था।

यूँ तो बहलुल कभी विचलित न होता लेकिन एक दिन कुछ बड़े बच्चों ने उसे कुछ अधिक ही तंग किया और डंडों से पीट डाला । घायल, अधमरे से बहलुल ने कुछ न कहा बस उनकी तरफ़ करुणाभरी दृष्टी से देखा और लंगड़ाता, गिरता-पड़ता वह बसरा शहर की ओर निकल पड़ा । शहर पहुँचते-पहुँचते अँधेरा हो आया और शहर का मुख्य दरवाजा बंद हो गया । ठंड होने लगी थी और भूखे-प्यासे बहलुल के पास न खाने को कुछ था न सर्दी से बचने का कोई इंतजाम । उसने इधर-उधर नजर दौड़ाई तो एक दीवार के सहारे कोई कम्बल लपेटे सोता नजर आया । परमात्मा को धन्यवाद देता वह उसकी बगल में जा लेटा । उसकी गहरी नींद कंधे पर किसी नुकीली चीज के चुभने से टूटी । आँख खोल के देखा तो कुछ घुड़सवार सैनिक उसे घेरकर खड़े थे और पूछ रहे थे कि उसने उस आदमी का खून क्यों किया ? बहलुल ने देखा वह एक लाश के पास लेटा था और उसके कपड़ो पर खून लगा था ।

सैनिक उसे पकड़कर अपने अधिकारी के पास ले गए । बहलुल ने अपनी जो कहानी बगदाद से बसरा आने की बताई, उसे उन्होंने उसके द्वारा अपने अपराध को छिपाने के लिए एक चालांकी भरी कहानी समझा । अधिकारी ने हाकिम को बताया और उसने ऐसे खूंखार अपराधी को जल्द से जल्द शहर के बीचोंबीच चौराहे पर सब के सामने फांसी देने का हुक्म सुना दिया । बहलुल को अगले दिन सुबह-सुबह शहर के सबसे बड़े चौराहे पर फांसी पर लटकाने के लिए ले जाया गया । उसके चेहरे पर कोई शिकायत के भाव नहीं थे, वो तो मानों अपने प्रियतम से गुफ्तगू में मशगुल था । फांसी पर चढ़ने से पहले बहलुल ने अपनी आखरी इच्छा व्यक्त की कि उसे प्रार्थना के लिए कुछ क्षण चाहिए । उसने सूर्य की तरफ़ देखकर अपने हाथ प्रार्थना में उठाये, कुछ मौन प्रार्थना की और फिर भीड़ की तरफ़ देख वह मुस्कराया और जल्लाद को कहा कि वह फांसी पर चढ़ने के लिए

तैयार है । जल्लाद ने उसका मुँह कपड़े से ढ़क दिया और गले में फंदा डाल दिया । अधिकारी फंदा कसने और फांसी देने के लिए हाथ उठाने ही वाला था कि भीड़ से एक शख्श जोर से चिल्लाया, 'उसे फांसी मत चढ़ाओ, वह गुनाहगार नहीं है, यह कत्ल मैंने किया है।'

अधिकारी के पूछने पर उसने कहा कि वह सब बात हाकिम के सामने ही बताएगा । दोनों को हाकिम के सामने ले जाया गया । हाकिम एक भला और सच्चा व्यक्ति था । हाकिम के सामने उसने बताया कि वह एक कसाई है और दो दिन पहले तक वह अपना जीवन नितांत ही ईमानदारी से बिता रहा था । दो दिन पहले मृतक उसकी दूकान पर आया और उसका किसी बात पर उससे झगड़ा हो गया और हाथापाई में उसके हाथ में जो मांस काटने वाला छुरा था वह उसको लग गया और उसकी मृत्यु हो गयी । रात में छिपकर उसने लाश को कम्बल में लपेटकर शहर के दरवाजे के बाहर दीवार के सहारे लिटा दिया । हाकिम ने उससे पूछा कि वह अब तक चुप क्यों था तो उसने बताया, 'जब जल्लाद रस्सी खीचनें की तैयारी कर रहा था मुझे लगा कि मैं एक अजदहे के मुँह में गिर रहा हूँ और उसके बड़े-बड़े दांत मेरे शरीर में गढ़कर मुझे उसके ज्वालामुखी सरीखे मुहं में खींच रहे है । वह सब फांसी की वेदना से हजारों गुणा ज्यादा दर्दनाक था । डर के मारे मैं और चुप नहीं रह सका ।'

हाकिम ने बहलुल से वह वहाँ उस लाश के पास तक कैसे पहुंचा था पूछा। बहलुल ने हाकिम को अपनी सारी कहानी कह सुनाई। सब कुछ जानकर हाकिम ने बहलुल को निर्दोष ठहराया और उसने जो तकलीफ़ भोगी थी उसके एवज में अपने साथ जब तक वह चाहे रहने का निमन्त्रण दिया और उस कसाई को फांसी की सज़ा सुनाई। कसाई को फांसी कि सज़ा सुनाये जाने पर बहलुल बोला, 'लेकिन हे श्रीमान! परमात्मा तो शुद्ध प्रेम के अलावा कुछ नहीं है। वह मुआफ़ कर देनेवाले और औरों को प्रेम करनेवालों को प्रेम करता है। वह परम दयालु है और अपनी सृष्टि के साथ करुणा और सहानुभूति रखनेवालों को वह प्यार करता है। इसलिए आपके द्वारा इस व्यक्ति को जब कि उसने अपना गुनाह कुबूल कर लिया है और अपनी करनी पर शर्मिंदा है, मुआफ़ कर देना एक दैवीय कार्य होगा।'

बहलुल की बात सुनकर हाकिम बोला, 'पर क्या यह बात सच नहीं है कि परमात्मा ने हमें अपने प्रतिनिधि के रूप में इसलिए नियुक्त किया है कि हम औरों को अत्याचार से बचाएं और परमात्मा की इच्छा का पालन करें ?'

बहलुल ने कहा, 'हाँ, यह सच है, लेकिन क्या हमें हमेशा परमात्मा कि इच्छा क्या है यह ठीक से मालुम रहता है ? परमात्मा ही सबके हृदय की जाननेवाला है । वही जानता है कि कौन गुनाहगार के भेष में बेगुनाह और बेगुनाह के भेष में गुनाहगार है । परमात्मा ही सर्वज्ञ है ।'

हाकिम के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कराहट आ गयी। वह बोला, 'मैं तुम्हारी बात के सामने नतमस्तक हूँ और यह भी मानता हूँ कि इसे सज़ा देने से मृतक को जीवन नहीं मिल जाएगा। क्योंकि उसने अपना गुनाह क़ुबूल कर लिया है, मैं उसे इस शर्त पर रिहा कर सकता हूँ कि मृतक का परिवार खूंबहा (क़त्ल के बदले धन) लेने पर राजी हो जाय।'

जब सब निपट गया और बहलुल हाकिम के साथ अकेला था, हाकिम ने उससे पूछा कि मैं इस बात पर हैरान हूँ कि तुम्हें फांसी पर चढ़ाये जाते वक्त तुम इतने शांत कैसे थे ? क्या तुम्हें भरोसा था कि तुम फांसी से बच जाओगे ?

हाकिम की आखों में झांकते हुए बहलुल ने कहा, 'मेरी निश्चिंतता की वजह यह नहीं थी कि मैं आश्वस्त था कि मैं फांसी नहीं चढ़ाया जाऊँगा, बल्कि इस कारण थी कि जो भी होगा, परमात्मा की इच्छानुसार और जो उसने मेरे लिए बेहतर सोच रखा होगा। मेरे चेहरे पर संतोष और शान्ति के भाव का यही कारण था।' और यह पूछने पर कि उसने आखरी प्रार्थना में क्या माँगा तो बहलुल बोला, मेरी प्रार्थना उससे कोई मांग नहीं थी। जिन्हें परमात्मा पर भरोसा है, वे जानते हैं कि वही सबका सृष्टा है और वह जानता है कि किसके हक में क्या बेहतर है। हमें यह शोभा नहीं देता कि हम उसके काम में मीन-मेख निकालें या उससे उसकी इच्छा बदलने को कहें। उसके प्रेमी के लिए तो उसकी रजा में राजी रहना ही सर्वोपरि है।'

#### बाज़ार

एक राजा का राज्य बहुत विशाल था । उसने अपने राज्य में एक बहुत बड़ा बाज़ार लगा रखा था । एक बार एक व्यक्ति वहाँ आ पहुँचा । राजा की ओर से उसे बाज़ार का नियम बता दिया गया कि वह बाज़ार में जहाँ चाहे घूम सकता है और जो चाहे ले सकता है। किसी चीज की उसे कोई कीमत नहीं देनी है, वह वस्त् उसकी हो जाएगी, बशर्ते वह सूर्यास्त होने से पहले ही बाज़ार से वापस बाहर लौट आए, वरना बाज़ार के दरवाजे बंद हो जाएंगे और वो भी वहीं कैदी बनकर रह जाएगा । वह ख़ुशी-ख़ुशी बाज़ार में घुस गया । बाज़ार में तरह-तरह की मनलुभावनी, एक से बढ़कर एक ऐशो-आराम की चीजें सजी हुई थीं । उन्हें देखते, उनका आनंद लेते और अपनी मन पसंद चीजें लेते वह आगे बढ़ता रहा । बाज़ार तो मानों खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा था । जैसे-जैसे वह आगे जाता पहले से भी अधिक मनमोहिनी चीजें उसे मिलती जाती जिन्हें वह बड़े चाव से इकठ्ठा कर रहा था । उन सबके बोझ से उसकी चाल भी मंद पड़ गयी थी और दिन भी काफ़ी बीत चुका था । यह देख उसे याद आया कि सूर्यास्त से पहले उसे बाज़ार से बाहर निकलना होगा । वो तेजी से कदम बढ़ाने की कोशिश करता तो कोई समान कहीं गिर जाता और वो उसे उठाने के लिए रुक जाता I सामान के बोझ से वह थक भी रहा था पर उनका मोह उसे उन्हें छोड़ आगे भी नहीं बढ़ने दे रहा था । वही हुआ जिसका अंदेशा था । जब तक वह बाज़ार के दरवाजे तक पहुँचता सूर्यास्त हो गया और वो वहीं कैदी बन रह गया।

### बादशाह का दर्शन

यह कहानी प्रसिद्द सूफी संत फराउद्दीन अतार की है और सूफी साधकों की रूहानी यात्रा का सटीक वर्णन करती है। चिड़ियाओं के एक झुण्ड ने अपने बादशाह की शान और सुंदरता के बारे में बहुत सी कहानियां सुनी थी और वे अपने बादशाह से मिलने को बहुत उत्सुक थीं। लेकिन न तो कभी उन्होंने बादशाह के दर्शन किए थे न ही वे यह जानती थीं कि बादशाह कहाँ रहता है और उस तक कैसे पहुंचा जाए ? उनकी इस उत्सुकता को जान एक बुद्धिमान चिड़िया, हूपू (हुदहुद पक्षी) उनकी मदद करने के लिए उनके पास आया। हूपू ने उन्हें बताया कि उनके बादशाह का नाम सीमुर्ग (जिसका पर्सियन भाषा में अर्थ है तीस चिड़िया, सी अर्थात तीस और मुर्ग अर्थात चिड़िया) है और वह काफ़ नामक पर्वत पर रहता है और यह भी बताया कि वहाँ तक पहुंचना दुर्गम और दुश्वार है। चिड़ियाओं ने हूपू से उनका मार्गदर्शन करने की विनती की।

चिड़ियाओं की विनती स्वीकार कर हूपू ने उनमें से प्रत्येक को उसके स्वभाव और स्तर के अनुरूप तालीम देना शुरू कर दिया । उसने बताया कि उनका बादशाह काफ़ पर्वत के शिखर पर एक महल में रहता है और उस पर्वत तक पहुँचने के लिए उन्हें पांच घाटियाँ और दो रेतीले मैदान पार करने होंगे । आखिरी मैदान पार करने के बाद वे बादशाह के महल में प्रवेश पा सकेंगीं।

हूपू द्वारा यह सब बताये जाने पर कुछ कमजोर इच्छाशक्ति वाली चिड़ियाँ, जो इतनी दुर्गम यात्रा पर जाने की इच्छुक नहीं थी, कुछ न कुछ बहाने बनाकर पीछे हटने लगीं । किसी ने कहा कि उसे फूलों से बहुत प्यार है और वो उन्हें छोड़कर नहीं जा सकती, किसी ने कहा वह दिरया से दूर नहीं जा सकती । हूपू ने उन्हें समझाने की कोशिश की कि वे उन चीजों के बाहरी सौन्दर्य से आकर्षित हो रही हैं, जो हमेशा नहीं रहने वाला । उनका यह प्रेम कुछ दिनों का है और फूलों के मुरझाने के बाद उनका यह प्रेम भी नहीं रहेगा । लेकिन वे न मानी । बची हुई चिड़ियाओं को उत्साहित करने के लिए हूपू ने उन्हें उनकी कहानी सुनायी जो इस सफर को पहले तय कर चुके थे । हूपू से प्रेरणा पा बची हुई चिड़ियाएँ काफ़ पर्वत की यात्रा के लिए तैयार हो गयीं । पहली घाटी की यात्रा की कठिनाइयों ने कुछ चिड़ियाओं की हिम्मत तोड़ दी क्योंकि ये कठिनाइयाँ उनकी कल्पना से भी अधिक थीं । उन्होंने अपना इरादा बदल लिया और कुछ ने तो हूपू की बुद्धिमता और काबिलियत पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया । कुछ ने कहा उसे शैतान ने अपने काबू में कर लिया है और कुछ अपनी ऐशों-आराम की जिन्दगी को याद कर पछताने लगीं।

यह सब देख हूपू ने यही ठीक समझा कि उन्हें पांचो घाटियों और दोनों मैदानो के बारे में बताया जाय ताकि वे सोच-समझकर फैसला करें और आगे बढ़ने का ठीक से निश्चय कर पायें । हूपू ने उन्हें उन्हें पांचो घाटियों और दोनों मैदानो का परिचय देते हुए बताया कि पहली घाटी जिज्ञासा की घाटी है, जहां पर लोग सत्य की खोज में बेचैन रहते हैं, जीवन के उद्धेश्य का सही अर्थ खोजते हैं । केवल एक सच्चा और समर्पित खोजी ही इस घाटी को पार कर दूसरी घाटी में प्रवेश कर सकता है । दूसरी घाटी प्रेम की घाटी है जहां उसके हृदय में अपने प्रियतम बादशाह के प्रति अपार प्रेम और उसके दर्शन की उत्कट इच्छा उत्पन्न होती है। यह घाटी पहली से भी अधिक खतरनाक है क्योंकि यहाँ कदम-कदम पर उसके प्रेम की परीक्षा होती है । लेकिन फिर भी इस उत्कट प्रेम के कारण वह तीसरी घाटी में पह्ँच ही जाता है । यह तीसरी घाटी गूढ़ ज्ञान की घाटी है जहाँ पहंचकर उसका हृदय ज्ञान के प्रकाश से आलोकित हो जाता है और उसके हृदय में अपने प्रियतम की महानता का ज्ञान प्रकाशित हो उठता है । इसके बाद वैराग्य की घाटी में प्रवेश मिलता है, जहां उसका हृदय द्नियावी इच्छाओं से खाली हो जाता है और वह इच्छाओं से ऊपर उठकर इच्छाओं से मुक्त हो जाता है। प्रत्येक घाटी पहली से अधिक खतरनाक है और उसे तरह-तरह से आजमाया जाता है । पांचवी घाटी एकात्मता की घाटी है जहां पह्ंचकर वह जान जाता है कि सभी प्राणियों का सारभूत एक ही है, सभी विचार, सभी अनुभव सभी प्राणी सभी कुछ एक ही उद्गम से उपजा है । इसके बाद आता है हैरत का मैदान (मरुस्थल) जहां वह अपने और औरों के अस्तित्व को भी भूला बैठता है । यहाँ जिस्मानी आँखों के बजाय हृदय से नूर के दर्शन होते हैं । यहाँ पर अक्ल (बुद्धि) का वश नहीं चलता और उसकी हालत 'कुछ नहीं मालूम' वाली होती है । अंत में 'फ़ना' का मैदान आता है जहां उसका अस्तित्व मृत्यु की तरह पूरी तरह फ़ना हो जाता है । उसे अनुभव होता है कि जिस तरह बूँद समुद्र से मिलकर एक हो जाती है, वह अपने प्रियतम में पूरी तरह लय हो गया है और उसके दर्शन पाता है।

हूपू की बातें सुनकर वे चिड़ियाएँ बहुत उतेजित हो जाती हैं और तुरंत आगे की यात्रा के लिए निकल पड़ती हैं। मार्ग में कुछ गर्मी और कुछ जंगली पिक्षयों की शिकार हो जाती हैं और कुछ सुन्दर वन-उपवनों से आकृष्ट हो झुण्ड से बिछुड़ जाती हैं। केवल तीस चिड़ियाएँ ही बादशाह के महल तक पहुंचने में कामयाब हो पाती हैं।

महल के दरवाजे पर द्वारपाल उनसे कठोरता से पेश आता है और उन्हें उनके पिछले कार्य-कलापों की याद दिलाता है जिसे सुनकर वे शर्मसार हो जाती हैं लेकिन वे इस यात्रा में अपने अहं को भूल अपने शरीर व मन से पवित्र हो चुकी थीं अतः वे द्वारपाल के कठोर व्यवहार से क्षुब्ध नहीं होतीं । अंत में बादशाह का खास सेवक आकर उन चिड़ियाओं को बादशाह के निजी कक्ष में ले जाता है । बादशाह के निजी कक्ष में पहुंचकर वे चिड़ियाएँ हैरत से इधर-उधर देखती हैं पर उन्हें बादशाह कहीं नजर नहीं आता । जब वे अपने ऊपर नजर डालती हैं तो पाती हैं कि केवल वे ही, वे तीस चिड़ियाएँ ही, मात्र तीस चिड़िया (सीमुर्ग अर्थात तीस चिड़ियाएँ) वहाँ पर मौजूद हैं । उन्हें अनुभूति होती है कि उनके अपने दर्शन से उन्हें बादशाह का दर्शन प्राप्त हो गया है और बादशाह की खोज में

उन्होंने स्वयं अपने को पा लिया है । उनका बादशाह और कहीं नहीं स्वयं उनके अपने हृदय में विद्यमान है ।

### बाहरी आवरण

एक जिज्ञासु अपने आचार्य से बहुत प्रभावित था और उनके तौर-तरीकों को बारीकी से देखा करता था। उसकी सोच थी कि अगर वह अपने आचार्य के नक्ष्शे-कदम पर चला तो वह भी आचार्य की बुद्धिमता को प्राप्त कर लेगा। जिज्ञासु ने देखा कि वे आचार्य हमेशा श्वेत वस्त्र ही पहना करते थे। उसने भी अपने रंग-बिरंगे वस्त्रों को त्याग आचार्य का अनुसरण करते सफ़ेद वस्त्र पहनना शुरू कर दिया। आहार में वे आचार्य शाकाहारी भोजन ही लिया करते थे। उसने भी अपने भोजन की प्रवृति में परिवर्तन कर शाकाहारी भोजन लेना शुरू कर दिया। इसी तरह उसने देखा कि आचार्य सीधा-सादा और त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। उसने भी ऐशो-आराम के सभी साधन छोड़ त्यागपूर्ण बल्कि कठिनाई भरा जीवन जीना शुरू कर दिया।

कुछ दिनों बाद आचार्य ने इस जिज्ञासु में आये भौतिक परिवर्तन को देखा कि उसने सफ़ेद कपड़े पहनना शरू कर दिया है, शाकाहारी भोजन करने लगा है और कठोर जीवन बिताने लगा है । उन्होंने उससे पूछा कि वह ऐसा क्यों कर रहा है ? उसने तुरंत उत्तर दिया तािक मैं आत्मिक उन्नित की सीढ़ियाँ जल्दी-जल्दी तय कर सकूं । मेरे सफ़ेद कपड़े मेरी खोज में सादगी के परिचायक हैं; शाकाहारी भोजन मेरे शरीर को पवित्रता देता है और कठोर जीवन मुझे प्रेरित करता है कि मैं केवल आत्मिक उन्नित की ओर ध्यान दूं।

उसका उत्तर सुन आचार्य उसे अपने साथ बाहर ले गये जहाँ मैदान में एक घोड़ा घास चर रहा था। आचार्य उसकी ओर ईशारा कर उस जिज्ञासु से बोले, "तुम सारा समय बाहर की ओर ही देखते रहे, जिसका कोई महत्व नहीं है।" फिर वे बोले, "तुम देख रहे हो वह घोड़ा सफ़ेद रंग का है, उसकी त्वचा सफ़ेद रंग की है, वह केवल घास खाता है और अस्तबल में जमीन पर लौट लगाता है। क्या तुम्हें लगता है कि उसका चेहरा किसी संत का चेहरा है या यह किसी दिन आचार्य बन जायेगा ?"

#### बीनने की कमी

लाओत्से एक बहुत बड़े संत और विचारक हुए हैं। यह उन्हीं के द्वारा लिखी कहानी है। वे लिखते हैं कि उन्होंने अपने पूर्वजों से सुना था कि लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व एक ऐसा समय था कि एक स्थान पर दो गाँवों के बीच एक नदी बहती थी। उन दोनों गाँवों को उस चौड़े पाट वाली नदी ने अलग किया हुआ था। हालांकि दोनों ही गाँवों में आबादी थी पर दोनों को एक-दूसरे के अस्तित्व के बारे में जानकारी का एकमात्र स्रोत्र कुते ही थे जो दोनों और रात को भोंकते थे। दोनों गाँवों में से कभी किसी ने दूसरी ओर जाकर दूसरे गाँव और उसमें रहने वाले लोगों के बारे में जानने की कोशिश ही नहीं की। बड़े ही आश्चर्य की बात थी कि वे किस प्रकार के लोग थे कि उस पार क्या है, पता लगाने ही नहीं गए। उनका कहना था-इसकी आवश्कता ही कहाँ थी? वे तो अन्य न जाने कितनी ही बड़ी-बड़ी यात्राएं कर चुके थे। इतनी छोटी-छोटी यात्राओं और उन जगहों को देखने का महत्व ही क्या था? उनका तर्क था कि जिनको हीरे-जवाहरात मिल जाते हैं, वे कंकड़-पत्थर बीनते नहीं फिरते।

अंत में उन गाँव वालों के लिये लाओत्से स्वयं अपनी प्रतिक्रिया लिखते हैं कि "यदि हीरे-जवाहरात न मिलें तो वह जो बीनने की कमी रह जाती है, वह कंकड़-पत्थर भी बिनवा देती है।"

## बीबी की तुनकमिजाजी

हजरत अबुल हसन खिरकानी की धर्मपत्नी बहुत तुनक मिजाज थीं । एक बार जब वे जंगल में लकड़ियाँ लाने गए हुए थे, किसी संत ने उनके घर आकर पूछा कि हजरत शैख़ अबुल हसन खिरकानी कहाँ हैं ? इस पर उनकी पूज्य धर्मपत्नी ने बहुत झुंझलाकर जवाब दिया कि 'तू ऐसे जिन्दीक (नास्तिक) और बुरे आदमी को शैख़ कहता है ? मैं किसी शैख़ को नहीं जानती । हाँ, मेरा शौहर जरूर लकड़ियाँ लाने जंगल गया है ।' वे साहब हजरत अबुल हसन खिरकानी को खोजते जंगल पहुँचे तो देखते हैं कि वे लकड़ियों का गठ्ठर एक शेर पर लादे चले आ रहे हैं । उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि घर पर तो ये हालात हैं और यहाँ ये शेर पर लकड़ियाँ लादे चले आ रहे हैं । उसने पूछा कि यह क्या माजरा है तो आपने फ़रमाया 'अगर मैं घर में अपनी बीबी की तुनक मिजाजी न सहूँ तो यह शेर मेरा बोझ क्यों सहे ?'

#### भविष्यदृष्टा

एक बादशाह को सितारों की चाल का अध्ययन करने का बड़ा शौक था। अक्सर वह सितारों की चाल को पढता रहता और गणना करता रहता और अक्सर उसका कथन सही निकलता। एक बार उसने सितारों की चाल का अध्ययन स्वयं अपने भविष्य को जानने के लिए किया। उसकी गणना में आया कि अमुक दिन उस पर कोई भारी प्राकृतिक विपदा आने वाली है। उस प्राकृतिक विपदा की कल्पना कर बादशाह ने अपने लिए एक ऐसा महल बनवाया जिस पर आंधी-तूफ़ान इत्यादि किसी प्राकृतिक विपदा का प्रभाव न हो और वह महल सब तरह से सुरक्षित हो और उसमें रहने लगा।

निर्धारित दिन आने से कुछेक दिन पहले जब बादशाह अपने इस नए महल में बैठा था तो उसे कहीं किसी कोने से प्रकाश आता दिखाई दिया । यह सोचकर कि महल उस जगह से सुरक्षित नहीं है, उसने उस एकमात्र खुली जगह को भी अच्छी तरह बंद करवा दिया और अपने ही हाथों वह उस महल में एक कैदी की तरह हो गया ।

और फिर जो होना था हुआ । निर्धारित दिन बादशाह उस एकमात्र खुली जगह के बंद होने के कारण उस बंद महल में दम घुटने के कारण मर गया ।

### भाग्य और पुरुषार्थ

एक पंडितजी का भाग्य पर भरोसा रखने में बड़ा ही विश्वास था। हर बात को भाग्य भरोसे टालना उनकी आदत थी। एक बार उनकी अंगुली पर अपनी ही विष्टा लग गई। अपने वस्त्रों से दूर रख, अंगुली को सीधा ताने, घृणासिहत वे एक बढ़ई के पास पहुँच गए और बोले 'मेरी इस अंगुली में विष्टा लग गई है, इस अंगुली को ही काट दो।' उसने पंडितजी को बहुत समझाया कि अंगुली काटने से बहुत दर्द होगा, बेहतर है वे अंगुली साफ़ कर लें, पर पंडितजी अपनी जिद पर अड़े रहे और कहने लगे 'भाग्य में जो होगा, देखा जाएगा।' बढ़ई ने कहा भी कि पंडितजी अपने ही हाथों अपने पैर पर कुल्हाड़ी क्यों चलवाते हो, जानते-बूझते अंगुली कटवा रहे हो, इसमें भाग्य क्या करेगा। कटी अंगुली दुबारा नहीं जुड़ सकती और जब पीड़ा होगी तो बिलबिला उठोगे। अपनी ही विष्टा लग जाने से इतनी घृणा कि अंगुली कटवाने पर आमादा हो गए। इसे अपनी मेहनत से साफ़ कर लो, यही पवित्र आदमी का कर्तव्य है। पर पंडितजी बोले तुम तो अंगुली काट दो, बाकी जो होना है सो देखा जाएगा।

बर्व्ह एक समझदार आदमी था। सोचा अंगुली काट देने से तो गज़ब हो जाएगा। जरा सी चोट से ही पंडितजी की अक्ल ठिकाने आ जाएगी। सो उसने उनकी अंगुली पर बसौले की उलटी तरफ़ से हलकी सी चोट की। चोट लगते ही पंडितजी दर्द से बिलबिला उठे और बिना आव-ताव देखे झट से अंगुली को मुँह में डाल लिया। यह देख बर्व्ह जोर-जोर से हंसने लगा और बोला, 'पंडितजी, कहाँ गई आपकी पवित्रता और कहाँ आड़े आया भाग्य ?'

इसी सन्दर्भ में किसी व्यक्ति ने सूफी संत ठाकुर रामसिंहजी से पुछा कि भाग्य भरोसे बैठे रहने और परमात्मा का भरोसा रख कर्म करने में क्या अंतर है ? उन्होंने फरमाया उतना ही जितना बन्दर के बच्चे और बिल्ली के बच्चे में फर्क है । बन्दर का बच्चा अपनी माँ से चिपका रहता है और उसे दृढ़ता से पकड़े रहता है, फिर चाहे उसकी माँ कितनी भी उछल-कूद करे, वो तो बस माँ से चिपका रहता है, खुद कुछ नहीं करता । दूसरी ओर बिल्ली का बच्चा अपनी माँ से नहीं चिपकता, वो तो अपनी माँ के भरोसे रहता है । अपनी माँ के भरोसे वो इधर-उधर घूमता रहता है, सर्वथा चिन्ताहीन रहता है । जैसे ही उसे माँ की जरुरत होती है, म्याऊं-म्याऊं करता है और माँ खुद उसे अपने मुँह में दबाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाती है और उसकी जरूरतों को पूरा करती है । बिल्ली का बच्चा भाग्य भरोसे नहीं बैठा रहता, परमात्मा ने उसे भाग्य पर भरोसा रखने का विवेक ही नहीं दिया । वह भाग्य को क्या जाने ? वह तो अपनी माँ को जानता है और उसी के भरोसे रहता है ।

यही फर्क है भाग्य भरोसे बैठे रहने वाले में और परमात्मा के भरोसे रहने वाले ईश्वर भक्त में । परमात्मा के भरोसे रहने वाला व्यक्ति अपने कर्तव्य को पूर्ण निष्ठां और अपनी पूरी ताकत और समझ से निभाता है और ईश्वर पर भरोसा रखता है जबिक भाग्य भरोसे रहने वाला अक्सर अपना कर्तव्य निभाने में कोताही करता पाया जाता है । विश्वासी साधक के लिए भाग्य नाम की कोई चीज नहीं होती । यह विश्वास, यह भाव परमात्मा के पूर्ण शरणागत होने का है । बिल्ली के बच्चे की तरह उसे तो परमात्मा पर ही पूर्ण भरोसा होता है ।

#### भिक्षापात्र

नागार्जुन एक फ़क़ीर थे और अत्यंत लोकप्रिय भी । एक बार एक रानी ने उन्हें अपने महल में आमंत्रित किया और उनकी बड़ी आवभगत के बाद उनसे एक अनुग्रह की विनती की । रानी ने कहा कि वह उनसे उनका भिक्षापात्र माँगना चाहती हैं क्योंकि वह उनके पास वर्षों से है और उनकी साधना का साथी है अतः रानी उस भिक्षापात्र को अपने पूजा के कक्षा में रखना चाहती है । नागार्जुन ने रानी की विनती को सहर्ष स्वीकार कर वह भिक्षापात्र उन्हें दे दिया । रानी भिक्षापात्र पाकर अत्यंत प्रसन्न थी । भिक्षापात्र लेकर वह महल के भीतर गयी और थोड़ी ही देर में एक हीरे जवाहरात जड़ा सोने का भिक्षापात्र लेकर आई और नागार्जुन को भेंट किया । कोई साधारण भिक्षुक तो शायद सोने के भिक्षापात्र को लेने से इंकार भी करता पर नागार्जुन के लिये सोने के भिक्षापात्र और काठ के भिक्षापात्र में कोई फर्क नहीं था । नागार्जुन राग-विराग से परे वीतरागी (अनुराग और वैराग्य से ऊपर, उदासीन) फ़क़ीर थे । वे वह भिक्षापात्र ले अपनी राह चल दिये ।

नागार्जुन के हाथ में इतना कीमती भिक्षापात्र देख एक चोर भी उनके पीछे लग लिया। वे अपनी कुटिया में पहुँच गए तो चोर उनके सोने का इन्तजार करने लगा। नागार्जुन ने चोर को देख लिया और वे उसकी मंशा भी भांप चुके थे। उन्होंने उस भिक्षापात्र को कुटिया के खुले दरवाजे से चोर के पास बाहर फेंक दिया। चोर नागार्जुन के इस अप्रत्याशित व्यवहार से स्तब्ध था। उसने सोचा भी नहीं था कि इतने बहुमूल्य भिक्षापात्र को कोई इतनी आसानी से त्याग सकता है? चोर ने सोचा यह कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता, अवश्य इसके पास कुछ है जो इससे भी अधिक कीमती है। वह कुटिया के भीतर नागार्जुन के सामने हाजिर हुआ और उनसे उनके पाँव छूने की इज़ाज़त मांगी। जैसे ही चोर ने उनके पाँव छूए उसके इदय में एक दिव्य प्रकाश की आभा कौंध उठी। चोर ने उनसे पूछा कि मुझे आप जैसा बनने में कितने जीवन लगेंगे? क्या आप जैसा बनने के लिये मुझे चोरी करना छोड़ना पड़ेगा?

नागार्जुन मुस्कुराये और बोले तुम आज, अभी, इसी वक्त, मुझ जैसे बन सकते हो, बिना कुछ छोड़े । चोर उनकी बात सुन चकराया और बोला मैं वर्षों से चोरी कर रहा हूँ और मेरे मन में इतना अन्धकार है, यह क्या एक पल में हो सकता है ? नागार्जुन बोले कितना भी घनघोर अँधेरा कक्ष हो, एक दीपक के प्रकाशित होते ही क्या वह अँधेरा वहाँ रह सकता है ? चोर ने पूछा तो फिर मुझे क्या करना होगा ? वे बोले तुम कुछ भी करो, कहीं भी जाओ, कोई रोक-टोक नहीं, तुम्हें बस निरंतर अपने श्वांस पर निगाह रखनी होगी, चैतन्य होकर श्वांस लेनी होगी (सूफ़ी साधना पद्धति में इस सिद्धांत को 'होश दर दम' के नाम से अपनाया गया है) । चोर ने कहा मैं कितने ही संत-महात्माओं के पास गया लेकिन उन सबने मुझसे पहले चोरी छोड़ने के लिये कहा । नागर्जुन बोले वे संत-महात्मा नहीं बल्कि वे भी चोर

ही होंगे क्योंकि संत-महातमा कुछ नहीं जानते, वे तो बस चैतन्य होकर जीते हैं, तुम भी चैतन्य होकर जीओ ।

चोर ने कहा यह तो बहुत आसान है, मुझे कुछ नहीं करना बस चैतन्य होकर अपने श्वांस पर निगाह रखनी है। वह ख़ुशी-ख़ुशी चला गया। लेकिन पंद्रह दिन बाद वह फिर फ़क़ीर नागार्जुन के सामने खड़ा था और एकदम नये रूप में। वह बोला अपने श्वांस पर निगाह रखते मैं ऐसे एकदम निशब्द, सचेत और सावधान हो जाता हूँ कि मैं चोरी नहीं कर पाता और चोरी करूँ तो श्वांस पर ध्यान नहीं दे पाता। मैं क्या करूँ मैं इस आनंद से वंचित भी नहीं होना चाहता जो मुझे अपने श्वांस पर निगाह रखने से मिलता है। जब मैं इस आनंद में खो जाता हूँ तो मेरे सामने किसी चीज की कोई कीमत नहीं रहती, हीरे जवाराहत भी कंकड़-पत्थर लगते हैं। नागार्जुन बोले यह तुम पर है कि तुम क्या चाहते हो? चोर बोला तो फिर आप मुझे दीक्षित करने की कृपा करें।

नागार्जुन मुस्कुराए और बोले, "वह तो मैं तुम्हें पहले ही कर चुका हूँ।"

### भोर होने की पहचान

एक बार एक आचार्य ने अपने शिष्यों से पूछा कि क्या तुम ठीक-ठीक से बता सकते हो कि रात कब खत्म होती है और दिन कब शुरू होता है यानि भोर होने का सही समय कब माना जा सकता है ?

उपस्थित शिष्यों में से एक ने कहा जब कुछ-कुछ दिखाई देने लग जाए तब भोर का उदय होना माना जा सकता है । आचार्य बोले कुछ-कुछ तो रात के अँधेरे में भी देखा जा सकता है, इसलिए कुछ-कुछ दिखना भोर होने का सही समय होने का प्रमाण नहीं है ।

एक अन्य शिष्य बोला, "जब भेड़ और कुत्ते को देखकर ठीक से पहचाना जा सके ।" आचार्य ने फ़रमाया यह भी संतोषजनक उत्तर नहीं है, भेड़ और कुत्ते को उनकी गंध से भी पहचाना जा सकता है ।

एक और शिष्य ने कहा, "जब कुछ दूरी से बरगद और पीपल के पेड़ को पहचाना जा सके ।" लेकिन आचार्य इस उत्तर से भी संतुष्ट नहीं दिखे तो शिष्यों ने उनसे कहा कि आप ही कृपा कर बताएं कि रात खत्म हो गई और सुबह हो गई है कैसे जाना जा सकता है ?

"जब कोई अजनबी सामने आए और हमें लगे कि हमारा अपना भाई ही सामने खड़ा है, तब समझो कि रात खत्म हो गई और सुबह हो गई है", आचार्य का उत्तर था।

#### मन्त्र

किसी शहर में एक बहुत बड़ा जादूगर रहता था । तरह-तरह के जादू दिखाकर लोगों का मनोरंजन करता । उसके जादू के खेल को बहुत लोग पसंद करते और इस तरह उसने बहुत सा धन इकठ्ठा कर लिया । जैसे-जैसे उसका बुढ़ापा नजदीक आ रहा था, सुरक्षा की दृष्टी से उसने उस धन को सोने के सिक्कों में बदलवा लिया और उन सिक्कों को एक थैली में भरकर रख लिया ।

जादूगर का एक बेटा था, जिसे वह जादू सिखाना चाहता था पर वह लड़का जादूगरी नहीं सीख पाया । जब जादूगर का अंत नजदीक आया तो उसने अपने बेटे को कहा, 'बेटे मैं तुम्हें जादू तो नहीं सिखा पाया, पर फिर भी तुम्हारे लिए मैं इस थैले में बहुत धन छोड़कर जा रहा हूँ । हालाँकि यह तुम्हारे लिए बहुत है फिर भी अगर कभी यह थैली खाली हो जाय तो मैं तुम्हें एक चार शब्दों वाला मन्त्र बताता हूँ, उसे पढना और इस थैली में तुम्हें धन मिल जाएगा ।' यह कहकर उसने अपने बेटे को मन्त्र बताया और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गयी ।

जाद्गर का कमाया हुआ धन बहुत था। बेटे के दोनों हाथों से खर्च करने पर भी वह कई सालों तक खत्म न हुआ। लेकिन कितना भी धन हो, बैठे-बैठे खर्च करने से तो कुआं भी खाली हो जाता है और ऐसा ही हुआ, थैली खाली हो गई। इधर इतने वर्ष बीत जाने से वह लड़का अपने पिता के बताए हुए मन्त्र को भी भूल गया था। उसने किसी से चार शब्दों वाले मन्त्र के बारे में पूछा तो उसने बताया, 'ईश्वर मेरी मदद करो।' लड़के ने यह मन्त्र पढ़कर थैली में हाथ डाला लेकिन वह तो खाली ही निकली। किसी और से पूछने पर उसने कहा शायद वह मन्त्र यह हो कि, 'ईश्वर आप महान हो।' लड़के ने यह मन्त्र भी पढ़ा और कई बार पढ़ा लेकिन कोई नतीजा न निकला। इस तरह लड़के ने कई मन्त्र आजमाए पर कोई नतीजा न निकला। थक-हारकर लड़का निराश हो बैठ गया।

एक दिन उसके दरवाजे पर एक भिखारी आया और लड़के से कुछ मांगने लगा। लड़के ने घर में जो कुछ बचा था उसमें से कुछ उस भिखारी को दिया तो भिखारी ने हाथ उठाकर प्रार्थना की, 'हे ईश्वर! आपका धन्यवाद' और जैसे चमत्कार हो गया। सुने हुए शब्दों को एक बार फिर से सुनने से लड़के को तुरंत मन्त्र याद आगया। यही तो वह मन्त्र था जो जादूगर ने अपने बेटे को बताया था। लड़के ने यह मन्त्र पढ़ा तो थैली के मोटे तले में एक और गुप्त तला नजर आया जिसमें अभी काफ़ी सोने के सिक्के बचे थे। लड़का भी अब तक परिपक्व हो चुका था। इसके बाद उसने अपना जीवन समझदारी और लोगों की मदद करते और ईश्वर को धन्यवाद देते बिताई।

## मस्त और मुएज़्ज़िन

किसी शहर में एक मुएज्ज़िन (खतीब-धर्मीपदेश करने वाला-मस्जिद की मीनार से लोगों को नमाज़ के लिए आवाज लगाने वाला) मस्जिद की मीनार पर चढ़कर लोगों को नमाज़ पढ़ने की दावत दे रहा था । तभी वहाँ से एक मस्त फ़क़ीर गुजर रहा था । मुएज़्ज़िन को मस्जिद की मीनार से आवाज़ देते देख वह वहीं रुक गया । किसी ने उससे पूछा, 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?' वो बोला, 'देखो मस्जिद की मीनार पर चढ़कर वह व्यक्ति खाली बर्तन बजा रहा है, उसके अन्दर कुछ नहीं है । जब तुम खुदा के 99 नाम लेते हो, तब इसी तरह खाली बर्तन बजाते हो । क्या परमात्मा को तुम उसका नाम लेने से समझ सकते हो ? क्योंकि तुम परमात्मा के सारभूत को शब्दों में बयान नहीं कर सकते, इसलिए बेहतर है कि चुप रहो ।'

## महमूद गजनवी और फलियाँ

एक बार सुल्तान महमूद गजनवी शिकार के लिए निकला और कुछ ऐसा हुआ कि वो अपने साथियों से बिछड़ गया । जंगल में इधर-उधर नज़र घूमाते उसे एक जगह से कुछ धुंआ उठता दिखाई दिया । अपने घोड़े पर सवार वह उस तरफ़ चल दिया । पास जाकर देखा तो एक छोटी सी झोपड़ी के बाहर एक वृद्ध स्त्री मिट्टी का चूल्हा जलाकर उसपर एक बर्तन में खाने के लिए कुछ पका रही थी ।

सुल्तान महमूद ने कहा, 'आज तुम्हारे दरवाजे पर एक राजसी अतिथि, सुल्तान महमूद उपस्थित है। त्म खाने के लिए क्या पका रही हो ?'

वृद्धा ने कहा, 'मैं फलियों को उबालकर उनका सूप बना रही हूँ।'

सुल्तान ने पूछा, 'क्या उसमें से कुछ सूप तुम मुझे नहीं दोगी ?'

वृद्धा ने कहा, 'नहीं, यह केवल मेरे लिए हैं । तुम्हारा सम्पूर्ण साम्राज्य भी इन फिलयों के सामने कुछ नहीं है । तुम्हें मेरी फिलयों की चाहत है जबिक मुझे तुमसे कुछ भी नहीं चाहिए । मेरी फिलयाँ जो कुछ तुम्हारे पास है उससे कई गुणा ज्यादा कीमती हैं । तुम अपने शत्रुओं को देखों जो हर वक्त जो कुछ तुम्हारे पास है उस पर आँख गड़ाए रहते हैं । मैं इन सब से परे और स्वतंत्र हूँ, मेरी फिलयों पर एकमात्र मेरा अधिकार है ।'

शातिशाली महमूद गजनवी ने फलियों की निर्द्वन्द स्वामिनी उस वृद्धा की तरफ़ देखा और जिस पर हमेशा शत्रुओं की नजर गड़ी रहती है अपने उस साम्राज्य के बारे में सोचा और निरुत्तर होकर रह गया।

### माँ की सेवा

माँ की सेवा का रूहानियत में क्या स्थान है यह हजरत बयाजिद के साथ घटित इस घटना से पता चलता है। माँ की सेवा के बारे में उनका कहना है, "जिस काम को मैंने सबसे बाद का समझा था वह सबसे अव्वल निकला। और वह था अपनी पूज्य माँ की प्रसन्नता हासिल करना, जिससे मुझे वह हासिल हुआ जो अब तक मैं स्वयं पर काबू पाने के अनेक प्रयत्न और सेवा करके पाना चाहता था।" वे मदीना की यात्रा पर गए हुए थे और जब वे वहाँ से वापस हुए तो उनके दिल में अपनी पूज्य माँ के दर्शन का ख्याल आया। सुबह की नमाज़ के वक्त वे घर पहुँचे, कान लगाकर सुना तो माँ वुजू कर रही थीं और यह दुआ मांग रही थीं 'ऐ अल्लाह! तू मेरे मुसाफिर (बेटे-बयाजीद) को आराम से रखना और बुजुर्गों को उससे राजी रखना और नेक बदला उसे देना।'

हजरत बयाजिद की माँ ने एक रात उनसे पानी माँगा । वे जग में से पानी लाने के लिये बढ़े लेकिन जग में पानी नहीं था, वह खाली था । उन्होंने घड़े को देखा, वह भी खाली था । वे घड़े को लेकर नदी पर गए और पानी भर कर लाये लेकिन जब तक वे वापस आए माँ सो चुकी थीं । वह सर्द रात थी, वे पानी भरा जग अपने हाथ में लेकर माँ के पास खड़े रहे । थोड़ी देर में माँ जागीं और पानी पीकर हजरत बयाजिद को आशीर्वाद दिया । फिर उन्होंने देखा कि वह जग हजरत बयाजिद के हाथ में जम गया है तो उन्होंने आश्चर्य से पूछा कि उन्होंने जग को एक तरफ़ क्यों नहीं रख दिया ? हजरत बयाजिद ने कहा उन्हें डर था कि न जाने कब माँ की नींद खुल जाए और वे पानी लेकर हाजिर न हों । माँ तब 'दरवाजा आधा खुला रखना' कहकर सो गयीं । हजरत बयाजिद तकरीबन भोर होने तक निगरानी करते रहे कि दरवाजा ठीक से आधा खुला रहे, जैसा कि माँ ने कहा था और उनकी अवज्ञा न हो । हजरत बयाजिद फरमाते हैं कि भोर के वक्त मेरे हृदय ने वह पाया जिसकी उसे मुद्दत से तलाश थी।

## मुदीं से सीख

किसी आचार्य से एक जिज्ञासु ने विनती की कि वे उसे कोई ऐसा सीधा और सरल मार्ग बताने की कृपा करें जिससे वह परमात्मा की प्रसन्नता हासिल कर सके । आचार्य कुछ देर मौन रहकर बोले पहले तुम्हें मेरा एक काम करना होगा फिर मैं तुम्हें वह मार्ग बताऊंगा । वह तुरंत सहमत हो गया तो आचार्य ने कहा आज रात तुम्हें श्मशान में मुर्दों के बीच बितानी होगी और रात भर उन्हें भला-बुरा कहना होगा । उसने आचार्य के कहे अनुसार वह रात श्मशान में बिताई और मुर्दों को भला-बुरा कहता रहा । सुबह होने पर वह आचार्य के पास लौट आया । आचार्य ने उससे पूछा कि क्या उन मुर्दों ने तुम्हें कोई उत्तर दिया ? उसने कहा, 'नहीं' । आचार्य बोले तो फिर आज रात और तुम्हें उनके बीच गुजारनी होगी और आज रात तुम्हें उनकी तरह-तरह से प्रशंसा करनी होगी । उसने वैसा ही किया और सुबह आचार्य को लौटकर उनके पूछने पर बताया कि इस बार भी उन मुर्दों ने कोई जवाब नहीं दिया ।

आचार्य बोले यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है । उन मुर्दों की तरह किसी की निंदा या प्रशंसा की परवाह किये बिना अपनी राह चले चलो । यही परमात्मा की प्रसन्नता हासिल करने का सबसे सीधा और सरल मार्ग है ।

# मुसाफिर

किसी शहर में एक संत रहते थे । उनका जीवन बड़ा ही सादा और सरल था । वे शहर के बाहर फूस की एक छोटी सी कुटिया में रहते थे । जो कुछ सहज ही मिल जाता उससे अपना जीवन यापन करते और परमात्मा के भजन-ध्यान में अपना समय लगाते । एक बार एक विदेशी पर्यटक उनकी प्रसिद्धि सुनकर उनके दर्शन करने आया । उन्हें देख उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि कुटिया में इक्का-दुक्का सामान छोड़ कुछ न था । उसने संत से पूछा आपका सामान कहाँ है ?

संत ने भी प्रत्युतर में पूछा कि तुम्हारा सामान कहाँ है ? वह बोला लेकिन मैं तो मुसाफिर हूँ, कुछ ही दिनों के लिए यहाँ आया हूँ। संत हँसे और बोले, "मैं भी तो यहाँ मुसाफिर ही हूँ।"

## मैं सहता हूँ, तू भी सह

एक बार एक बादशाह अपने मंत्रियों और दरबारियों के साथ जहाज पर यात्रा कर रहा था, साथ में कुछ मसखरे भी थे जो उन लोगों का मनोरंजन कर रहे थे। उसी जहाज पर हजरत इब्राहीम बिन महमूद भी सवार थे। वे देखने में बिलकुल सीधे-सादे किसी अनपढ़ व्यक्ति जैसे लग रहे थे, ऊपर से साधारण सी वेश-भूषा और घुटा हुआ सर। कुछ देर बाद बादशाह को न जाने क्या सूझी कि उसने हजरत इब्राहीम बिन महमूद को अपने मनोरंजन का पात्र बनाना चाहा।

बादशाह की आजा अनुसार मसखरे और दरबारी बारी-बारी से हजरत इब्राहीम बिन महमूद के पास जाते और किसी न किसी बहाने उनके सर पर टोला मारते अर्थात जैसे मटके को अंगुली से चोट मारकर परखा जाता है कि मटका पक्का है या नहीं, वैसा ही वे उनके साथ करने लगे। जब कुछ देर यह क्रम चलता रहा तो हजरत इब्राहीम बिन महमूद को गैबी आवाज (दैवीय वाणी) सुनाई दी कि, 'तू कहे तो इस जहाज को डुबा दूं ?' हजरत इब्राहीम बिन महमूद बोले, 'नहीं'। लेकिन यह सिलसिला तो चलता रहा। हर बार कोई उनके सर पर टोला मारता और बादशाह और उसके साथी उनका मजाक उड़ाते। कुछ देर बाद फिर हजरत इब्राहीम बिन महमूद को गैबी आवाज सुनाई दी कि, 'तू कहे तो इस जहाज को डुबा दूं ?' हजरत इब्राहीम बिन महमूद ने फिर कहा नहीं।

कुछ देर और यह क्रम चला तो हजरत इब्राहीम बिन महमूद को फिर गैबी आवाज सुनाई दी, 'अब मैं और नहीं सह सकता ।' इस पर हजरत इब्राहीम बिन महमूद बोले, 'मैं सहता हूँ, तू भी सह और नहीं सह सकता तो सबको मेरे जैसा बना दे।'

संत की दुआ और ईश्वर कृपा का चमत्कार था कि जहाज में सवार उन सभी लोगों का हृदय परिवर्तन हो गया । सबने हजरत इब्राहीम बिन महमूद से माफ़ी मांगी और नेक इंसान बनने का वादा कर उनके शिष्य बन गए ।

# यह भी गुजर जाएगा

बहुत समय पहले की बात है। एक सूफ़ी दरवेश घूमता-फिरता रेगिस्तान को पार कर एक गाँव में पहुंचा। छोटा सा गाँव, रेगिस्तान के किनारे, जिसमें थोड़ी-बहुत खेती होती और लोग ज्यादातर अपने पशुधन पर ही निर्भर करते। रात गुजारने के लिए वो किसी आश्रय की खोज में था कि लोगों से पूछने पर मालूम चला कि शाकिर (अर्थात हर वक्त परमात्मा का शुक्रिया अदा करते रहने वाला) नाम का व्यक्ति गाँव का सबसे अमीर व्यक्ति था और उसे उसके यहाँ रुकने की जगह मिल जाएगी। किसी ने यह भी कहा कि शाकिर पास ही के गाँव के सबसे अमीर व्यक्ति हद्दाद से भी कहीं ज्यादा अमीर है और उसके पास हजारों पशु हैं। दरवेश शाकिर के यहाँ पहुंचा तो शाकिर ने प्रेम से उसका स्वागत-सत्कार किया और अपने यहाँ जब तक वह चाहे रुकने का आग्रह किया। शाकिर की पत्नी और बच्चों ने भी दरवेश को किसी तरह की कोई तकलीफ़ न होने दी। दरवेश उसके यहाँ कुछ दिन रुका और जब वह जाने लगा तो शाकिर और उसके घरवालों ने उसको रास्ते के लिए बहुत सी खाने की चीजें और पीने के लिए पानी दिया। दरवेश ने जाते हुए शाकिर से कहा कि वह उसके यहाँ बहुत आराम से रहा और बोला कि परमात्मा का शुक्र है कि आप सब तरह से संपन्न हैं। इस पर शाकिर ने उत्तर दिया, 'बाहरी छिव से धोखा मत खाओ, यह भी गुजर जाएगा।'

दरवेश शाकिर के शब्दों का सही तात्पर्य तो नहीं समझ पाया लेकिन उसने अपने अनुभव से सीखा था कि सभी देखी या सुनी बातों से कुछ न कुछ सबक अवश्य हासिल होता है और यदि वह मौन रहकर किसी निष्कर्ष पर पहुँचने की जल्दी न करे तो एक दिन अवश्य उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल ही जाएगा। अन्य बातों की तरह शाकिर की यह बात भी उसके दिमाग के एक कोने में बैठ गयी।

दरवेश पांच वर्षों तक घूमता रहा और तरह-तरह के अनुभव और ज्ञान हासिल करता रहा । पांच वर्ष बाद उसने पाया कि वह फिर वहीं शाकिर के गाँव लौट आया है । लोगों से पूछने पर मालूम चला कि शाकिर अब उस गाँव में नहीं रहता बल्कि पास के गाँव में हद्दाद के यहाँ नौकरी करता है । दरवेश शाकिर से मिलने हद्दाद के यहाँ पहुंचा तो देखा शाकिर और उसका परिवार एक छोटी झोपड़ी में रह रहे हैं । उन्होंने दरवेश का पहले की ही तरह स्वागत-सत्कार किया और पूछने पर शाकिर ने बताया कि तीन वर्ष पूर्व बाढ़ में उसका घर और पशु इत्यादि सब बह गए थे । और कोई उपाय न देख उसने हद्दाद के यहाँ नौकरी कर ली थी । दरवेश कुछ दिन वहाँ रुका, जाते हुए शाकिर ने फिर उसे रास्ते के लिए भोजन और पानी दिया । दरवेश ने जाते हुए कहा मुझे तुम्हारे साथ जो हुआ उस पर दुःख है, लेकिन परमात्मा बेहतर जानता है, उसके हर कार्य के पीछे कोई कारण होता है । प्रत्युतर में शाकिर ने कहा, 'याद रखो, यह भी गुजर जाएगा ।'

शाकिर का प्रफ्फुल चेहरा दरवेश के जहन में बस गया और उसके शब्द 'यह भी गुजर जाएगा' उसके कानों में देर तक गूंजते रहे । दिन, महीने, साल गुजरते रहे और दरवेश भी उम्र की परवाह किए बिना घूमता रहा । सात साल यूँ ही गुजर गए और फिर एक दिन दरवेश के पाँव उसे उसी गाँव की तरफ़ ले चले । इस बार उसने पाया कि शाकिर झोपडी की जगह हद्दाद के बड़े से घर में रह रहा था । हुआ यह कि इस दौरान हद्दाद की मृत्यु हो गयी और कोई वारिस न होने के कारण शाकिर की इमानदारी और उसके काम व लगन से खुश हो हद्दाद ने उसे अपना वारिस बना दिया था ।

इस बार दरवेश सऊदी अरब पार कर मक्का की यात्रा पर जानेवाला था । लौटते समय शाकिर ने फिर वही शब्द दोहराए । दरवेश मक्का की यात्रा कर हिन्दुस्तान होते हुए अपने देश पर्सिया लौटा और फिर एक बार वह अपने मित्र शाकिर के पास जाने को निकल पड़ा । इस बार उसे मालूम चला की पिछले वर्ष ही शाकिर की मृत्यु हो गयी थी । वह उसकी कब्र पर गया तो देखा कब्र पर उसके वही शब्द, 'यह भी गुजर जाएगा' लिखे हुए थे।

उसके बाद वह दरवेश हर साल अपने दोस्त शाकिर की कब्र पर जाता और वहाँ कुछ घंटे बैठकर विचारमग्न हो जाता । कुछ वर्ष बाद जब हर साल की तरह वह शाकिर की कब्र पर गया तो देखा कि वह कब्र और कब्रिस्तान दोनों बाढ़ में बह गए थे । दरवेश कुछ देर उस स्थान पर रुका रहा और गहरे ध्यान में खो गया । फिर जैसे उसे उन शब्दों में छिपे गहन अर्थ का आभास हुआ । आसमान की तरफ़ देख अपने मित्र की अंतिम निशानी से हमेशा के लिए विदा ले दरवेश अपने शहर लौट आया ।

इतने वर्षों की साधना और अनुभवों ने उसकी आत्मिक उन्नति में बड़ा योगदान दिया था और उसे लोगों के बीच एक विद्वान और गहन गंभीर व्यक्ति के रूप में स्थापित कर दिया था । बहुत से लोग उसके पास सलाह-मशविरा के लिए आते । होते-होते उसकी प्रसिद्धि बादशाह के मुख्य सलाहकार तक भी जा पहुंची जो किसी ऐसे ही बुद्धिमान व्यक्ति की तलाश में था।

हुआ यह था कि बादशाह चाहता था कि उसके लिए एक ऐसी विशिष्ट अंगूठी बनाई जाए जिसे देखकर यदि वह उदास हो तो प्रसन्न हो जाए और प्रसन्न हो तो गंभीर हो जाए । शहर के कितने ही जौहरी प्रयत्न कर हार गए लेकिन वे ऐसी अंगूठी नहीं बना पाए जिसे देखकर बादशाह संतुष्ट हो जाए । बादशाह के सलाहकार ने इस समस्या के बारे में लिखकर उस दरवेश के पास भेजा कि वह कोई हल बता पाए ? दरवेश ने उसी पत्र के पीछे अपना उत्तर लिखकर सलाहकार के पास भेज दिया । कुछ दिन बाद बादशाह के सामने एक पन्ना जड़ी खूबसूरत अंगूठी पेश की गयी । बादशाह जो अब निराश हो चला था उसने बुझे मन से अंगूठी को अपनी अंगुली में पहना और अगले ही क्षण वह मुस्कुराने लगा । उस अंगूठी में जड़े बड़े से पन्ने पर लिखा था, 'यह भी गुजर जाएगा ।'

#### राम नाम का मोल

एक साधक चाहता था कि उसके गुरु महाराज उसे कोई मंत्र दें । उसके बहुत आग्रह करने पर उन महात्मा ने उसके कान में बहुत धीरे से 'राम, राम, राम' कहकर कहा कि किसी को बताना मत वरना मंत्र की शक्ति क्षीण हो जाएगी और इसका असर नहीं होगा । वह साधक महात्माजी के बताये मंत्र का जाप करता रहा । कुछ दिनों बाद महात्माजी से जिद करके वह साधक तीर्थ यात्रा के लिए बाहर निकल गया । किसी तीर्थ में स्नान करते तीर्थयात्रियों के मुँह से उसने 'राम, राम' जाप का उच्चारण सुना तो महात्माजी के दिए मंत्र पर से उसकी आस्था डिग गयी और वह सोचने लगा कि महात्माजी ने उसे कोई खास मंत्र नहीं दिया है, इसे तो सारा संसार जानता है, लगता है गुरूजी ने मुझे टहला दिया है । वह अपनी तीर्थ यात्रा अधुरी छोड़ महात्माजी के पास लौट आया और सारी घटना कह सुनाई ।

महात्माजी समझ गए कि बुद्धि में दृढ़ता न होने से वह परमात्मा के नाम पर अपनी निष्ठा खो बैठा है। महात्माजी ने एक उपाय सोच अपने पास से एक चमकीला सा सुन्दर गोल पत्थर उसे देते हुए कहा कि तुम्हें खास मंत्र तो अवश्य देंगे लेकिन पहले हमारा एक छोटा सा काम कर आओ। बाजार जाकर इस पत्थर का छोटी बड़ी हर दुकान पर हर किसी से मोल मालूम कर आओ लेकिन किसी भी कीमत पर इस पत्थर को किसी को बेचना नहीं है, चाहे कोई कितनी भी कीमत क्यों न दे और वापस लाकर यह पत्थर हमें लौटा दो।

वह साधक उस पत्थर को संभालकर महात्माजी की आज्ञानुसार बाज़ार में उसकी कीमत मालूम करने चल पड़ा । बाहर निकलते ही सबसे पहले उसकी निगाह एक फल-सब्ज़ी बेचने वाली मालिन पर पड़ी । उसने वह पत्थर उस मालिन को दिखाया । पत्थर तो बड़ा ही मन-लुभावन था, मालिन ने सोचा इस पत्थर से उसके बच्चे खेलेंगे । उसने उस पत्थर के बदले कुछ साग-भाजी देना चाही लेकिन शिष्य को तो वह पत्थर बेचना ही नहीं था, वह आगे बढ़ा । कुछ दूरी पर उसे एक बनिए की दुकान दिखी । उसने पत्थर को उसे भी दिखाया । बनिया भी पत्थर देखकर बहुत खुश हुआ और उसने उस पत्थर को दो रूपये में खरीदना चाहा । किसी और ने उसका मोल सौ रूपये लगाया और किसी ने उससे ज्यादा और इस तरह उस पत्थर का मोल बढ़ता गया । वह साधक और आगे बढ़ा और जौहरियों के बाज़ार में जा पहुँचा । जौहरियों ने अपनी-अपनी समझ के अनुसार उस पत्थर की कीमत लाखों में लगाई और कुछ ने तो उसकी कीमत करोड़ो में आंकी । शिष्य उस पत्थर की कीमत सुनकर हैरान रह गया । अंत में वह उस पत्थर को लेकर शहर के सबसे बड़े जौहरी के पास गया तो उसने उसे जांच-परख कर कहा कि इस पत्थर की कीमत कोई नहीं लगा सकता । यह अनमोल हीरा है जिसके हाथ में जाता है उसे सुखी बनाता है

इसलिए हर कोई इसे खरीदना चाहता है । ऐसी अनमोल, अलभ्य वस्तु को तो तुम्हें अपने पास ही रखना चाहिए फिर भी अगर तुम बेचना चाहो तो मैं तुम्हें मुँह माँगा दाम दे सकता हूँ । शिष्य को तो वह पत्थर बेचना ही नहीं था वह उसे लेकर वापस अपने गुरूजी के पास पहुँचा और सारी बात उन्हें विस्तार से बताई कि किस तरह लोगों ने उस पत्थर की कीमत करोड़ो रूपये तक आंकी और सबसे बड़े जौहरी ने तो उसे अनमोल बताया और महात्माजी से मंत्र देने की प्रार्थना की । महात्माजी ने कहा, 'तू अभी तक नहीं समझा, इसलिए सुन-हीरे कि पहचान न होने के कारण मालिन उसे थोड़ी सी साग-भाजी के बदले खरीदना चाह रही थे और बनिया दो रूपये में और कोई इसके सौ रूपये देने को तैयार था तो कोई और ज्यादा, जैसी जिसकी समझ थी । पर असली जौहरी ने इसे अनमोल बताया और कहा कि दुनिया में इसका मोल कोई नहीं आंक सकता । इसी प्रकार परमात्मा का कोई भी नाम हो, श्रद्धा और विश्वास में कमी होने पर किसी से कोई काम न बनेगा । यही कारण है कि अधिकतर लोग राम नाम रुपी हीरे को साग-भाजी के बदले खरीद-बेच रहे हैं।'

### रेलवे का पैसा

एक बार स्फ़ी संत ठाकुर रामसिंहजी जयपुर से रींगस जा रहे थे। उन दिनों वे खाटूश्याम में थानेदार पद पर नियुक्त थे। जयपुर रेलवे स्टेशन पर प्लेटफार्म पर पहुँचते ही ट्रेन ने सीटी दे दी। उन्होंने जल्दी से गाड़ी तो पकड़ ली, पर टिकट नहीं खरीद पाए। चोम्-सामोद स्टेशन पर उन्होंने टी. टी. से मिलकर कहा कि मैं जल्दी में टिकट नहीं खरीद पाया हूँ, आप जयपुर से रींगस तक का टिकट बना दें और चाहें तो कायदे से डबल चार्ज कर लें। टी. टी. आई. बोला आप गाड़ी में बैठिये, सब हो जाएगा। गाड़ी जब रींगस आ पहुंची तो वे फिर टी. टी. आई. से मिले और उसे टिकट बनाने के लिये कहा। उन दिनों ठाकुर रामसिंहजी की ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की बातें समाज में चर्चा का विषय थीं। टी. टी. आई. भी ठाकुर रामसिंहजी को भली भांति जानता था और एक आदर्श पुरुष के रूप में आपका आदर करता था। बहुत बार कहने पर भी वह टिकट बनाने को राजी नहीं हुआ। उसने हाथ जोड़कर कहा कि ठाकुर साहब, आप मुझे माफ़ करें। आखिर ठाकुर रामसिंहजी रींगस से खाटूश्याम चले गए।

कुछ समय बाद ठाकुर रामसिंहजी को खाटूश्याम से जयपुर आने का संयोग बना । वे खाटूश्याम से रींगस आये और रींगस स्टेशन पर अपने शुतुरसवार (ऊँटवान) से दो टिकट लाने को कहा । वो थोड़ा असमंजस में था कि उन्होंने दो टिकट क्यों मंगाये हैं जबिक वे अकेले ही थे । वो दो टिकट लेकर आया तो ठाकुर रामसिंहजी ने एक टिकट को तो संभालकर अपनी जेब में रख लिया और दूसरे टिकट को फाड़कर फेंक दिया । पास में ही एक परिचित खड़ा था । उसने पूछा कि ये आपने क्या किया तो ठाकुर रामसिंहजी ने फरमाया, "रेलवे का पैसा रेलवे को चुका दिया ।"

### रेशम का गट्ठा

एक राजकुमार था, बड़ा सहृदय, सुशील और प्रजा का चहेता और उनकी सहायता करने वाला । अक्सर वह शहर में लोगों के सुख-दुःख का हाल जानने निकल जाता । ऐसे ही एक बार वह अपने कुछ सैनिकों को साथ लेकर शहर में निकला । कुछ समय बाद जब वह लौटकर आया तो उदास और चिंताग्रस्त । उसका किसी काम में मन न लगता । धीरे-धीरे राजकुमार ने खिटया पकड़ ली । राजा ने कई वैद्य-हकीम बुलवाये लेकिन वे राजकुमार की बीमारी का निदान नहीं कर पाए । थक-हारकर राजा ने ऐलान करवा दिया कि जो कोई राजकुमार की बीमारी को ठीक कर देगा, उसे भारी ईनाम दिया जाएगा ।

राजकुमार की बीमारी की बात सुनकर एक वृद्ध व्यक्ति आया । उसने राजकुमार के साथ उस दिन जो सैनिक गए थे, उन्हें बुलवाया और उनसे प्छताछ करने से उसे मालूम चला कि जब राजकुमार महल से निकला तो वह ठीक था लेकिन लौटकर आने के बाद से ही वह उदास और चिंताग्रस्त हो गया । उसने सैनिकों को कहा कि वे उसे उसी रास्ते से ले चलें जिससे उस दिन राजकुमार का गुजरना हुआ था । लौटकर आकर उस व्यक्ति ने सैनिकों को कुछ निर्देश दिये और अगले दिन अनुनय-विनय कर वह राजकुमार को अपने साथ फिर उसी रास्ते ले चला ।

एक जगह पहुंचकर राजकुमार कुछ ठिठका, और इधर-उधर देखने लगा । उस व्यक्ति ने पूछा, "राजकुमार, क्या खोज रहे हो ? रेशम का गट्ठा? वह तो जलकर राख हो गया ।" 'अच्छा', राजकुमार बोला और ऐसा लगा जैसे उसके सर से कोई बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो । दरअसल हुआ यह था कि एक जगह रेशम के धागों का उलझा हुआ एक बहुत बड़ा गट्ठा देखकर राजकुमार के दिमाग में यह बात अटक गयी थी कि यह कैसे सुलझेगा और कौन इसे सुलझायेगा ? इसी उलझन ने राजकुमार की बीमारी का रूप ले लिया था । उस व्यक्ति ने यह अनुमान लगाकर कि राजकुमार की चिंता और बीमारी का यह कारण हो सकता है, सैनिकों से कहकर उस गट्ठे को जलवा दिया था और गट्ठे के जल जाने से बीमारी की जड़ ही जाती रही और राजकुमार ठीक हो गया ।

### रोशनी कहाँ गई

प्रसिद्द सूफी संत हसन का जब अंत समय नजदीक था, किसी ने उनसे पूछा कि आपके गुरु (शैख) कौन हैं ? वे बोले मैंने हजारों लोगों से शिक्षा प्राप्त की है, अगर मैं उन सबके बारे में बताने लगा तो बहुत वक्त लग जायेगा लेकिन फिर भी तीन लोग ऐसे हैं जिनका प्रभाव मेरे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

हसन ने बताया, "उनमें से पहला व्यक्ति एक चोर था। एक बार मैं रेगिस्तान में भटकते एक गाँव में पहुंचा। वहाँ पहुँचते-पहुँचते रात हो गई थी और आश्रय के लिए मुझे कोई घर खुला न मिला। तभी मैंने देखा कि एक चोर चोरी करने के लिए एक मकान में सेंध लगा रहा था। मैंने उससे किसी आश्रय के लिए पूछा तो वह बोला इतनी रात तुम्हें और कोई जगह तो मिल नहीं पाएगी, यदि तुम एक चोर के साथ रहना स्वीकार करो तो मेरे साथ रह सकते हो। मैं उसके साथ एक महीने रहा। प्रत्येक रात वो चोरी करने निकलता और खाली हाथ लौट आता। लेकिन उसने कभी कोई शिकवा नहीं किया और हमेशा प्रसन्न रहता और कहता कि कोई बात नहीं, आज न सही, परमात्मा की इच्छा होगी तो कल सफलता मिलेगी। अपनी साधना के दौरान मुझ पर कई बार ऐसा वक्त गुजरा जब महीनों तक मेरा मन मुराक़ब (ध्यान) में न लगता और मैं बेचैन और निराश हो जाता और तब सहसा मुझे इस चोर का स्मरण हो आता और उसके शब्द याद आ जाते कि परमात्मा की इच्छा हुई तो कल सफलता मिलेगी और उससे प्रेरणा पा मैं फिर अपने प्रयास में जुट जाता।

मेरा दूसरा शिक्षक एक कुता था। मैं अपनी प्यास बुझाने एक नदी पर जा रहा था कि मैंने एक कुत्ते को देखा जो प्यासा था और नदी से पानी पीना चाहता था लेकिन पानी में अपनी ही छाया को देख और उसे कोई दूसरा कुता समझ डरकर वापस भाग आता। अंत में डर के बावजूद वह नदी में कूद पड़ा और पानी में कूदते ही उसकी छाया गायब हो गई। मैं समझ गया यह मेरे लिए परमात्मा की ओर से एक सन्देश था कि 'हिम्मत करो और कूद पड़ो।'

और मेरा तीसरा शिक्षक एक छोटा बच्चा था । मैं एक शहर में घुसा तो देखा एक छोटा बच्चा हाथ में जलती मोमबती लेकर उसे मस्जिद में रखने जा रहा था । मैंने उससे मजाक में पूछा कि क्या यह मोमबती तुमने स्वयं ने रोशन की है ? वह बोला हाँ, तो मैंने कहा पहले यह मोमबती बुझी हुई थी, फिर तुमने इसे जलाया, क्या तुम मुझे बता सकते हो यह रोशनी कहाँ से आई ? बच्चा हँसा और उसने फूँक मारकर मोमबती को बुझा दिया और मुझसे बोला क्या तुम बता सकते हो यह रौशनी कहाँ गई, जहाँ यह गई वहीं से यह आई थी।

मेरा अहं चकनाचूर हो गया, मेरे ज्ञान की हवा निकल गई और उस क्षण मुझे अपनी नासमझी का अहसास हुआ । उसके बाद मैंने अपने ज्ञान का अहंकार त्याग दिया ।"

इसके बाद हसन ने कहा, "यह सही है कि मेरा कोई 'गुरु' नहीं है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि मैं 'शिष्य' भी नहीं था, मैंने समस्त चराचर को अपना शिक्षक मान, सबसे सीखा, चाहे वह पेड़ हो, हवा हो, पानी हो, बादल हो, पशु हो, पक्षी हो या इंसान, सब पर भरोसा रख मैंने कुछ न कुछ सीखा। राह पर आगे बढ़ने के लिए शिष्यत्व ग्रहण करना अनिवार्य है। और शिष्यत्व का मतलब है सीखने का माद्दा रखना, सीखने की ललक को जाग्रत रखना। किसी आचार्य से तुम 'सीखना' सीखते हो, वह तो ऐसा तरणताल है जिसमें तैरना सीखकर सारे सागर तुम्हारे हो जाते हैं।"

#### लंगोटी का त्याग

एक महात्मा जंगल में रह ईश्वर भिक्त में अपना समय बिताते थे। गाँव वाले जो कुछ खाने-पीने के लिए दे जाते, उससे अपना गुजर-बसर करते, लोगों को भजन-पूजन का मार्ग बताते और प्रसन्न रहते। पहनने के लिए उनके पास दो लंगोटी थी जिसे वे एक को पहनते और दूसरी को धोकर अगले दिन के लिए सुखा देते। एक दिन उन्होंने देखा कि उनकी लंगोटी को चूहा कुतर गया है। महात्माजी विचारमग्न हो गए। मन में चूहे से लंगोटी बचाने की सोचते-सोचते उन्हें बिल्ली पालने का ख्याल आया। फिर बिल्ली के लिए दूध और दूध के लिए गाय, गाय के चारे के लिए खेत और खेत की देखभाल करने के लिए पत्नी और बाल-बच्चों का ख्याल आया। बाल-बच्चों का ख्याल आते ही उनके ख्याली शोर-शराबे ने महात्माजी का विचार भंग कर दिया और वे सचेत हो गए। सचेत होकर महात्माजी ने एक जोर का ठहाका लगाया और बोले सारी मुसीबत की जड़ यह लंगोटी ही है, क्यों न इस लंगोटी को ही त्याग दिया जाए?

### लिखित इजाज़तनामा

हजरत अली अर-रमितानी (हजरत अजीजाँ) को दैवीय प्रेरणा हुई कि वे ख्वारज्म जाएँ । जब वे ख्वारज्म पहुंचे तो शहर के बाहर दरवाजे पर ही रूक गए और अपने एक दरवेश को बादशाह के पास यह कहलाकर भेजा कि एक गरीब जुलाहा तुम्हारे शहर के दरवाजे पर आया है, अगर तुम्हारी इज़ाज़त हो तो वह शहर में दाखिल हो, वरना यहीं से वापस हो जाए । उन्होंने यह भी फ़रमाया कि अगर बादशाह इज़ाज़त दे तो इजाज़तनामा लिखवाकर और बादशाह की मुहर और दस्तखत करवा कर लाना । जब वह बादशाह के दरबार में गया और बादशाह को हजरत अजीजाँ ने जो फ़रमाया था बतलाया तो बादशाह हँसने लगा और बोला कि फ़क़ीर लोग भी कैसे नादान और सादा तबियत लोग होते हैं और मजाक के तौर पर एक इजाज़तनामा दस्तखत व मुहर के साथ उसे दे दिया । इजाज़तनामा लेकर हजरत अजीजाँ ने शहर में प्रवेश किया और लोगों को परमात्मा की तरफ़ प्रेरित करने लगे । लोग उनसे प्रभावित होकर बड़ी संख्या में उनके पास आने लगे । वे मजदूरों को भी सतसंग में शामिल होने के लिये प्रोत्साहित करते और सतसंग में शामिल होने की एवज में उन्हें दिन की मजदूरी भी देते । उनकी सुहबत का लोगों पर खासा असर पड़ता और लोग हाजिर ह्ए बिना न रह पाते । लोगों का हुजूम बढ़ने लगा तो बादशाह के कान भी खड़े हो गए कि बड़ी संख्या में लोग एक फ़क़ीर के मुरीद होते जा रहे हैं और यह किसी अशांति या झगड़े की वजह न बन जाए ? बादशाह ने उन्हें शहर से बाहर चले जाने का ह्क्म दे दिया । हजरत अजीजाँ ने अपने उसी दरवेश के हाथों वह लिखित इजाज़तनामा बादशाह के पास यह कहते हुए भिजवा दिया कि हम तो आपकी इजाज़त से ही यहाँ ठहरे हुए हैं, अगर वादा-खिलाफी हो तो लौट जाएँ । बादशाह अपने आदेश पर बहुत शर्मिंदा हुआ और हजरत अजीजाँ (रहम.) की दूरदर्शिता से बहुत प्रभावित भी हुआ और अपने दरबारियों और साथियों सहित आकर उनका शिष्यत्व स्वीकार किया ।

#### लोगों की निंदा

हजरत इमाम कासिम एक महान सूफी संत हुए हैं, वे अपने पिता और माता दोनों ही तरफ़ से हजरत पैगम्बर से सम्बंधित थे। लोग उनके बारे में क्या सोचते हैं, इससे वे बेपरवाह रहते और परमात्मा की प्रसन्नता उनके लिये सब कुछ थी। एक बार कुछ लोग उनके पास दान के लिये रखे धन को लेकर आए और उनसे उसे गरीबों में बांटने के लिए निवेदन किया। हजरत इमाम कासिम उसे बांटकर नमाज़ पढ़ने के लिये चले गए। अभी जब वे नमाज़ अदा कर ही रहे थे कि लोगों ने उनके बारे में उल्टा-सीधा कहना शुरु कर दिया। उनके सुपुत्र को यह बुरा लगा और उन्होंने लोगों से कहा तुम उस व्यक्ति के पीठ-पीछे उसकी बुराई कर रहे हो, जिसने तुम्हारे कहने पर तुम्हारे सारे धन को गरीबों में बाँट दिया और अपने लिये एक पाई तक नहीं रखी। जैसे ही हजरत कासिम (रजि.) नमाज़ पूरी करके आये और उन्हें मालूम चला, उन्होंने अपने पुत्र को झिड़कते हुए चुप रहने को कहा। वे अपने पुत्र को यह सन्देश देना चाहते थे कि वह उनको लोगों की निंदा से बचाने का प्रयास न करे, क्योंकि उनके लिये परमात्मा की प्रसन्नता सर्वोपरि थी और लोगों की उनके बारे में राय उनकी निगाह में कोई महत्व नहीं रखती। वे स्वयं अपने पीछे अपनी हक़ की कमाई से करीब एक लाख दीनार गरीबों में बांटने के लिये छोड़ गए।

### लोगों की समझ

दरवेशों के एक समूह को उनके शैख़ ने एक निश्चित शहर में जाकर रहने और वहाँ अपनी साधना करने का आदेश दिया । आज्ञानुसार वे सब वहाँ जाकर एक अच्छे से मकान को किराये पर लेकर उसमें रहने लगे । किसी तरह की कोई भ्रांति न हो और वे लोगों के अवांछित ताल्लुक से बचे रहें और अपनी साधना निर्विच्न रूप से कर सकें इसलिए उन दरवेशों का मुखिया जो कि शैख़ का प्रमुख उत्तराधिकारी भी था, केवल वहीं शहर के लोगों को उपदेश देने के लिए बाहर निकलता और बाकी दरवेश घर के अन्य कामों को निपटाते और अपनी साधना में लगे रहते।

कुछ वर्षों में इन सभी दरवेशों ने अपनी साधना में काफ़ी तरक्की कर ली और संयोग से तभी इस मुखिया दरवेश की मृत्यु हो गयी तो बाकी दरवेशों में से कुछ लोगों के सामने आये और उन्हें उपदेश देने का उपक्रम करने लगे । लेकिन लोगों ने ना केवल उनका उन्हें नकलची मान तिरस्कार ही किया बल्कि कहने लगे, 'देखो कैसे बेशर्म लोग हैं ये । न केवल इन्होने उसकी (मुखिया की) गद्दी ही हथिया ली है बल्कि ये घर के नौकर अब ऐसा व्यवहार कर रहे है मानो ये वास्तव में ही सूफ़ी हों।'

साधारण लोग जिनकी सोच में परिपक्क्वता नहीं होती, अक्सर धोखा खा जाते हैं और इस तरह की परिस्थिति का सही से मुल्यांकन नहीं कर पाते । अक्सर वे नकलचियों को पहुँचा हुआ और पहुंचे हुए को नकलची समझने की भूल कर बैठते हैं ।

#### शतरंज और आश्रम

शतरंज का बहुत अच्छा खिलाड़ी एक युवक एक आश्रम में आचार्य के पास जाकर बोला कि मैं वास्तव में एक साधक बनना चाहता हूँ लेकिन मुझमें कोई गुण नहीं है, मुझे कुछ नहीं आता-जाता । मेरे पिता ने मुझे शतरंज खेलने के सिवाय कुछ और नहीं सिखाया लेकिन उससे आत्म-ज्ञान हासिल नहीं होता और फिर खेल चाहे कोई भी हो सभी में गुनाह शामिल हैं । आचार्य बोले, "हाँ, जो तुम कह रहे हो वह ठीक है । खेल खेलने में गुनाह शामिल हो सकता हैं लेकिन साथ ही उससे कुछ मनोरंजन भी होता है और इस आश्रम में शायद उसकी भी थोड़ी आवश्यकता है ? और यह कहकर आचार्य ने एक साधक को युवक के साथ शतरंज खेलने के लिए बुलाया और युवक के सामने यह शर्त रखी कि यदि वह युवक हार जाता है तो उसे आश्रम में स्थान नहीं मिलेगा और यदि वह साधक हार जाता है तो उसे आश्रम छोड़कर जाना पड़ेगा ताकि आश्रम में उसके स्थान पर उस युवक को जगह मिल सके ।

आचार्य ने यह बात पूर्ण गंभीरता से कही थी अतः वह युवक पूरे मनोयोग के साथ शतरंज खेलने लगा । वैसे भी वह युवक शतरंज का एक बेहतरीन खिलाड़ी था और वह साधक खेल में उस युवक की तरह पारंगत नहीं था । खेल के दौरान युवक ने उसकी आँखों में झांककर देखा तो उसने उसकी आँखों में एक गजब की शांति और चेहरे पर एक सच्चे साधु की आभा देखी । यह देखने के बाद वह युवक यह सोच कि दुनिया को उससे ज्यादा उस साधक की सेवा की आवश्यकता है, जानबूझकर खराब खेल खेलने लगा और अपने मोहरे पिटवाने लगा ।

तभी यकायक आचार्य ने यह कहते कि "तुम जो तुम्हें सिखाया गया है, उससे कहीं अधिक सीख चुके हो" शतरंज के मोहरों को नीचे गिरा दिया । फिर वे बोले, "तुम में जीतने के लिए आवश्यक ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता, जो चाहते हो उसके लिए लड़ने की शक्ति के साथ ही करुणा और अच्छे उद्धेश्य के लिए त्याग की भावना भी भरी हुई है । तुम्हारा इस आश्रम में स्वागत है ।"

## वो पानी मुल्तान गया

कहा जाता है कि संत कबीर एक बार संत रैदास से मिलने उनकी कुटिया पर गए । बातचीत के बीच उन्हें प्यास लगी तो उन्होंने पीने के लिए पानी माँगा । संत रैदास जूते गांठने का काम किया करते थे और चमड़ा भिगोने के लिए उन्होंने अपने पास एक कठौती रख रखी थी । उन्होंने उसी से संत कबीरदासजी को पानी पिलाना चाहा । कबीरदासजी ने सोचा कि यदि वे पानी पीने से मना कर दें तो यह रैदासजी का अपमान होगा । अतः उन्होंने पानी पीने से इनकार तो नहीं किया लेकिन हाथ का सारा पानी वे मुँह में न लेकर कुहनियों के सहारे नीचे गिराने लगे, एक बूँद भी मुँह में न जाने दिया । कबीरदासजी अंगरखी पहना करते थे । उस पानी से उनकी अंगरखी पर भी चमड़े के दाग लग गए सो घर लौटकर उन्होंने अंगरखी को अपनी पुत्री कमाली को धोने के लिए दिया । बहुत कोशिश करने पर भी दाग नहीं गया तो कमाली ने कपड़े को दांतों से चूसकर भी दाग मिटाने की कोशिश की और इस कोशिश में उस पानी का कुछ अंश उसके उदर में भी चला गया । पानी के भीतर जाते ही कमाली त्रिकालज़ हो गयी । कालांतर में उनका विवाह हो गया और वो अपने ससुराल मुल्तान चली गई।

वक्त गुजरा और एक बार कबीरदासजी अपने गुरु महात्मा रामानन्दजी के साथ आकाश मार्ग से कहीं जा रहे थे। रास्ते में मुल्तान पड़ता था अतः वे दोनों कमाली के ससुराल पहुँच गए। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने देखा कि कमाली ने उन दोनों के लिए पहले ही से भोजन बना, आसन बिछा खाना परोस रखा है। महात्मा रामानन्दजी ने कबीरदासजी से पूछा कि कमाली को यह ज्ञान कहाँ से आया? कबीरदासजी ने कमाली से पूछा तो उन्होंने अंगरखे वाली घटना कह सुनाई। अब तो कबीरदासजी अपनी अल्पज्ञता पर पछताने लगे। घर लौटकर वे फिर संत रैदासजी से मिलने गए और थोड़ी देर बाद पीने के लिए पानी माँगा। संत रैदासजी सब जान ही चुके थे उन्होंने फ़रमाया:

पाया था तब पिया नहीं, मन में अभिमान किया, अब पछताए होत क्या, वो पानी मुल्तान गया ।

### शाही नमाज

एक दफ़ा किसी शहर का बादशाह जुम्मे की नमाज़ पढ़ने शाही मस्जिद में पहुँचा और यह सुनकर बड़ा क्रोधित हुआ कि एक फ़क़ीर नमाज़ में शामिल नहीं हुआ । नमाज़ अदा करने के बाद बादशाह ने फ़क़ीर को तलब किया और उससे पूछा कि तुम नमाज़ में शरीक क्यों नहीं हुए, अब तुम्हें इसकी सजा भुगतनी पड़ेगी । यह फ़क़ीर एक पहुँचा हुआ संत था । उसने कहा, बादशाह, तुम्हारी और मेरी नमाज़ में फर्क है । तुम बादशाह हो इसलिए शाही नमाज़ पढ़ते हो और मैं ठहरा एक फ़क़ीर, इसलिए फ़कीरी नमाज़ पढ़ता हूँ । शाही नमाज़ से दूर इसलिए रहता हूँ कि तुम्हारे अरबी घोड़े की दुलती से बचा रहूँ । खुदा की हाजरी में भी बादशाहत की बू तुम्हारे दिमाग से नहीं निकलती और तुम घोड़े पर सवार रहकर ही नमाज़ अदा करते हो । बादशाह शर्मिंदा हो फ़क़ीर के कदमों पर गिर पड़ा और मुआफ़ी मांगने लगा । वह सचमुच ही नमाज़ की नुमाइश बना रहा था, मन तो उसका अरबी घोड़ों में ही खोया हुआ था ।

#### शिष्य का धर्म

एक युवक एक सूफ़ी महातमा के पास गया और उनसे स्वयं को शिष्य बनाने का आग्रह करने लगा। सूफ़ी महातमा ने उससे कहा कि वह अभी शिष्य बनने के लिये तैयार नहीं है लेकिन युवक न माना और अपनी जिद पर अड़ा रहा। सूफ़ी महातमा ने तब उसे अपने साथ मक्का की यात्रा पर चलने को कहा। यात्रा सुचारू रूप से संपन्न हो जाए इसको ध्यान में रखकर सूफ़ी महातमा ने कहा कि उन दोनों में से एक नायक बन जाए और दूसरा नायक की आजा को मान उसका अनुसरण करे। युवक ने तुरंत महातमाजी को नायक बन जाने के लिये कहा और बोला कि वह उनका आदेश मानेगा और उनका अनुसरण करेगा।

वे दोनों अपनी यात्रा पर चले जा रहे थे कि रास्ते में रात में एक जगह बारिश होने लगी । तुरंत सूफ़ी महात्मा उस युवक के सर पर एक चादर तानकर खड़े हो गए और उसको भीगने से बचाने लगे । महात्माजी को अपने सर पर चादर ताने खड़े देख युवक बोला कि यह काम तो उसे करना चाहिए । सूफ़ी महात्मा बोले मैं नायक हूँ, तुम्हें मेरी आज्ञा माननी होगी और मेरी आज्ञा यह है कि तुम बारिश में भीगने से बचो और इस चादर के नीचे अपनेआप को बचाओ । उनकी बात सुन युवक निरुत्तर हो गया ।

सुबह तक बारिश रक गयी और वे दोनों अपनी यात्रा पर आगे बढ़ने लगे । शिष्य महात्माजी से बोला आज नया दिन है अत: अब हमें अपना किरदार बदल लेना चाहिए । आज मैं नायक हूँगा और आप मेरा अनुसरण करें । सूफ़ी महात्मा युवक की बात स्वीकार कर उसके पीछे-पीछे चलने लगे । कुछ देर बाद भोजन पकाने के लिये युवक लकड़ियाँ बीनने के लिये जाने लगा । तुरंत सूफ़ी महात्मा ने युवक को रोकते हुए कहा कि वह ऐसा कोई काम न करे क्योंकि अब वह नायक है, वे स्वयं उसके अनुयायी, इसलिये उनके होते हुए वह उस युवक को अपनी सेवा करने नहीं दे सकते, अब सेवा का हक उनका है और यही शिष्य का धर्म है ।

#### शिष्य का प्रशिक्षण

दिल्ली में शाह साहब नाम के एक बड़े सूफी संत हुए हैं । जब उनके शैख़ का अंतिम समय नजदीक था तो शैख़ साहब ने अपने बेटे को बुलाकर कहा कि वक्त आने पर वह शाह साहब के पास हाजिर होकर उनसे अपनी रूहानी तालीम हासिल करे । अपने पिता की आज्ञानुसार शैख़ साहब के सुपुत्र शाह साहब के पास हाजिर हुए और उनसे दीक्षा देने की विनती की । अब तक तो शाह साहब इस लड़के की अपने गुरुदेव के पुत्र होने के कारण बहुत इज्ज़त किया करते थे, लेकिन इस बार वह शाह साहब से तालीम हासिल करने के लिये आया था । शाह साहब ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर उसे अपनी सेवा में रख लिया और उसे आश्रम की देख-भाल के काम में लगा दिया । कुछ दिनों बाद उसे आश्रम की साफ-सफाई और पोधों में पानी देने इत्यादि काम में लगा दिया गया ताकि उसके आचरण, व्यवहार व प्रतिक्रिया की परख की जा सके । अक्सर शाह साहब उसे डांट-फटकार भी दिया करते । दो वर्ष बाद उसे आश्रम के दरवाजे पर दरबान के रूप में नियुक्त कर दिया गया इस हिदायत के साथ कि यदि उससे कोई गलती हुई तो उसे आश्रम से निकाल दिया जाएगा । कई बार उसे उसकी गलतियों की सज़ा दी गयी और बिना भोजन के भी रखा गया । शाह साहब इस प्रकार उसकी रूहानी तालीम को अंजाम दे रहे थे ।

कुछ दिन बाद शाह साहब ने एक दिन आश्रम की मेहतरानी को उसी दरवाजे से होकर गुजरने के लिए कहा जिस पर इस लड़के को नियुक्त किया गया था। पहले दिन लड़के ने बड़ी विनम्रता से उससे निवेदन किया कि वह उस दरवाजे से न गुजरे क्योंकि इससे अन्य लोगों को असुविधा होगी। लेकिन शाह साहब की आज्ञा अनुसार उसने लड़के की बात नहीं मानी और उसी दरवाजे से आना-जाना जारी रखा। कुछ दिन बाद शाह साहब ने मेहतरानी को कहा कि दरवाजे से गुजरते हुए किसी बहाने से वह उस लड़के से नौक-झोंक करे। शाह साहब की हिदायत अनुसार एक दिन उसने लड़के से कहा, 'मियां पहले सेवा कैसे की जाती है यह सीख लो, वर्ना इस दरवाजे पर बैठे-बैठे तो खाना भी हजम नहीं होगा।'

लड़के ने हाथ जोड़कर कहा, 'माँ जो तुम कह रही हो वह ठीक है, लेकिन इस दुर्गन्ध से सबको तकलीफ़ होती है। मेहरबानी कर आगे से मैले की टोकरी को इस दरवाजे से मत ले जाया करो।' उसने जाकर यह बात शाह साहब को बतायी तो शाह साहब ने कहा कि अगली दफ़ा जब टोकरी लेकर जाओ तो लड़के के करीब से गुजरना और यदि वह कुछ आनाकानी करे तो टोकरा उस पर उलट देना।

एक-दो दिन बाद उसने वैसा ही किया और जब वह लड़के के करीब से गुजरने लगी तो लड़का इस ख्याल से कि कहीं वह अनजाने में उस स्त्री के शरीर को छू न ले, एक तरफ़ होने लगा । तभी उसने वह मैला भरा टोकरा लड़के पर उलट दिया । लड़का थोड़ा विचलित हुआ तो वह कहने लगी, 'मियां क्या बात है ? इसमें हजरत शाह साहब का पाखाना है, मैं इसे रोज ख़ुशी से उठाकर ले जाती हूँ, और प्रसन्न रहती हूँ । आपने उसे क्यों गिरा दिया ? आपको इससे नफरत है ?'

यह सुनकर लड़के के मन में बिजली सी कौंधी और उसे एक नयी अंतर्दृष्टि मिली । उसका हृदय अपने गुरु के प्रति प्रेम और समर्पण के भाव से भर आया । उसकी आँखों में प्रेमाश्रु भर आये और वह अपने हाथों से मैले को उठाकर टोकरी में डालने लगा । उसे अपना होश न रहा कि वह स्वयं गंदगी से लिपटा हुआ है । उसने पाँव छूकर कहा, 'माँ, तुमने वास्तव में एक माँ का हक अदा किया है । तुमने मेरी आँखें खोल दी, मैं किस तरह तुम्हारा शुक्रिया अदा कर सकता हूँ ?'

शाह साहब ऊपर खड़े हुए यह दृश्य देख रहे थे । वे तुरंत उतरकर नीचे पहुंचे । पूरी खानकाह में हलचल मच गयी और शाह साहब के अन्य शिष्य भी उनके पास इकठ्ठे हो गए । शाह साहब ने उन्हें लड़के को नहला-धुलाकर, नये कपड़े पहनाकर अपने पास लाने को कहा ।

जब तक लड़के को लाया जाता, शाह साहब आवेश और जलाल की हालात में इधर से उधर चक्कर लगा रहे थे । उन्होंने लड़के को अपने पास बिठाया और उसे अध्यात्मिक सम्पदा से परिपूर्ण कर आचार्य पदवी से नवाजा । फिर अपने हाथों से उन्होंने लड़के के सर पर पगड़ी बांधी और हाथ बांधकर लड़के के पास इस तरह खड़े हो गए मानों वे स्वयं उसके मुरीद हों । जब लड़के के होशों-हवास संभले तो शाह साहब ने उसे बहुत सी भेंट अपनी गुरु-माता (लड़के की माँ) के लिये सौंपी और लड़के को घर लौटने के लिये कहा और स्वयं उसे शहर के बाहर तक छोड़ने गए ।

### शिष्य का फ़र्ज

एक बार शैख़ कुतुबुद्दीन हैदर का एक शिष्य महान सूफ़ी संत हजरत शहाबुद्दीन सुहरावर्दी की खानकाह (आश्रम) में हाजिर हुआ । कुछ देर बाद जब उसे भूख लगी तो उसने हजरत शहाबुद्दीन सुहरावर्दी की तरफ़ मुखातिब होकर कहा, "या शैख़ कुतुबुद्दीन हैदर ! मुझे भूख लगी है ।" हजरत शहाबुद्दीन सुहरावर्दी ने अपने एक शिष्य से उसे भीतर ले जाकर भोजन कराने को कहा । भोजन कर लेने के बाद उसने परमात्मा को धन्यवाद देते हुए कहा, "या शैख़ कुतुबुद्दीन हैदर ! आप मुझे कहीं नहीं भूलते ।" यह शख्स जो उसे भोजन करा रहा था उसे हजरत शहाबुद्दीन सुहरावर्दी के पास ले गया और उनसे बोला कि यह अजीब आदमी है । खाना तो आपका खाता है और शुक्रिया अपने पीर (शैख़, गुरु) का करता है ।

अपने शिष्य की यह बात सुनकर हजरत शहाबुद्दीन सुहरावर्दी मुस्कुराए और फिर गंभीर होकर बोले, "मुरीदी (शिष्यत्व, शिष्य होना) इस दरवेश से सीखनी चाहिए । शिष्य को जो कुछ भी और जिस किसी से भी मिले, दुनियावी या अध्यात्मिक, सब अपने शैख़ द्वारा प्रदत्त ही जानना चाहिए । एक सच्चे शिष्य का यही फ़र्ज है ।"

## शून्य का विचार

एक दिन एक साधक शाह बहाउद्दीन नक्शबंद के पास हाजिर हुआ और बताने लगा कि कैसे एक फ़र्जी सूफ़ी लोगों को साधन-अभ्यास करने के लिए कह रहा था । वह बोला, "जाहिर है वह संत ढोंगी के अलावा कुछ और नहीं हो सकता क्योंकि वह साधकों को 'शून्य पर विचार' करने के लिए कहता है । कुछ लोगों को प्रभावित करने के लिए यह कहना आसान हो सकता है, लेकिन कोई शून्य के बारे में कैसे सोच सकता है ?"

शाह बहाउद्दीन ने उससे पूछा: "त्म मेरे पास क्यों आये हो ?"

उसने कहा, "इस बेकार की बात को बताने ओर आपसे रूहानियत पर बात करने।"

"केवल अपनी बात का समर्थन हासिल करने के लिए नहीं कि वह व्यक्ति मात्र सूफ़ी का वेश धारण किए है ?"

"नहीं, यह तो मुझे पहले ही से पता है।"

"इसलिए भी नहीं कि तुम हम लोग जो यहाँ बैठे हैं उन पर यह जाहिर करने के लिए कि तुम बहकाए जा सकने वाले साधारण जनों से अधिक जानते हो ।"

"नहीं । वास्तव में तो मैं आपसे मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए आया हूँ ।"

"बहुत खूब । मैं तुम्हें जो सर्वोत्तम मार्गदर्शन दे सकता हूँ, वह यही है कि 'शून्य पर विचार करो ।'"

मन में यह सोच कि यह सूफ़ी संत भी सच्चे नहीं हैं, वह व्यक्ति तुरंत वहाँ से चलता बना ।

लेकिन एक और जिज्ञासु, जिसने इस बातचीत का शुरूआती अंश नहीं सुना था, और मजिलस में ठीक उसी क्षण दाखिल हुआ था जबिक शाह बहाउद्दीन नक्शबंद कह रहे थे कि, 'मैं तुम्हें जो सर्वोत्तम मार्गदर्शन दे सकता हूँ, वह यही है कि 'शून्य पर विचार करों' उनकी इस बात को सुन उनसे अत्यधिक प्रभावित हुआ।

"शून्य पर विचार", क्या अद्भुत और गहन सोच है, उसने अपने-आप से कहा ।

फिर मजितस के समाप्त होने पर वह इस विचार के विपरीत बिना कुछ जाने-सुने लौट गया । अगले दिन शाह बहाउद्दीन के एक शिष्य ने उनसे पुछा कि उन दोनों व्यक्तियों में कौन सही था ? "दोनों में से कोई भी नहीं" शाह बहाउद्दीन ने कहा । "उन्हें अभी यह जानना-समझना होगा कि उनकी लालसा एक पर्दा, एक अवरोध है । उनका उत्तर एक शब्द, एक मुलाकात या किसी आसान समाधान में नहीं है । जिज्ञासुओं के लगातार प्रयास द्वारा ही वे थोड़ा-थोड़ा ज्ञान प्राप्त कर उस स्थिति में पहुंच सकते हैं जिसमें उन्हें सत्य की समझ आ पाए और इस तरह वे जिज्ञासु से सत्य के खोजी बन पाते हैं ।"

फिर वे बोले, 'मौलाना रूमी ने कहा है, "तुम्हारे पास दो व्यक्ति आते हैं, एक का कहना है कि उसने स्वप्न में जन्नत का नजारा देखा, दूसरा जहन्नुम की बात कहता है। वे पूछते हैं कि हकीक़त क्या है तो इसका उत्तर क्या है ?" उत्तर है किसी आचार्य के सत्संग का लम्बे समय तक लाभ उठाना, जब तक कि आप समता कि स्थिति न प्राप्त कर लें।

### शैख़ का आदेश

शाह दरवेश मुहम्मद उजबेकिस्तान में नक्शबंदी सूफ़ी परंपरा के एक महान संत हुए हैं। एक बार उनके शैख़ ख्वाजा मुहम्मद जाहिद ने उन्हें एक पहाड़ पर जाकर वहाँ उनका इन्तजार करने को कहा और फ़रमाया कि वे वहाँ बाद में आयेंगे। शाह दरवेश मुहम्मद बहुत आज्ञाकारी थे। वे बिना ये पूछे कि वहाँ कैसे जायेंगे, क्या करेंगे या क्या खायेंगे, तुरंत उस पहाड़ की ओर रवाना हो गए। उन्होंने अपना स्व सम्पूर्ण रूप से अपने गुरुदेव के चरणों में समर्पित कर दिया था। उनका आचरण पूर्णरूपेन दोषरहित था। वे वहाँ पहुँचकर अपने गुरुदेव की प्रतीक्षा करने लगे। उन्होंने पहाड़ पर ही दोपहर की नमाज़ अदा की और फिर सूर्यास्त हुआ लेकिन उनके गुरुदेव वहाँ नहीं आये। उनका अहं कह रहा था कि तुम्हारे शिख़ नहीं आने वाले, तुम्हें वापस जाना होगा। हो सकता है कि वे इस बात को भूल गए हों। लेकिन उनका अटल विश्वास उन्हें अपने गुरु के आदेश पर डटे रहने के लिये प्रेरित कर रहा था। उन्हें केवल वहाँ अपने गुरुदेव की प्रतीक्षा करनी थी। वे अपने गुरुदेव का इन्तजार करने लगे। रात में कड़ाके की ठंड पड़ने लगी, जिसने उन्हें अपनी जकड़ में ले लिया। ठंड के कारण वे पूरी रात जगे रहे। उनके पास उष्णता का एकमात्र स्रोत उनके हृदय में परमात्मा की याद था। उस सघन और ठंडी रात के बाद सुबह आई लेकिन उनके गुरुदेव का आगमन अभी दूर था।

शाह दरवेश को भूख लगी थी पर खाने के लिये कुछ नहीं था। फलों के कुछ वृक्ष दिखे तो उन्होंने फल खाकर अपनी भूख मिटायी और अपने गुरुदेव की प्रतीक्षा करने लगे। वह दिन भी प्रतीक्षा करते गुजरा और फिर अगला दिन भी। उनके अहं और विश्वास में द्वन्द जारी था लेकिन उनका विश्वास उनके अहं पर विजयी हुआ, उनका अपने गुरुदेव पर दृढ़ विश्वास था। उनकी धारणा और दृढ़ होने लगी कि मेरे गुरुदेव जानते हैं कि वे क्या कर रहे हैं।

समय इसी तरह गुजरता रहा । एक सप्ताह गुजरा और फिर एक माह । शैख़ मुहम्मद जाहिद नहीं आये । शाह दरवेश प्रतीक्षा करते रहे और अपना समय प्रार्थना करने और परमात्मा की याद करने में गुजारते रहे । उनकी तपस्या रंग लायी । जंगल के पशु उनके पास आकर शांति से उन्हें घेरकर बैठ जाते । उन्हें अहसास होने लगा कि यह चमत्कारिक शक्ति उन्हें उनके गुरुदेव की देन है ।

प्रतीक्षा करते-करते सर्दियाँ आ गयी और पहाड़ पर बर्फ गिरने लगी । बहुत ज्यादा ठंड बढ़ने से पेड़ों से फल-फूल भी खत्म हो गए और शाह दरवेश बचे-खुचे पत्तों, जड़ों व पेड़ों की छालों की नमी से अपना गुजर करने लगे । उनके पास हिरणों के झुण्ड आने लगे और हिरणीयां उनके पास आकर निश्चल खड़ी हो जाती और वे उन्हें दुहकर उनके दूध से अपनी भूख मिटाते । यह भी एक चमत्कार था और वे जान रहे थे कि इन सबके द्वारा उनके गुरुदेव उन्हें अध्यात्मिक ज्ञान प्रेषित कर रहे थे और वे उस पथ पर उपर और उपर उठ रहे थे ।

साल दर साल यूँ ही गुजर गए । शैख़ मुहम्मद जाहिद अभी अपने वादे के अनुसार वहाँ नहीं आये थे लेकिन शाह दरवेश मुहम्मद उनकी निरंतर याद में सब्र की इंतिहा की सीढियाँ पार कर रहे थे । उन्हें एक नया ज्ञान प्राप्त हो रहा था और उनके हृदय में विश्वास दृदतर हो रहा था कि उनके गुरुदेव को इसकी खबर है । उनका हृदय अपने गुरुदेव के प्रति आलौकिक प्रेम से सराबोर हो रहा था । अंत में सात वर्ष बीत ज्ञाने पर उन्हें वातावरण में अपने पूज्य गुरुदेव की खुशबू का अहसास होने लगा । शैख़ मुहम्मद जाहिद सातवें वर्ष के अंत में वहाँ पहुँचे । जब शाह दरवेश मुहम्मद ने उन्हें देखा तो उनका हृदय अपार आनंद से भर आया । उनके हृदय में प्रेम का ज्वार फूट आया और वे उनकी अगवानी के लिये दौड़ पड़े उनका तमाम शरीर बालों से दक गया था । उनके साथ-साथ उनके पशु मित्र भी शैख़ मुहम्मद जाहिद के स्वागत के लिये दौड़ पड़े ।

शैख़ मुहम्मद जाहिद ने उन्हें देखकर पूछा कि वे वहाँ क्या कर रहे हैं और पहाड़ से वापस लौटकर क्यों नहीं आये ? शाह दरवेश मुहम्मद ने उत्तर दिया कि वे वहाँ उनकी आज्ञानुसार उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे । शैख़ मुहम्मद जाहिद ने पूछा कि अगर मैं भूल जाता या मेरी मृत्यु हो जाती तो ? शाह दरवेश मुहम्मद ने निवेदन किया, 'मेरे पूज्य गुरुदेव यह कैसे भूल सकते हैं क्योंकि वे परमात्मा के प्रतिनिधि हैं । शैख़ मुहम्मद जाहिद ने फिर कहा अगर तुम्हें कुछ हो जाता तो क्या होता ? इस पर शाह दरवेश मुहम्मद ने निवेदन किया, 'हे मेरे पूज्य गुरुदेव ! यदि मैं यहाँ रूककर आपकी प्रतीक्षा न करता और आपकी आज्ञा का पालन न करता तो आप हजरत पैगम्बर की आज्ञानुसार यहाँ कभी न आते । उन्हें यह ज्ञात हो गया था कि शैख़ मुहम्मद जाहिद वहाँ हजरत पैगम्बर की आज्ञानुसार आए हैं ।

शैख़ मुहम्मद जाहिद मुस्कुराये और बोले, आओ मेरे साथ चलो और तत्क्षण उन्होंने शाह दरवेश मुहम्मद के हृदय को अपने सम्पूर्ण ज्ञान और प्रेम से परिपूर्ण कर नक्शबंदी सिलसिले की सभी बख्शीसों से मालामाल कर दिया । उन्हें पूर्ण आचार्य पदवी प्रदान कर औरों को दीक्षित करने का आदेश दिया और अपना खलीफ़ा (उत्तराधिकारी) नियुक्त किया ।

# शैख़ सनन और सूर्यिकरण

यह कहानी महान सूफ़ी संत शैख़ फराउद्दीन अतार की रचना है जो प्रेम की सर्वोपरिता को स्थापित करती है। बहुत समय पहले मक्का में एक पवित्र आत्मा शैख़ सनन रहा करते थे। पचास वर्षों से वे अपनी खानकाह (आश्रम) में रह शिष्यों को अध्यात्म की तालीम दिया करते थे और लोगों की सेवा करते अपना जीवन बिता रहे थे। रात का ज्यादातर वक्त वे प्रार्थना करते बिताते और अपने प्रियतम परमात्मा के प्रेम में खोये रहते। मक्का आने वाले यात्री उनके पास भी आते और उनका आशीर्वाद पा अपनेआप को धन्य समझते। शैख़ सनन के करीब चार सौ शिष्य थे, सब उनके आज्ञाकारी और वफ़ादार और वे दीन-दुनिया को छोड़ उनकी सेवा में तत्पर रहते।

एक रात शैख़ सनन ने स्वप्न में स्वयं को बैजन्तियम राज्य के एक शहर रूम में एक बुत (मूर्ति) के आगे झुका देखा । इसे भविष्य में किसी अनहोनी की चेतावनी समझ वे व्यथित थे । पहले तो उन्होंने इसे एक स्वप्न मात्र समझ दर-किनार करना चाहा लेकिन उसी स्वप्न को बार-बार देख उन्होंने बैजिन्तयम जाने का निश्चय कर लिया कि देखें परमात्मा की क्या इच्छा है ?

उन्हें यात्रा की तैयारी करते देख उनके शिष्य भी उनके साथ चलने का आग्रह करने लगे। उनके आग्रह को देख शैख़ सनन उन्हें अपने साथ ले यात्रा पर निकल पड़े। रूम पहुंचकर वे इधर-उधर देख ही रहे थे कि उनकी निगाह एक देवस्थान पर पड़ी। देवस्थान के भीतर से एक रूह को छूने वाली मधुर गीत की आवाज आ रही थी। यह स्वर लहरी हृदय को आंदोलित करने वाली एक प्रेम गीत की थी। आवाज की दिशा में देखने पर शैख़ सनन को देवस्थान के दूसरे तल पर एक खुली खिड़की के साथ एक ईसाई युवती अपने सुनहरे बालों को संवारते, यह उदास गीत गाती दिखायी दी। उस युवती की आभा से मंत्रमुग्ध शैख़ सनन उसकी और ताकते रह गए, उनका हृदय उनके हाथों से निकल गया और वे उस ईसाई युवती के आकर्षण में उलझकर रह गए। उनके शरीर में रोमांच के कारण कंपन होने लगा और वे वहीं यह कहते बैठ गए कि, 'हे परमात्मा! न जाने मुझे क्या हो रहा है ? यह कैसी ज्वाला है जो मेरी आत्मा को जला रही है और मुझसे मेरे अस्तित्व को छीन रही है ?'

प्रेम की इस ज्वाला ने शैख़ सनन की रूह और दिमाग पर अपना कब्जा जमा लिया। एक ही क्षण में वे भूल गए कि वे कौन हैं, क्या हैं, कहाँ से आये हैं और क्या कर रहे हैं ? उनके लिए उस युवती का चेहरा फिर से देखने से ज्यादा और कुछ महत्वपूर्ण नहीं रह गया था जो बिना उनकी आहों की परवाह किए वहाँ से चली गयी थी।

उनके शिष्य उनकी यह हालत देख हैरत में थे। उन्होंने सोचा कि उनके शैख़ कुछ देर में स्वस्थ हो जायेंगे, लेकिन शैख़ सनन तो उस खुली खिड़की की तरफ़ निगाहें जमाये बैठे थे। रात होने को थी और सनन यह सोचकर विहवल हो रहे थे कि उन्हें उस युवती को देखने के लिए अगले दिन तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। उनका हृदय प्रेम और विरह की पीड़ा से विदीर्ण हो रहा था।

शिष्य उनकी यह दशा देख भ्रमित हो रहे थे और उन्हें सूझ नहीं रहा था कि वे क्या करें ? उनके शैख़ सनन उस ईसाई युवती के मोहपाश में पूरी तरह जकड़ चुके थे । उनके लिए संसार अब मात्र उस युवती तक सिमट कर रह गया था । उनकी दूसरी रात और भी वेदना भरी थी । उनके शिष्यों ने उनसे कहा कि वे सब कुछ भूलकर वुजू (मुँह-हाथ धोकर शुद्ध होना) कर वापस लौट चलें । शैख़ सनन का उत्तर था कि उनका वुजू उनके हृदय के रक्त से हो चुका है । शिष्यों ने कहा कि अगर वे तौबा कर लें तो परमात्मा उन्हें माफ़ कर देगा, वे कई वर्षों से उसकी इबादत करते रहे हैं । शैख़ सनन का उत्तर था कि अगर उनके लिए पश्चाताप कि कोई बात है तो वह है उनका शैख़ होना । शिष्यों ने उन्हें तरह-तरह से समझाया, लेकिन शैख़ सनन का कहना था कि उन्हें इस बात का दुःख है कि वे प्रेम के इस पाश से पहले क्यों नहीं बंधे ?

शिष्यों ने उनसे पुछा कि क्या उन्हें इस बात की चिंता नहीं है कि लोग क्या कहेंगे ? सनन का उत्तर था कि अब उन्हें इस बात की कोई परवाह नहीं है । शिष्यों ने उन्हें अपना हवाला दिया, मक्का वापस लौट चलने के लिए कहा लेकिन सनन के लिए अब वह देवस्थान ही उनका मक्का था और उसका काबा वह युवती । शिष्यों ने उनकी उम्र का वास्ता देकर जन्नत की दुहाई दी लेकिन सनन के लिए जन्नत उनकी प्रेयसी के खूबसूरत चेहरे को देखने के सुख से ज्यादा न थी । शिष्यों ने उन्हें खुदा का वास्ता दिया और पूछा कि क्या वे उसके सामने शर्मिदा नहीं हैं, जिसकी इबादत उन्होंने वर्षों तक की है, उसे वे कैसे धोखा दे सकते हैं ? शैख़ सनन का उत्तर था कि वे उस जाल से कैसे निकल सकते हैं जो खुदा ने उनके लिए तैयार किया है ? वे आस्था और धर्म को ताक पर रख उस युवती के प्रेम में पूरी तरह डूब चुके थे । उनके लिए पुरानी राह पर लौटने की कोई उम्मीद नहीं बची थी।

किसी बात का कोई असर न देख शिष्यों ने एक दूसरी जगह जाकर कुछ दिन इन्तजार करने का सोचा कि शायद इस बीच उनके शैख़ का इरादा बदल जाए । लेकिन दिन बीतने लगे । शैख़ सनन उस देवस्थान के रास्ते में एक ओर आवारा कुतों के साथ पड़े रहते और हसरत भरी निगाहों से उस युवती को आता जाता देखते और सोचते कि शायद कभी उसकी नजर उन पर पड़ जाए । लेकिन वह कभी नजर उठाकर उधर न देखती ।

इधर शैख़ सनन ने उसे एक काल्पनिक नाम दे डाला, 'सूर्यिकरण' और उस पर कविता लिख उसकी याद में उदास स्वर में गुनगुनाते । वे भूख प्यास सब कुछ भूल चुके थे । यदि कोई कुतों के लिए कुछ खाने-पीने को डालता तो शैख़ सनन उनसे बचा-खुचा खा-पी लेते, वरना भूखे-प्यासे ही रहते ।

अंत में एक दिन उस युवती का ध्यान उनकी ओर गया और उसने पुछा कि तुम्हारा कोई घर-बार नहीं है, यहाँ इन आवारा कुतों के बीच क्यों पड़े हो ?

युवती को अपनी ओर मुखातिब हुए देख शैख़ सनन की ख़ुशी का ठिकाना न रहा । वे बोले उनका घर-बार, नाते-रिश्येदार, सब कुछ वह युवती ही है, जिसके प्रेम में वे दीवाने हो गए हैं । वे वहाँ तब तक रहेंगे, जब तक कि वह उन्हें अपने प्रेम के योग्य न समझ लेगी ।

युवती व्यंग से हंसी और बोली, "तुम्हें शर्म नहीं आती, तुम मेरे दादा की उम्र के हो । तुम्हारी उम्र अब कब्र में लेटने की है । मेरी जैसी युवा और सुन्दर लड़की के प्रेम का पात्र तो कोई जवान और सुन्दर नवयुवक ही हो सकता है ।"

शैख़ सनन ने कहा, "प्रेम उम्र नहीं देखता । जवान हो या वृद्ध, जिसका हृदय प्रेम के बाण से बिंध जाए, वही जानता है । मैं तुम्हारे लिये कुछ भी करने के लिये तैयार हूँ ।"

शैख़ सनन ने अपने प्रेम और वेदना की बात इतनी ओजस्विता से कही थी कि वह उनकी निश्चलता पर विश्वास करने के लिये मजबूर हो गयी । उसे विश्वास हो गया कि शैख़ सनन उसके लिये कुछ भी कर सकते हैं । वह बोली, "अगर तुम जो कुछ कह रहे हो सही है तो तुम्हें अपना धर्म त्याग मेरा धर्म स्वीकार करना होगा । अपना धर्मग्रन्थ जला, अपने धर्म की सभी पाबंदियां छोड़नी होंगी । मदिरा पीनी होगी और यह शैख़ का लबादा भी छोड़ना होगा ।"

शैख़ सनन ने शांति से सुना और बोले, "प्रेम प्रेमी के समक्ष कई चुनौतियाँ रख देता है, प्रेम की परीक्षा अति क्रूर और कठिन होती है, लेकिन उसका परिणाम मधुर और सुखदायी होता है। सच्चे प्रेमी के लिये प्रेम के अलावा और कोई धर्म या विश्वास नहीं होता, उसकी कोई हैसियत नहीं होती क्योंकि प्रेम से ऊँचा किसी और चीज का स्थान नहीं होता।"

बैजन्तियम के ईसाई साधुओं ने जब यह सुना कि एक सूफ़ी शैख़ अपना धर्म, अपना सब कुछ त्याग, ईसाई हो गया है तो उन्होंने जश्न मनाया जिसमें शैख़ सनन ने अपना चोगा उतार ईसाई चोगा धारण कर लिया, पवित्र कुर'आन को आग में जला डाला, मदिरा पी और युवती के सामने झुक कर कहा मैं प्रेम में अस्तित्वहीन हो गया हूँ । जो मैं अपनी प्रेम दृष्टी से देख सकता हूँ, किसी ने नहीं देखा है । फिर उन्होंने युवती से पूछा कि वे

उसके लिये और क्या कर सकते हैं ? युवती ने उन्हें बहुमूल्य उपहार लाने को कहा तो शैख़ सनन ने कहा कि देने के लिये उनके पास हृदय के अलावा कुछ नहीं है और वह उसे पहले ही उस युवती को दे चुके हैं । वे उससे विवाह करने के लिये कुछ भी करने को तैयार हैं क्योंकि वे अब उससे और अलग नहीं रह सकते ।

"मेरी तुमसे विवाह की शर्त है कि तुम मेरे सूअरों की एक वर्ष तक देखभाल करो और सालभर बाद यदि तुमने यह काम ठीक से किया तो मैं तुमसे विवाह कर लूंगी," युवती ने कहा ।

शैख़ सनन ने प्रसन्नता से इसे स्वीकार कर लिया और वे सूअरों के साथ उनके बाड़े में रहने लगे जो मुस्लिम समुदाय में घृणित समझा जाता है । उनके शिष्य एक बार फिर उनके पास आये और पूछने लगे कि अब हम क्या करें ? क्या हम भी ईसाई बन जायें ? शैख़ सनन ने कहा कि तुम लोग वापस चले जाओ, और कोई यदि कुछ पूछे तो सब बातें सच-सच बता देना ।

निराश, हताश और शर्मिंदा शिष्य वापस मक्का लौट गए और लोगों से बचकर रहने लगे कि कहीं कोई कुछ पूछ न ले। लेकिन उनका एक साथी गुरुभाई जो उस समय कहीं दूर यात्रा पर गया हुआ था, जब लौटकर आया और उसने शैख़ सनन के विषय में पूछा तो उन्होंने उसे सारी बात बता दी।

सब कुछ सुनकर वह अपने दिल की गहराई से क्रन्दन करने लगा, और अपने साथियों से बोला कि तुम किस तरह के मुरीद हो ? तुम्हें अपने ऊपर शर्म आनी चाहिए । तुम्हारे शैख़ ने सूफ़ी चोगा छोड़कर ईसाई धर्म स्वीकार किया और वे सूअरों के साथ रहने लगे तो तुम्हें भी वही करना चाहिए था । यही प्रेम की मांग है । तुम किस हिम्मत से कहते हो कि हमारे शैख़ ने कुछ गलत किया है ? तुम्हें किस ने अधिकार दिया कि तुमने शैख़ को उनके प्रेम को भूल जाने के लिये कहा ?

यह शिष्य दिन-रात अपने शैख़ को याद कर क्रन्दन करता । चालीसवें दिन उसे एक अनुभूति हुई । उसे आभास हुआ कि एक घनी धूल का बादल उस देवस्थान से उठ शैख़ सनन और परमात्मा के बीच आकर मंडराने लगा । फिर अचानक धूल उड़कर अलग हो गयी और शैख़ सनन प्रकाश से जगमगाने लगे । फिर एक दिव्य वाणी सुनाई दी, "जो प्रेम की ज्वाला में तपते हैं वे ही अपने शाश्वत प्रेमी के दर्शन की पात्रता प्राप्त करते हैं । प्रेम के मार्ग में नाम और हैसियत की कोई कीमत नहीं होती । सत्य के साक्षात्कार के लिये, अपनी अस्तित्व रुपी धूल (अहं) को पहले दिल के शीशे से साफ़ करना पड़ता है । केवल उसके बाद ही उस शीशे में अपने सच्चे प्रियतम की छवि दिखलाई पड़ती है ।" तुरंत

यह शिष्य दौड़कर अपने गुरुभाइयों के पास गया और उन्हें अपना दिव्यस्व्पन कह सुनाया । वे सब त्रंत रूम जाने के लिए निकल पड़े ।

शहर के बाहर ही उन्हें शैख़ सनन परमात्मा के सजदे में अपना सर जमीन पर रखे दिखलायी दिए । मन्दिर और मस्जिद से ऊपर उठ, इस्लाम और ईसाईयत से मुक्त, गरिमा और पवित्रता का मोह त्याग, अहं से पूर्ण मुक्त हो वे अपने सच्चे प्रियतम के प्रेम में पूर्णतया डूब उससे एकाकार हो चुके थे । शैख़ सनन शांत थे लेकिन उनकी आँखें एक रहस्यमयी मुस्कान के साथ चमक रहीं थी, वो चमक जिसका रहस्य केवल प्रेमी और प्रियतम ही जानते हैं । सभी शिष्य अपने शैख़ के इर्द-गिर्द इकठ्ठे हो गए और सब मिलकर प्न: मक्का की ओर चल दिए ।

उधर इसी दौरान उस युवती को जिसका नाम शैख़ सनन ने सूर्यिकरण रख दिया था, उसे एक तेजस्वी स्वप्न दिखायी दिया । स्वप्न में उसे एक आलौकिक तेज के दर्शन हुए । वह जमीन पर गिर पड़ी और क्रन्दन करने लगी, "ओ प्रियतम परमात्मा ! वह कितना अज्ञानी है जिसने आपके दर्शन नहीं किए । मैं कितनी भूली हुई थी कि मैं आपको नहीं पहचान सकी । मुझे अपनी राह दिखाओ, कि अब जब मैंने तुम्हारी सुन्दर छिव देख ली है, मैं तुम्हारे बिना जीवित नहीं रह सकती । अब तुम्हें मिले बिना मुझे एक पल भी चैन नहीं ।" वह आत्मविस्मृत हो घंटों विलाप करती रही । अंत में उसे अपने हृदय में एक दिव्य वाणी सुनायी दी : "शैख़ सनन के पास जाओ । वे ही तुम्हें राह बताएंगे।"

नंगे पाँव वह बाहर दौड़ पड़ी, और जब उसे पता चला कि शैख़ सनन मक्का के लिये निकल पड़े हैं, तो वह शहर के बाहर रेगिस्तान में शैख़ सनन के काफ़िले को ढूंढने लगी। नंगे पाँव, बिना भोजन और पानी के वह दिन-रात अपने आसुंओं से रेगिस्तान को सींचती अपने मालिक शैख़ सनन के काफ़िले की ओर दौड़ती रही।

उसका क्रन्दन शैख़ सनन के हृदय तक पहुँच चुका था । वे जान चुके थे कि अपने प्रियतम की खोज में वह सब कुछ छोड़ चुकी थी । शैख़ सनन ने अपने शिष्यों को उसे खोजने के लिये भेजा, जिन्हें वह एक जगह भूख-प्यास से तड़पती, अपने शैख़ के लिये व्याकुल, उसकी राह तकती मिली ।

शैख़ सनन के सामने पहुँचते ही वह उनके कदमों पर गिर पड़ी और अनुनय करने लगी : "महान शैख़, मैं प्रेम की ज्वाला में जल रही हूँ । मुझे मेरे प्रियतम के दर्शन की अभिलाषा है । फिर भी मेरे हृदय में अन्धकार है । उसे देखने में मेरी सहायता कीजिये । मैं अब एक भी पल अपने प्रियतम के बिना नहीं रह सकती ।"

शैख़ सनन ने कोमलता से उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसकी आँखों में देखा मानों वह उसकी आँखों में झाँक रहे हों और उसे अपनी आत्मा द्वारा परमात्मा के समक्ष ले जा रहे हों । दृष्टी से दृष्टी मिलते ही वह बोली : "हे प्रियतम ! मैं अब जुदाई नहीं सह सकती । अलविदा ओ महान शैख़ ।" और यह कहते वह अपने प्रियतम से जा मिली । शैख़ सनन के समीप उसका पार्थिव शरीर भर रह गया ।

शैख़ सनन कुछ देर वैसे ही खड़े रह गए और फिर दूर रेगिस्तान में देखते बोले: "सौभाग्यशाली हैं वे जो अपनी यात्रा पूरी कर अपने प्रियतम से जा मिलते हैं । वे मुक्त हैं, परमात्मा से एकाकार हो वे अमर हो जाते हैं ।" और फिर एक ठण्डी सांस छोड़कर बोले, "और वे जिनकी नियति दूसरों को राह दिखा उनकी मंजिल तक पहुँचाना है, उनके लिए अभी उदासी है, क्योंकि वे उस मिलन का असीम सुख छोड़ परमात्मा की इच्छा से बंधे हैं।"

### संत की परीक्षा

अबू सईद अब्दुल्लाह अपने मित्र इब्न-अस-सका के साथ धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने हेतु विद्वानों की खोज में लगे रहते थे। हजरत ख्वाजा युसूफ हमदानी के बारे में सुनकर कि वे एक विलक्षण संत हैं जो अपनी इच्छानुसार प्रकट और गुप्त हो जाते हैं, हजरत अब्दुल कादिर जिलानी, जो उन दिनों युवा ही थे, को भी साथ लेकर उनके दर्शन हेत् गए।

इब्न-अस-सका ने कहा कि जब वह उनसे मिलेगा तो उनसे एक सवाल पूछेगा जिसका उत्तर उन्हें मालूम नहीं होगा । अबू सईद अब्दुल्लाह ने कहा कि वह भी एक सवाल पूछेगा कि देखें वे क्या उत्तर देते हैं ? लेकिन हजरत अब्दुल कादिर जिलानी ने कहा कि परमात्मा उन्हें ऐसे महान संत से कुछ भी प्रश्न करने से बचाए व उन्हें उनका आशीर्वाद और दिव्य ज्ञान बख्शे ।

जब वे तीनों ख्वाजा हमदानी के समक्ष पहुँचे तो बहुत समय तक वे उन्हें दृष्टिगोचर ही नहीं हुए । जब वे प्रकट हुए तो उन्होंने आग्नेय नेत्रों से इब्न-अस-सका की तरफ़ देखा और बिना उसका नाम पूछे कहा 'ओ इब्न-अस-सका, तुम्हारी हिम्मत कैसे हुइ कि मेरी परीक्षा लेने के लिये मुझसे सवाल पूछो ? तुम्हारा प्रश्न यह है और उसका उत्तर यह है । मैं तुम्हारे हृदय में कुफ़ की आग जलती देख रहा हूँ ।' इसके बाद उन्होंने अबू सईद अब्दुल्लाह की तरफ़ देखकर कहा कि तुम अपने प्रश्न के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे हो । ओ अब्दुल्लाह, तुम्हारे प्रश्न यह है और उसका उत्तर यह है । लोग तुम्हारे बारे में जानकर उदास होंगे । इसके बाद ख्वाजा हमदानी ने हजरत अब्दुल कादिर जिलानी की तरफ़ देखा और कहा मेरे पास आओ, मैं तुम्हे आशीर्वाद देता हूँ । ओ अब्दुल कादिर, तुमने मेरे प्रति अदब दिखाकर अल्लाह व उसके पैगम्बर का सम्मान किया है । मैं तुम्हारे भविष्य में देख रहा हूँ कि तुम बगदाद के सर्वोच्च आसन पर आरूढ़ हो रहे हो और लोगों का पथ प्रदर्शन करते हुए कह रहे हो कि इस वक्त के सभी महापुरुष मेरे सामने नत-मस्तक हो रहे हैं ।

ख्वाजा हमदानी की तीनों बातें सच निकलीं । इब्न-अस-सका इस्लाम का विशेष जानकार था जिसने अपने वक्त के अन्य विद्वानों को वाद-विवाद में पीछे छोड़ दिया था । एक बार उसके आचार्य ने उसे बैजन्तियम के राज-दरबार में भेजा । वहाँ राजा ने ईसाई धर्म-विज्ञों को बुलाकर उनका शास्त्रार्थ इब्न-अस-सका से करवाया और उसने उन सबको निरुत्तर कर दिया । वे सब उसके सामने निस्तेज दिखने लगे । राजा ने उससे प्रभावित होकर उसे अपनी पारिवारिक सभाओं में भी बुलाना प्रारम्भ कर दिया । इस दौरान इब्न-अस-सका को राजकुमारी से प्रेम हो गया और उसने विवाह का प्रस्ताव रख दिया । राजकुमारी ने अपनी स्वीकारोक्ति केवल इस शर्त पर देना मंजूर किया कि इब्न-अस-सका ईसाई धर्म को स्वीकार कर ले । इब्न-अस-सका मान गया और ईसाई बन गया । विवाह के कुछ समय बाद वह गंभीर रूप से रुग्ण हो गया । उसी रुग्णावस्था में उसे महल से बाहर निकाल दिया गया । बाद में लोगों ने उसे दर-दर की ठोकरें खाते और भोजन के लिये भीख मांगते हुए देखा ।

अबू सईद अब्दुल्लाह डमास्कस चला गया जहाँ राजा ने उसे धार्मिक विभाग का मुखिया नियुक्त कर दिया । इसके परिणामस्वरूप उसे धन-दौलत और शोहरत ने घेर लिया और वह परमात्मा की राह से दूर हो गया जैसा कि उसके बारे में ख्वाजा हमदानी ने फ़रमाया था ।

हजरत अब्दुल कादिर जिलानी (रहम.) के बारे में भी उनकी बात सच निकली और एक वक्त ऐसा आया जब हजरत अब्दुल कादिर जिलानी ने अक्षरक्ष: दोहराया कि इस वक्त के सभी औलिया मेरे सामने नत-मस्तक हैं।

#### संतोष

एक निर्धन व्यक्ति अपनी अध्यात्मिक उन्नति के लिए नित्य-प्रति एक महात्मा के पास हाजिर ह्आ करता था । एक दिन उसने अपनी निर्धनता का जिक्र महात्माजी से किया । महात्माजी को उस पर दया आ गई । उन्होंने उससे एक ठीकरी उठाकर लाने को कहा और कोयले से उस ठीकरी पर 10 का अंक लिखकर उस व्यक्ति को दे दिया । ईश्वर कृपा हुई कि उसे उस रोज से रोजाना दस रूपये की कमाई होने लगी । कुछ रोज तो वह रोजाना दस रूपये पाकर प्रसन्न रहा फिर एक दिन उसने महात्माजी से कहा कि परिवार बड़ा है, दस रूपये से काम नहीं चलता । महात्माजी ने कहा, 'अच्छा, ऐसा है तो ठीकरी पर मेरी ओर से दस के आगे एक बिंदी और लगा लेना ।' उस रोज से उस व्यक्ति की कमाई में ईजाफा हो गया और उसे रोज सौ रूपये मिलने लगे l लेकिन उस दिन से उसका संतोष रूपी धन जाता रहा और वो किसी न किसी बहाने महात्माजी से विनती कर ठीकरी पर बिंदी के बाद बिंदी बढ़वाता गया । अब उसकी कमाई हजारों-लाखों में होने लगी, वह लखपति बन गया और उसका महात्माजी के पास रोजाना जाना भी बंद हो गया, लेकिन उसकी तृष्णा बनी रही । एक दिन उसने अपना दुखड़ा महात्माजी को सुनाया । सुनकर महात्माजी बोले जाओ घर से वह ठीकरी उठा लाओ । वह आदमी ख़ुशी-ख़ुशी दौड़ा-दौड़ा घर से ठीकरी उठाकर लाया और महात्माजी को दे दी । महात्माजी ने ठीकरी हाथ में लेकर फ़रमाया, यह तृष्णा तो खत्म होने से रही, अच्छे-अच्छे साधक भी इसमें उलझकर परमार्थ की राह से भटक जाते हैं, तुम्हारी तो हस्ती ही क्या है । चलो आज सारे झंझटों का समाधान एक बार में ही कर देते हैं । इस ठीकरी की वजह से तुम्हारा मेरे पास आना भी बंद हो गया । न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी, यह कहते महात्माजी ने उस ठीकरी को जमीन पर दे मारा और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए और बोले अब तो संतोष आ ही जाएगा।

# सबसे निकृष्ट वस्तु

एक बार शिक्षा पूरी हो जाने पर एक शिष्य ने अपने गुरुदेव से उनसे दक्षिणा में देने के लिए पूछा कि वह उन्हें क्या चीज भेंट करे ? उन संत ने शिष्य की तरफ़ एक गहरी नज़र से देखा और फिर बोले कि वह उन्हें संसार की ख़राब से खराब वस्त् लाकर भेंट करे । शिष्य ने सोचा यह तो बड़ा आसान काम है और ख़ुशी-ख़ुशी चल दिया । रास्ते में उसे एक अनगढ़ पत्थर दिखा तो उसने सोचा कि यह तो बिलकुल बेकार की चीज लग रही है, इसे ही गुरुदेव को भेंट कर देना चाहिए । अभी उसके मन में यह विचार आया ही था कि उसे लगा जैसे कोई उससे कह रहा हो कि यह पत्थर बेकार की चीज कैसे हो सकती है, इससे तो मूर्ति गढ़ी जाती है, लोग पूजते हैं, मकान, द्कान बनते हैं, बाँध बांधे जाते हैं और इनके अलावा भी कई उपयोग हैं उस पत्थर के । उसके हाथ पत्थर उठाते-उठाते रुक गए और वो आगे बढ़ गया । थोड़ा आगे जाने पर एक जगह उसे गोबर पड़ा दिखाई दिया तो उसने गोबर को भेंट स्वरुप देने की सोची। तभी जैसे फिर किसी ने कहा भाई मेरे तो कई उपयोग हैं, कंडे बनते हैं, लोग उन पर खाना पकाते है, अपने घरों की लिपाई-पुताई में मेरा प्रयोग करते हैं और और कुछ नहीं तो खाद के रूप में ही मेरा उपयोग करते हैं । उसके हाथ फिर रुक गए । इस तरह शिष्य ने जिस वस्तु को ले जाने की सोची, उसका कुछ न कुछ उपयोग विचार में आते ही उसे अपना हाथ खींच लेना पड़ा । लाचार और परेशान होकर वह आगे बढा तो उसकी दृष्टी एक जगह विष्टा पर पड़ी । उसने सोचा कि इससे निकृष्ट तो कोई ओर चीज हो ही नहीं सकती । अभी वो अपना हाथ आगे बढाने ही वाला था कि उसके दिमाग में बिजली की तरह कुछ कौंधा जैसे कोई कह रहा हो, 'हे मूर्ख मनुष्य ! तेरी ही संगती का यह परिणाम है । अभी कुछ देर पहले तक मैं पका ह्आ स्वादिष्ट भोजन था लेकिन तेरी कुछ देर की संगत ने मेरी यह हालत कर दी है । जानवर के तो मरे ह्ए के चमड़े में भी रखने पर साल भर में घी ख़राब नहीं होता पर तेरे जीवित चमड़े में कुछ देर रहने से मेरी यह हालत हो गयी जिससे तू नफ़रत करता है । अपने गिरेबान में झांककर देख, संसार भर की गंदगी तो तूने अपने अन्दर भर रखी है । संसार भर के दोषों का खजाना तो तेरे मन में जमा है । इस ईश्वरीय सृष्टि में कहीं भी कोई ऐब नहीं है पर ऐबों का अम्बार तो तेरे मन में लगा है और वह अब भी दोष बटोरने में ही लगा है ?'

शिष्य के अंतर्मन में ज्ञानोदय हुआ । वह तुरंत अपने गुरुदेव के पास भागा-भागा गया और उनके चरणों में गिर पड़ा । कहने लगा कि मुझे क्षमा कर दीजिये कि मैं सबसे निकृष्ट वस्तु को खोजने बाहर चल पड़ा । सबसे बुरी, सबसे निकृष्ट चीजों का संग्रह करने वाला यह मन तो मेरे पास ही था जो आपकी दक्षिणा के लिए सबसे उपयुक्त है । मैं इसीको आपको समर्पित करता हूँ, स्वीकार कीजिए ।

### सही समय

किसी नगर में एक जौहरी रहता था। एक बार वह गम्भीर रूप से बीमार पड़ गया और बीमारी के कारण उसे अपने बचने की उम्मीद न रही । उसने अपनी पत्नी और बेटे को, जो अभी किशोरे अवस्था में ही था, बुलाया और उन्हें एक मोती देकर बह्त सी बातें समझाकर कहा कि जरुरत पड़ने पर इस मोती को मेरे अमुक जौहरी मित्र के माध्यम से ही बेचना, इससे तुम्हें इतना धन मिलेगा कि पीढ़ियों तक बैठकर खाते रहोगे । जैसा कि जौहरी को लग रहा था कुछ ही समय में उसकी मृत्यु हो गयी और उसका परिवार जैसे-तैसे अपना गुजर-बसर करने लगा । जब हालात बद से बदतर होने लगे तो जौहरी की पत्नी ने अपने बेटे को बुलाकर वह मोती उसे देकर अपने पति के उसी मित्र के पास भेजा । उनके पास जाकर लड़के ने वह मोती दिखाया और उसके पिता ने जो ताकीद की थी बताया और कहा कि उन्होंने इस मोती को बहुत कीमती बताया था और इसे आपके माध्यम से ही बेचने के लिए कहा था। अब घर की हालत ऐसी हो गयी है कि इसे बेचना आवश्यक हो गया है । उस जौहरी ने मोती को एक ही नजर में आंक लिया और वह यह भी समझ गया कि लड़का वास्तव में अभी बहुत भोला है। जौहरी ने लड़के से कहा कि 'बेटा मोती वास्तव में बहुत कीमती है, इसके लायक कोई ग्राहक मिलेगा तब इसे बिकवा देंगे, अभी तुम इसे अपने पास संभालकर रख लो । घर के लिए जितना खर्चा चाहिए यहाँ से ले जाया करो और यहाँ आया करो ताकि कुछ काम सीख सको ।' लड़के ने उनके कहे अनुसार उनके यहाँ आकर काम सीखना शुरू कर दिया और जवान और समझदार होने तक वह स्वयं भी एक अच्छा पारखी जौहरी बन गया।

समय आने पर लड़के की माँ को अपने पित के उन जौहरी मित्र के ऋण को चुकाने की फ़िक्र होने लगी और बेटे की शादी की चिंता भी होने लगी । उसने अपने बेटे से कहा कि उन जौहरी से निवेदन करों कि अब और ग्राहक आने का इंतज़ार न करें और जैसे भी हो उस मोती को बिकवा दें । लड़के ने यह बात उन्हें बताई तो जौहरी ने कहा, 'हाँ ठीक है, एक अच्छा ग्राहक भी आया हुआ है, जाकर उस मोती को ले आओ ।' लड़के ने घर आकर माँ से मोती माँगा । जैसे ही माँ ने मोती बेटे के हाथ पर रखा उसने मोती को एक नजर देखा और नीचे गिराकर पाँव से कुचल डाला । माँ के पूछने पर उसने कहा, 'माँ भगवान् भला करें पिताजी के मित्र इन जौहरी का । इस मोती की कीमत से लाखों गुना वे हमें दे चुके हैं । यह मोती तो झूठा था और इसकी कीमत दो कौड़ी भी नहीं थी । पिताजी ने अपनी परिस्थिति देखकर ही मोती की यह युक्ति निकाली । इसे सच्चा और कीमती उन्होंने इसलिए बतलाया था कि हम निराश न हों और इसके भरोसे हमारा उत्साह बना रहे । उन्हें विश्वास था कि उनका मित्र सच्चा है और वह उनके मार्फत ही मोती बेचने के उनके अभिप्राय को समझ जाएंगे और हमारी परिस्थिति समझ हमारी सहायता अवश्य

करेंगे और मुझे काम सिखाने में मदद करेंगे । परमात्मा की कृपा है कि उन्होंने पिताजी का अभिप्राय समझ मुझे अपने पास बैठाकर अपने जैसा ही पारखी जौहरी बना दिया ।'

## सात भाई

किसी शहर में एक धनवान व्यक्ति था। उसके सात बेटे थे। उसने उनकी शिक्षा-दीक्षा की अच्छी व्यवस्था की लेकिन अभी वे किशोर अवस्था में ही थे और उनकी शिक्षा पूरी भी नहीं हुई थी कि धनवान व्यक्ति को आभास हुआ कि कुछ ही वक्त में शहर पर एक बड़ी विपदा आने वाली है। उसके बेटे इस लायक नहीं थे कि वह उनसे इस बात का जिक्र कर उन्हें सावधान रहने के लिए कह पाता। यदि वो उनसे यह कहता तो उसके बेटे उसके साथ वहीं उसी शहर में रहने की जिद करते।

इसिलए उसने एक दूसरा उपाय सोचा । उसने अपने सातों बेटों को अलग-अलग बुलाकर उन्हें कहा कि उन्हें तुरंत ही एक महत्वपूर्ण मिशन के लिए दूसरे शहर के लिए निकलना होगा । उसने पहले बेटे को उत्तर, दूसरे को दक्षिण, तीसरे को पूरब और चौथे को पश्चिम दिशा में भेज दिया और बाकी तीन बेटों को अनजान जगहों पर । जैसे ही उसके बेटे शहर छोड़कर निकले वह भी एक जरुरी काम को जिसे वह अब तक अपने बेटों की शिक्षा-दीक्षा में व्यस्तता के कारण नहीं कर पाया था, करने के लिए दूसरे शहर की तरफ़ निकल गया।

जब पहले चारों बेटों का मिशन पूरा हो गया तो वे अपने शहर वापस लौट आये । उनके पिता ने उनके बाहर व्यस्त रहने के समय को इस प्रकार तय किया था कि वे तब तक शहर से बाहर रहते जब तक कि वह खतरा टल न जाय । अपने पिता के निर्देशानुसार वे वापस वहीं आगए जहाँ वे रहते थे लेकिन अब इतना वक्त गुजर जाने के बाद उनकी शक्लो-सूरत बदल गयी थी, दाढ़ी मूछें उग आई थीं, शरीर भर गए थे, और वे एक-दूसरे को पहचान नहीं पा रहे थे । प्रत्येक अपने पिता का पुत्र होने का दावा कर रहा था लेकिन दूसरे के दावे को स्वीकार नहीं कर पा रहा था । वे एक-दूसरे को उसके बाहरी रंग-रूप, बोल-चाल के ढंग आदि से जांच-परख रहे थे, जो अब सब बदल चुका था । उनके पिता ने इस समस्या से निबटने के लिए और उनकी आगे की शिक्षा के लिए उनके वास्ते एक पत्र लिख छोड़ा था लेकिन कोई भी भाई किसी को भी पत्र खोलने नहीं दे रहा था ।

उनका पिता इतना बुद्धिमान था कि उसने इस स्थिति को भी पहले से ही भांप लिया था। उसे मालूम था कि जब तक वे यह नहीं समझेंगे कि वे बदल गए हैं, तब तक वे आगे नहीं बढ़ पाएंगे। अब हालात यह हैं कि दो भाइयों ने एक-दूसरे को पहचान तो लिया है लेकिन अभी उन्हें अपनी पहचान पर पक्का भरोसा नहीं है। उन्होंने पत्र खोल लिया है और वे इस बात से सामंजस्य बैठा रहे हैं कि जिस बात को उन्होंने आधारभूत मान लिया था वे वास्तव में-जिस रूप में वे उनका उपयोग करते हैं-बेकार की बाहरी पहचान है; जिन बातों को उन्होंने अब तक बहुत गहरी और बहुमूल्य समझकर गाँठ से बांध रखा था, उनका अब कोई उपयोग न बचा है, न ही कोई कीमत। बाकी के दूसरे दो भाई उन दोनों

भाइयों को देखकर अभी इस बात से संतुष्ट नहीं हैं कि वे अपने अनुभवों से शिक्षित हो रहे हैं और उनका अनुकरण नहीं करना चाहते।

बाकी के तीन भाई जो अनजान जगहों पर भेजे गए थे वे तो अभी तक वापस ही नहीं आए हैं।

और जहाँ तक इन चार भाइयों का प्रश्न है, अभी इन्हें इस बात को वास्तव में समझने में कुछ वक्त लगेगा कि उनके निष्कासन के दौरान उनके आशावान रहने का जो एकमात्र सहारा था-बाहरी, ऊपरी पहचान, जिसे वे महत्वपूर्ण समझ रहे हैं, वह ही वास्तव में उनके विकास में सबसे बड़ा अवरोध है।

वे सब अभी सच्चे ज्ञान से दूर हैं।

### साथ रहने की योग्यता

हजरत बयाजिद बिस्तामी एक बार कहीं जा रहे थे, तभी उनके सामने एक कुता आ गया । इस विचार से कि उनके कपड़े खराब न हो, हजरत बयाजिद ने अपना दामन समेटा और कुछ पीछे हट गए । यह देख कर उस कुत्ते ने मनुष्यों की भाषा में कहा "आपने दामन क्यों समेटा ? अगर दामन छू भी जाता तो आप उसे धो सकते थे, लेकिन आपके मन में मेरे लिये जो नफरत की भावना है, वह सात समुंदर के पानी से भी साफ़ नहीं की जा सकती ।" यह सुनकर हजरत बयाजिद को बड़ी हैरानी हुई । उन्होंने कहा तू सच कहता है, तुझमे बाहरी नापाकी है तो मुझमे अन्दरूनी । फिर उन्होंने कुत्ते से प्रार्थना की कि वह कुछ दिन उनके साथ रहे तािक उनमें पाकीजगी (पवित्रता) आ जाए । इस पर उस कुत्ते ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ कैसे रह सकता हूँ, जबिक लोग मेरी उपमा एक तुच्छ प्राणी के रूप में देते हैं और तुम एक पीर हो ।" फिर उसने एक चुटकी सी लेकर कहा, 'मैं अगले दिन के लिये कुछ बचाकर नहीं रखता जबिक आप अनाज लाकर जमा करते हैं ।' हजरत बयाजिद (रहम.) को एक नयी अन्तर्हिष्ट मिली और वे बोले, "मैं उस परमात्मा के साथ की कल्पना किस प्रकार कर सकता हूँ, जबिक अभी मैं एक कुत्ते के साथ रहने की भी योग्यता नहीं प्राप्त कर सकता हूँ।"

## सेवा और इबादत

अध्यात्मिकता में कर्तव्य-पालन और सेवा का दर्ज़ा इबादत से कहीं ज्यादा ऊपर है । यह घटना हजरत अबुल हसन खिरकानी के जीवन से सम्बंधित है । एक बार उनकी पूज्य माताजी बीमार पड़ गयीं । हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब के एक छोटे भाई भी थे । वे भी परमात्मा के भक्त थे। दोनों भाइयों का अधिकतर समय इबादत में ही गुजरता था लेकिन माँ की सेवा और इबादत दोनों में ही व्यवधान न आये इसके लिए दोनों भाइयों ने काम इस तरह बाँट लिया कि एक भाई माँ की सेवा में रहता तो दूसरा इबादत में । दोनों भाई बारी-बारी से रात माँ कि सेवा और इबादत में बिताते । एक रात आपके भाई की बारी माँ की खिदमत करने की थी और हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब की इबादत करने की । उस रात उनके छोटे भाई का मन हुआ कि वह वो रात परमात्मा की इबादत में गुजारे । उन्होंने हजरत अबुल हसन खिरकानी साहब से निवेदन किया कि आज रात आप माँ की खिदमत करें, मैं आज की रात इबादत में बिताना चाहता हूँ । हजरत अबुल हसन खिरकानी ख़ुशी-ख़ुशी अपने छोटे भाई की बात मान गए और अपनी माँ की खिदमत में लग गए । उनके भाई इबादतखाने में चले गए और परमात्मा की इबादत करने लगे । इबादत शुरु करते ही उन्हें एक दिव्य वाणी सुनाई दी "हमने तेरे भाई को बख्शा (मोक्ष दी) और उसके तुफैल में (हेतु) तुझे भी बख्शा ।" यह दिव्य वाणी सुनकर छोटे भाई को बड़ा आश्चर्य ह्आ । वे बोले "या अल्लाह ! मैं तेरी इबादत में हूँ, चाहिए तो यह था कि मेरा भाई मेरी इबादत के तुफैल में बख्शा जाता ।" आवाज आई "तू हमारी इबादत करता है, जिसकी हमे जरूरत नहीं और तेरा भाई माँ की खिदमत में है, जिसकी उसे जरूरत है।"

### सोने की सज़ा

एक थी राजकुमारी, बड़ी सुन्दर, कोमल लेकिन तुनक मिजाज और अपने पिता राजा की बड़ी दुलारी । राजा ने उसे सभी सुख सुविधाएँ मुहैय्या करा रखी थीं । अनेक दास-दासियाँ हर वक्त उसकी सेवा में हाजिर रहते । इन्हीं में एक उसकी मुँहलगी दासी मुनिया भी थी जो राजकुमारी के निजी कमरे की साफ़-सफाई और देखभाल करती । एक बार राजकुमारी का बिस्तर ठीक करते-करते उसका मन राजकुमारी के बिस्तर पर एक बार लेटकर देखने का ह्आ । राजकुमारी का बिस्तर बड़ा ही कोमल और गुदगुदा था और उसपर बेहतरीन रेशमी चादर बिछी रहती थी । मुनिया उस पर लेटी और संयोग की बात कि ऐसे आरामदायक बिस्तर पर लेटते ही उसे गहरी नींद आगई । उसकी आँख राजक्मारी की तेज आवाज सुनकर खुली । राजकुमारी बड़ी आग-बबूला हो रही थी कि उस दासी की यह मजाल कि वह राजकुमारी के बिस्तर पर सो जाए ? राजकुमारी के ह्कम से मुनिया को दंडस्वरूप कोड़े लगाए जाने लगे । पहले तो वह दर्द से बिलबिलाती रोती-चीखती रही लेकिन फिर थोड़ी देर बाद वह जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने लगी । राजकुमारी उसे हँसता देखकर अचंभित हो रही थी। उसने मुनिया से पूछा कि उसे कोड़े मारे जा रहे हैं लेकिन वह हँस रही है, इसका क्या कारण है ? कुछ देर तो वह चुप रही लेकिन राजकुमारी के ज्यादा पूछने पर वह बोली, 'राजकुमारी, मुझे यही सोचकर हँसी आ गयी कि इस बिस्तर पर एक घड़ी सोने की मुझे यह सज़ा मिली कि मुझे कोड़े मारे जा रहे हैं, सोचिये आप जो रोजाना इस बिस्तर पर सोती हैं, आपका क्या हाल होगा ?'

# हजरत राबिया और सुई

हजरत राबिया बसरा शहर की रहने वाली थीं और वे महिला सूफी संतों में सर्वोपिर थीं । उनका जन्म एक बहुत ही गरीब परिवार में हुआ । बचपन में ही माता-पिता का साया उनके सर से उठ गया था और वे अनाथ हो गयी । अकाल के कारण उनका रहा-सहा परिवार भी छिन्न-भिन्न हो गया और उन्हें छह दिईम में एक गुलाम के रूप में बेच दिया गया । वे अपने मालिक के यहाँ घर का कार्य करने में लगनपूर्वक सारे दिन जुटी रहतीं और रात में अपनी कोठरी में प्रार्थना में लीन हो जातीं । एक रात उनके मालिक ने घर की खिड़की से उन्हें प्रार्थना में मग्नावस्था में देखा । उनके सर के ऊपर एक दिव्य प्रकाश छाया हुआ था । यह देखकर वह बहुत प्रभावित भी हुआ और कुछ डर भी गया । अगले दिन सुबह ही उसने उन्हें गुलामी से मुक्त कर स्वतंत्र कर दिया ।

सभी आडम्बरों और अंधविश्वासों से दूर वे सादगीपूर्ण जीवन बिताते लोगों को ईश्वर की ओर प्रेरित करने में लगी रहतीं । एक बार लोगों ने उन्हें अपने घर से बाहर कुछ ढूंढते हुए देखा । उन्हें इस तरह कुछ ढूंढते देख उनके चारों ओर लोगों की भीड़ इकठ्ठी हो गयी और पूछने लगी की वे क्या कर रही हैं ? हजरत राबिया ने कहा कि मैं सुई ढूंढ रही हूँ । लोगों ने पूछा कि सुई कहाँ गिरी थी तो वे बोली अंदर कुटिया में । लोगों ने पूछा कि सुई अंदर गिरी थी तो आप उसे यहाँ क्यों ढूंढ रही हो ? हजरत राबिया बोलीं, "क्योंकि भीतर तो अँधेरा है और यहाँ रोशनी है, इसीलिए मैं सुई यहाँ ढूंढ रही हूँ, वैसे ही जैसे तुम परमात्मा को अपने मन के भीतर छोड़ बाहर मंदिर-मस्जिदों में ढूंढते हो ।"